सत्यमेव जयते

जुलाई–सितम्बर, 2020

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

की ओर से

दीपावली

की

हार्दिक शुभकामनाएं

सत्यमेव जयते

वर्ष 6 • अंक–21 जुलाई–सितम्बर, 2020

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

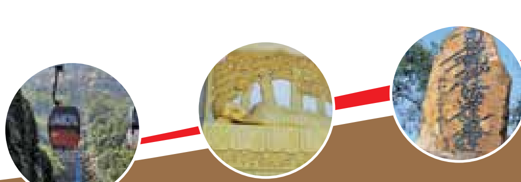

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

संरक्षक

श्री योगेन्द्र त्रिपाठी

सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता

श्री ज्ञान भूषण

आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक

श्रीमती संतोष सिल्पोकर

संयुक्त निदेशक (रा.भा.), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रबंध–संपादक

श्री मोहन सिंह

कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय

अन्य सहयोगी

श्री राज कुमार

निजी सचिव

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक,

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,

7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,

36, जनपथ, नई दिल्ली – 110001. दूरभाष : 011–23724155

ई–मेल– editor.atulybharat@gmail.com

डिजाइनिंग एवं प्रिंटिंग

करंट प्रिन्ट प्रोडक्शन्स् (प्रा.) लि.

सूचनाओं के प्रचार हेतु निःशुल्क वितरण

इस अंक में...

वर्ष 5 • अंक–21 जुलाई–सितम्बर, 2020

05

संपादक की कलम से

07

पावागढ़ – चम्पानेर

17

गति से प्रगति

20

पर्यटन के क्षेत्र में नए युग का आरम्भ

23

राजगीर

36

चेट्टीनाड के व्यंजन

46

एक सूर्यास्त का ब्यौरा

54

दग्शाई

62

एक मीठा जहर

67 कविताएं: दीदार के लिए बेकरार गुजारिश

68 कविताएं: एक बच्चा और जिन की कहानी स्त्री का सफर

70 चन्द अशआ'र

71

साहित्य संस्कृति और पर्यटन की खामोश सिपाही

73

डॉ. कपिला वात्स्यायन

74

भारतीय संस्कृति में सौलह संस्कार

79 पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान सम्पादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' अपने प्रकाशन के पांच वर्ष पूरे कर छठे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जा रही, यह गृह पत्रिका देश में घरेलु पर्यटन के संवर्धन के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों में एक कड़ी के रूप में आज अपनी एक पहचान बना चुका है। पर्यटन मंत्रालय के कार्मिकों के साथ देश के कई जाने माने लेखकों तथा ब्लागरों ने भी 'अतुल्य भारत' से जुड़ कर भारतीय पर्यटन को एक नई दिशा प्रदान करने में अपना योगदान दिया है।

गुजरात अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां का 'पावागढ़– चम्पानेर' एक ऐसा पर्यटन गंतव्य है जिसके बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। 'पावागढ़– चम्पानेर' लेख के माध्यम से सुश्री आशा बेन पटेल ने इस आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और विरासती शहर के बारे में सूचनापरक जानकारियां दी हैं, जो पर्यटकों को निश्चित रूप से प्रेरित कर सकेंगी।

सरकार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आवागमन के साधनों और सम्पर्कता को बढ़ाने के लिए सतत प्रयास कर रही है। इस कड़ी में दिल्ली के निकटवर्ती शहरों में क्षेत्रीय तीव्र परिगमन प्रणाली का विकास किया जा रहा है। परिवहन के इस नए साधन की विशेषता है कि यह इस क्षेत्र की परीधि में आने वाले पर्यटन गंतव्यों को जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। कैप्टेन प्राण रंजन ने अपने आलेख ''गति से प्रगति'' में सचित्र जानकारियां प्रस्तुत की हैं।

31 अक्टूबर, 2020 को भारत के पर्यटन क्षेत्र में एक नए युग का आरम्भ हुआ है। इस दिन देश के माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा गुजरात के केवडिया में 'सी–प्लेन' की सुविधा का उद्घाटन किया गया। इसी पर चर्चा करते हुए, डॉ. विश्वरंजन ने अपने लेख 'सी–प्लेन' में बताया है कि किस प्रकार से पर्यटकों को बहुत ही सस्ती वायुयान सेवाएं मिल सकेंगी।

आजकल हमारे जीवन में थर्मोकोल या फिर प्लास्टिक/पोलिथीन से बने डिस्पोजल कप और प्लेट आदि ने अहम स्थान बना लिया है। लेकिन यह वस्तुएं हमारे स्वास्थ्य के लिए जोखिम उत्पन्न कर रही हैं। इस ओर श्री मोहन सिंह ने अपने आलेख 'एक मीठा जहर' के माध्यम से हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए विशेषकर पर्यटकों को सावधान रहने की जरूरत पर बल दिया है।

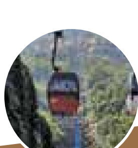

बिहार राज्य में राजगीर को कौन नहीं जानता? ऑल बुद्ध टूरिस्ट आर्गेनाइजेशंस के महासचिव डॉ. कौलेश कुमार काफी लम्बे समय से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने राजगीर के बारे में बहुत से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, धार्मिक तथा प्राकृतिक पर्यटन गंतव्यों के बारे में अपने अनुभव साझा किए हैं।

तमिलनाडु के चेट्टीनाड क्षेत्र में खानपान की विविधता एवं सुगंध से भरे पारंपरिक व्यंजनों और पाककला की एक अलग ही परंपरा रही है। श्री के. दिनाकरण ने अपने लेख 'चेट्टिनाड के व्यंजन' के माध्यम से वहां के खानपान के बारे में तथ्यात्मक एवं मनोरंजक जानकारी प्रस्तुत की है।

भारत के पर्यटन मानचित्र पर हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण स्थान है। फिर भी, यहां कुछ ऐसे गंतव्य हैं जिन पर पर्यटकों का ध्यान नहीं जाता है। इस प्रदेश में एक पहाड़ी शहर है 'दग्शाई'। जिसके बारे में यह भ्रान्ति मशहूर है कि यह प्रेतबाधित एक भूतहा शहर है। अनिरूद्ध सिंह ने इसके दिलचस्प इतिहास और प्राकृतिक सुन्दरता पर जानकारियां प्रस्तुत की हैं। हमारे ग्रंथों में जीवन के हर कदम पर सुख और दुख का उल्लेख करते हुए इन्हें एक उत्सव का रूप माना गया है। श्री शंकर लाल माहेश्वरी ने अपने लेख 'भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार' के माध्यम से हमें पारम्परिक मान्यताओं के बारे में रोचक जानकारी प्रदान की है।

श्री सुशान्त सुप्रिय ने ब्लैदीमीर नैबोकोव की अनुवादित एक मार्मिक कहानी 'एक सूर्यास्त का ब्यौरा' प्रस्तुत की है। साथ ही कविताएं भी शामिल की गई है। कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो बिना किसी प्रचार के देश के काम में लगे रहते हैं। दिल्ली की संस्कृति और तहजीब की ऐसी ही सिपाही थीं एक सादिया देहलवी और दूसरी डॉ. कपिला वात्स्यायन। 'याद इन्हें भी कर लें' में दोनों महान हस्तियों को अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि दी गई है।

इनके साथ ही पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और समाचार भी प्रस्तुत किए गए हैं। पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और "अतुल्य भारत" पत्रिका निश्चित रूप से इसमें अपना योगदान दे रही है।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में हम सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

इसके अलावा हम मंत्रालय के उन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के भी आभारी हैं जो भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए अपनी लेखन प्रतिभा प्रस्तुत कर रहे हैं।

मैं उन सभी लेखकों, सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपको यह अंक कैसा लगा इस पर आपके विचारों का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

गुजरात

पावागढ़ – चम्पानेर

–आशा बेन पटेल

पावागढ़ शहर अपने ऐतिहासक स्थलों के साथ–साथ धार्मिक महत्व के मां काली मंदिर लिए भी काफी मशहूर है। जमीनी स्तर से लगभग 550 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, मंदिर तक पहुंचने के लिए पहाड़ी रास्तों को काटकर सीढ़ियां भी बनाई गई हैं ताकि श्रद्धालु और पर्यटक आसानी से मां काली के दर्शन कर सकें। इस मंदिर से श्रृद्धालु पर्यटक आसपास के प्राकृतिक नजारों का आनंद भी ले सकते हैं। यहां तलैया और दुधिया तालाब भी देख सकते हैं। अकेले इस मंदिर के दर्शन के लिए रोजाना भक्तों का अच्छा खासा जमावड़ा लगता है। पावागढ़ भ्रमण की शुरूआत आप यहां के सबसे बड़े आकर्षण महाकाली मंदिर के दर्शन से कर सकते है।

पावागढ़ शक्तिपीठ

शक्ति पीठ वह स्थल कहलाते हैं जहां–जहां पर देवी सती के अंग गिरे थे। वह स्थान पवित्र स्थानों एवं शक्ति पीठों में गिना जाने लगा। शिव पुराण एवं अन्य पौराणिक ग्रथों में इस कथा का उल्लेख मिलता है कि किस प्रकार पिता दक्ष द्वारा पति के अपमान से त्रस्त हुई देवी सती ने स्वयं को यज्ञ की अग्नि के समर्पित कर दिया था।

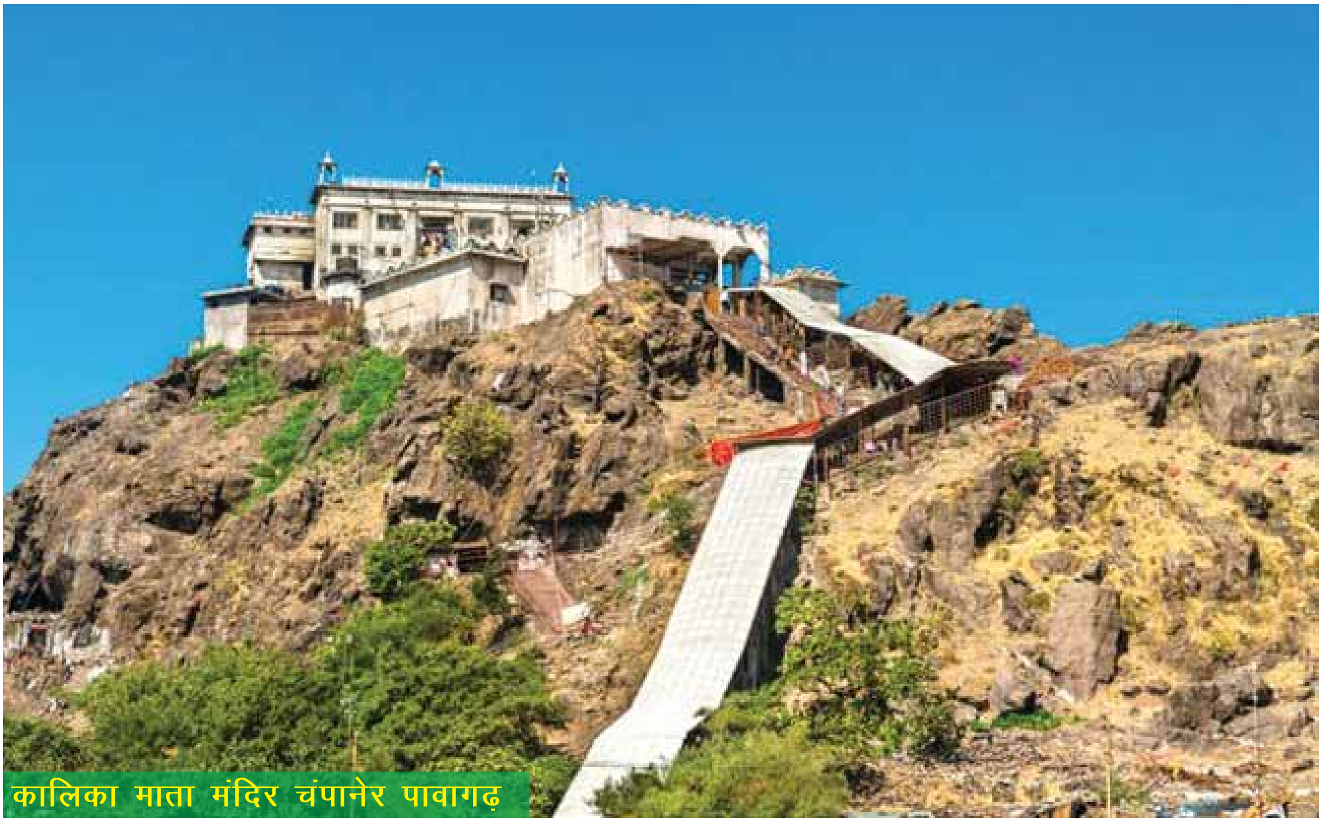

कालिका माता मंदिर चंपानेर पावागढ़

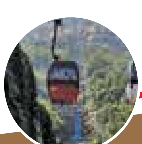

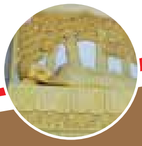

जब भगवान शिव को इस घटना के बारे में पता चलता है तो वह चारों ओर त्राही मचा देते हैं ओर सती के मृत शरीर को लेकर पूरे ब्रह्मांड में तांडव करते हुए भटकते रहते हैं। इस दौरान जहां भी सती के अंग गिरे वह स्थान शक्तिपीठ बन गए। पावागढ़ में माँ के दाहिने पैर की अंगुली गिरी थी। इसी प्रकार पावागढ़ भी एक सिद्ध स्थल काली माता का यह प्रसिद्ध मंदिर माँ के शक्तिपीठों में से एक है।

जगतजननी के माताजी के दाएं पैर की अंगूली गिरने के कारण इस जगह का नाम पावागढ हुआ।

मंदिर में मां काली की दक्षिण मुखी प्रतिमा विराजमान है जिसके कारण यहां तांत्रिक पूजा का विधान है। अतः यहां पर तांत्रिक कार्य संपन्न किए जाते हैं। तांत्रिकों का भी यह मुख्य स्थल हैं जहां वे लोग आकर तंत्र साधना कर तथा मां का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

इस स्थान के बारे में अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

इस पहाड़ी को गुरु विश्वामित्र से भी जोड़ा जाता है। माना जाता है की इस पहाड़ी पर कभी विश्वामित्र जी का वास था। उन्होंने इस स्थान को अपनी तपोस्थली बना कर वषों तक मां की उपासना की थी। विश्वामित्र जी ने ही यहां पर माँ काली की प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। वर्तमान में मंदिर में जो मूर्ति है यह वही प्रतिमा बताई जाती है। यहां निकट ही बहने वाली एक नदी को विश्वामित्र जी के नाम से 'विश्वामित्री' कहा जाता है।

नवरात्र के समय मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। इस दौरान पूरे मंदिर को बहुत ही सुंदर तरह से सजाया जाता है मंदिर रोशनी से सरोबार रहता है।

पावागढ़ कालिका मंदिर महत्व

इसी तरह पावागढ़ के नाम के पीछे एक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि इस दुर्गम पर्वत पर चढ़ाई लगभग असंभव काम था। चारों तरफ खाइयों से घिरे होने के कारण यहां हवा का वेग भी चहुँ तरफा था, इसलिए इसे पावागढ़ अर्थात ऐसी जगह कहा गया जहां पवन का वास हो। परंतु आज स्थिति काफी बेहतर है।

चंपानेर–पावागढ़ पुरातात्विक पार्क के दर्शनीय स्थलों में पार्क के निकट ही यहां का सबसे पुराना और सबसे प्रसिद्ध कालिका माता मंदिर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियों का लम्बा सफर तय करना पड़ता हैं क्योंकि जंगलो के बीच मंदिर बहुत ऊंचाई पर स्थित हैं। पर्यटक जैसे ही मंदिर में प्रवेश करते हैं उन्हें मंदिर की तीनों प्रमुख देवियों के दर्शन होते हैं। सभी मूर्तियों के बीचों बीच कलिका माता की मूर्ति बाई ओर बहुचरमाता की मूर्ति और दाई ओर देवी काली की आकर्षक मूर्ति हैं।

सरकार की ओर से यहां रोप–वे सुविधा उपलब्ध करवाई गई है, जिसके जरिये आप पहाड़ी तक आसानी से पहूंच सकते हैं। यह सुविधा माछी से शुरू होती है। यहां से ''रोप–वे'' लेकर श्रद्धालु पावागढ़ पहाड़ी के ऊपरी हिस्से तक पहुंचते हैं।

मंदिर के मुख्य द्वार तक पहुंचने के लिए रोप–वे से उतरने के बाद भी लगभग 250 सीढ़ियां चढ़ कर जाना होता हैं। जहां इस दुर्गम मंदिर की चढ़ाई करना बहुत ही थका देने वाला एवं कठिन है। परंतु इस क्षेत्र के मनोरम दृश्यों को देखते हुए यह थकान कब गायब हो जाती है इस बात का एहसास भी नहीं होता।

वडोदरा से लगभग 50 कि.मी. दूर पावागढ़ गुजरात का एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। प्राकृतिक खजाने से भरा यह पर्वतीय गंतव्य अपने महाकाली मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। दूर–दूर से आए भक्त लोग मां के दर्शनों को पाकर जीवन के सभी दुखों को भूल जाते हैं व माता की भक्ति में रम जाते हैं। इसके अलावा यह एक जनजातीय क्षेत्र भी है। यहां स्थित चंपानेर–पावगढ़ पुरातत्व पार्क 2004 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया जा चुका है। अपने प्राकृतिक आकर्षणों और ऐतिहासिक महत्व के बल पर यह शहर गुजरात में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले स्थानों में गिना जाता है।

वास्तुकार करण ग्रोवर ने काफी समय व प्रयास करके इस भारतीय विरासत को पुर्नस्थापित करने में योगदान दिया है।

चंपानेर के बारे में...

इस क्षेत्र का इतिहास जानने से पता चलता हैं कि इस 8वीं शताब्दी में चावड़ा राजवंश के एक प्रमुख शासक राजा वनराज चावड़ा ने यहां एक नगर की स्थापना की और अपने मित्र जनरल चंपा के नाम पर नगर का नाम चंपानेर रखा था। पावागढ़ किले का निर्माण 15वीं शताब्दी के दौरान चंपानेर में ''खिंची चौहान'' राजपूतों के द्वारा किया गया था।

चंपानेर पावागढ़ का प्रसिद्ध लकुलीश मंदिर पावागढ़ की पहाड़ी पर स्थित एक खूबसूरत आकर्षण हैं। लकुलीश मंदिर के इतिहास से पता चलता हैं कि यह मंदिर 10 वीं शताब्दी का है। मंदिर का निर्माण लकुलीश द्वारा किया गया था जोकि पशुपति शैव धर्म सम्बंधित संस्थापक थे। लेकिन उचित रखरखाव के अभाव में चंपानेर पावागढ़ का लकुलीश मंदिर अब दिनों दिन

धार्मिक स्थलों की सैर के बाद आप पावागढ़ के प्रसिद्ध ऐतिहसिक स्थलों की सैर का भी आनंद ले सकते हैं। चंपानेर–पावागढ़ पुरातत्व पार्क यहां के मुख्य आकर्षणों में गिना जाता है। आप यहां हिन्दू और मुस्लिम धर्म से जुड़े धार्मिक स्थलों को भी देख सकते हैं। इसके अलावा आप यहां प्राचीन किले, महल, भव्य प्रवेश द्वार, मकबरे, आदि धरोहरों को भी देख सकते हैं। इतिहास प्रेमियों के लिए यह स्थल किसी जन्नत से कम नहीं।

लकुलीश मंदिर

खंडहर के रूप में तब्दील होता जा रहा हैं। मंदिर में स्थापित देवताओं में दक्षिणामूर्ति भगवान शिव, भगवान गणेश और गजंतक शिव की आकर्षक जटिल मूर्तियां स्थापित हैं।

नवलखा कोठार

नवलखा कोठार पावागढ़ का प्राचीन पर्वतीय स्थल है। इस पहाड़ी पर ट्रेकिंग करके आसानी से जा सकते हैं। इसलिए यह स्थान अपने रोमांचक

नवलखा कोठार

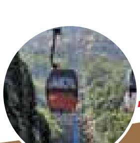

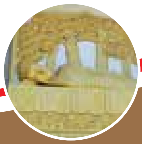

अनुभवों के लिए साहसिक पर्यटकों के मध्य काफी लोकप्रिय है। नवलखा कोठार अनाज संग्रह के लिए बनाई गईं प्राचीन गुंबदनुमा संरचनाओं के लिए ज्यादा प्रसिद्ध है। पावागढ़ मुख्य पहाड़ी के उत्तर की तरफ स्थित, यह मुस्लिम राजा द्वारा बनाई गई एक ऐतिहासिक जगह है। इतिहास में दिलचस्पी रखने वाले पर्यटक यहां की यात्रा करते हैं।

चंपानेर–पावागढ़ पुरातात्विक उद्यान

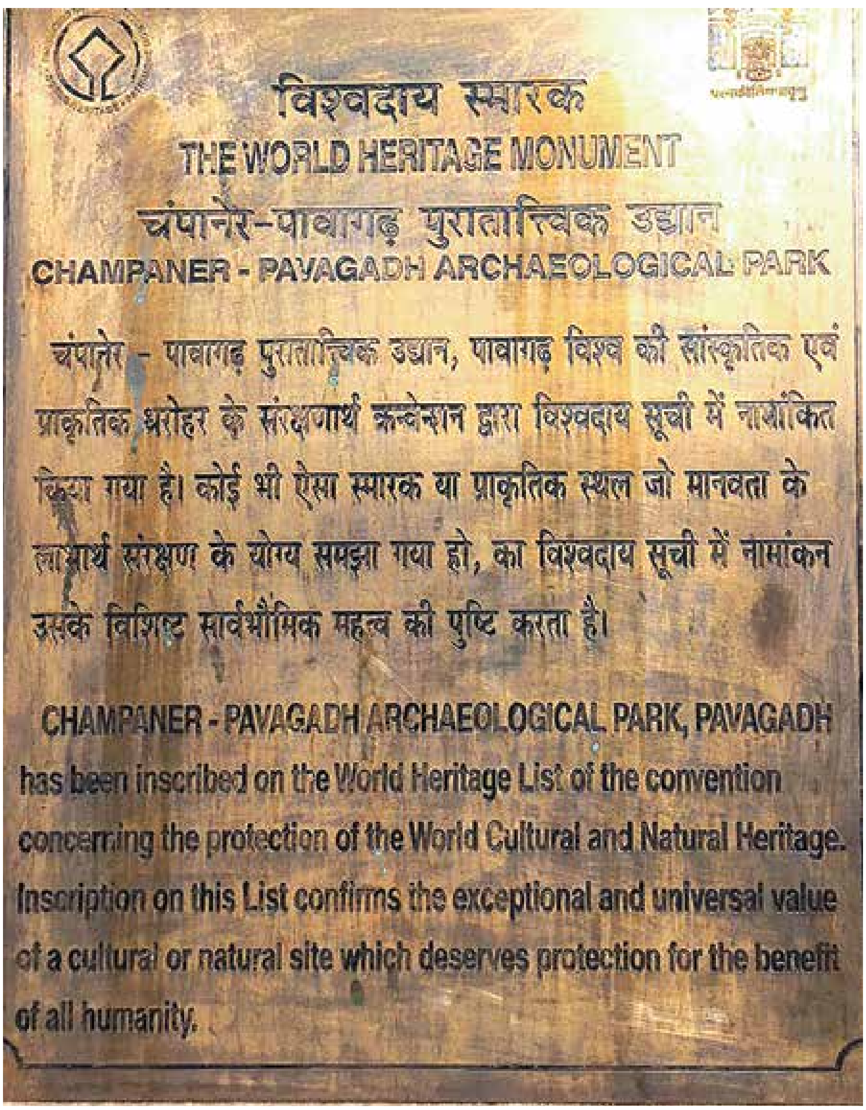

वर्ष 2004 में इस पार्क को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया जा चुका हैं। यहां वृहत स्तर पर उत्खनित पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं जीवित सांस्कृतिक धरोहरों की बहुतायत है।

इसमें प्रागैतिहासिक चौकोलिथिक स्थल, एक प्राचीन हिन्दू राज्य की राजधानी का एक महल व किला गुजरात की प्राचीन राजधानी के अवशेष हैं। यहां अन्य पदांकों सहित, किले, प्रासाद, धार्मिक इमारतें, आवासीय अहाते, कृषि चिह्न व जल आपूर्ति निर्माण कार्य के आठवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के अनेक स्थल हैं। पुरातत्व पार्क एक खूबसूरत उद्यान हैं और पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं।

पुरातत्व पार्क सुबह 8.00 बजे से शाम के 5:30 तक पर्यटकों के लिए खुला रहता हैं।

चंपानेर पावागढ़ पुरातत्व पार्क की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के बीच का माना जाता हैं क्योंकि ठंडी के मौसम के दौरान इस क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलों की यात्रा करना सहज हो जाता हैं। यदि आप भी चंपानेर पावागढ़ पुरातत्व पार्क की यात्रा का विचार बना रहे हैं तो सर्दियों का मौसम यात्रा के

लिए आदर्श समय साबित होगा। चंपानेर–पावागढ़ पुरातत्व पार्क में अनेक स्मारक स्थित है जिनमें से 38 स्मारकों की देखभाल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण करता है। सर्वेक्षण द्वारा धरोहर का संरक्षण तथा पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयत्न किये जा रहे हैं साथ ही साथ पर्यावरण के संरक्षण का कार्य भी किया जा रहा है।

संरचनाएं बनी हुई हैं। इसके अलावा यहां कुछ खंडहर मौजूद हैं जिन्हें देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

जैन मंदिर

चंपानेर पावागढ़ में जैन मंदिर गुजरात में जैन आबादी को बयां करते हुए नजर आते हैं। यहां

किला पावागढ़

पावागढ़ का किला

चंपानेर पावागढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल यहां का ऐतिहासिक किला पावागढ़ पहाड़ी के खूबसूरत नजारे को प्रस्तुत करता हैं। चंपानेर पावागढ़ के किले के अंदर कई धार्मिक

के दर्शनीय जैन मंदिर का इतिहास 14वीं और 15वीं शताब्दी की ओर लेकर जाता है। इस समय के दौरान इन मंदिरों का पुनर्निमाण कराया गया था। पावागढ़ आने वाले पर्यटक तथा तीर्थयात्री इन आकर्षक और खूबसूरत जैन मंदिरों को देखने जरूर आते हैं।

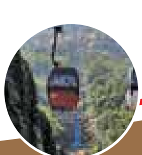

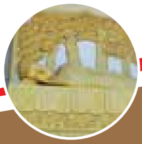

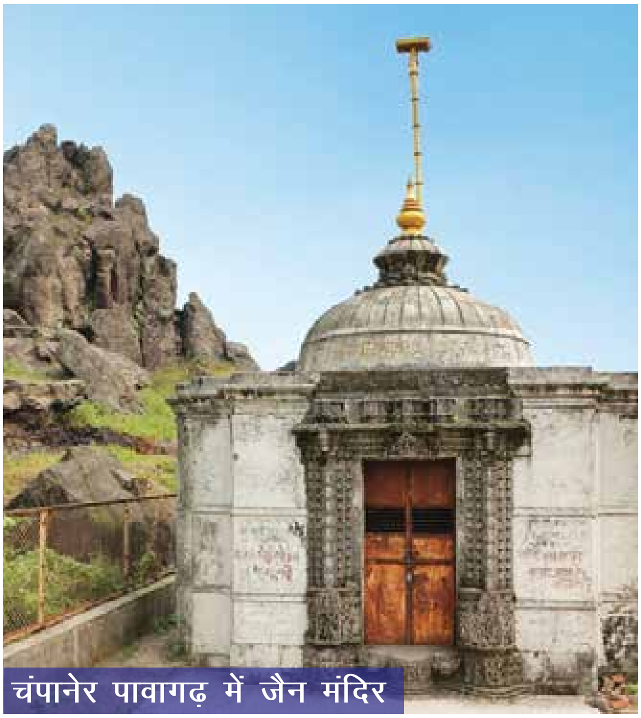
चंपानेर पावागढ़ में जैन मंदिर

जामी मस्जिद

चंपानेर के प्रमुख आकर्षण में शामिल जामी मस्जिद जिसे यहां जामा मस्जिद के नाम से भी जाना जाता हैं। इस मस्जिद का निर्माणकाल 15 वीं शताब्दी के दौरान माना जाता है और पश्चिम भारत की सबसे बेहतरीन मस्जिदों में इसका शुमार होता है। जामी मस्जिद दो मंजिला इमारत है और इस्लामिक वास्तुकला के साथ हिन्दू वास्तुकला को भी मस्जिद में देखा जा सकता हैं। जामी मस्जिद का प्रवेश द्वार दो विशाल अष्टकोणीय मीनारों से घिरा हुआ है और आधुनिक वास्तुकला की शैली से सुसज्जित हैं।

जालीदार नक्काशी

जामी मस्जिद की मीनारें

चंपानेर पावागढ़ की एक और दिलचस्प बात यह है कि पावागढ़ की ऐतिहासिक पहाड़ी को हिमालय का एक हिस्से के रूप में जाना जाता हैं। अहमदाबाद से चंपानेर पावागढ़ की दूरी लगभग 148 कि.मी. है। जबकि चंपानेर से पावागढ़ लगभग छः कि.मी. दूर है।

लीला गुम्बद

चंपानेर पावागढ़ के आकर्षण में शामिल लीला गुम्बद की मस्जिद एक ऊंचे चबूतरे पर स्थित है। गुम्बद के केंद्र में एक गुंबददार प्रवेश द्वार बना हुआ हैं। यह खूबसूरत गुम्बद पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

निर्माण प्राकृतिक रूप से हरियाली और खुले स्थानों के बीच किया गया था। माना जाता हैं कि ऐसा करना इस्लाम में आम बात नही हैं। मस्जिद का सबसे प्रमुख आकर्षण और दिलचस्प बात मकबरा और ग्लोब आकार की गुंबद है। माना जाता हैं कि इस मस्जिद का निर्माण 15वीं शताब्दी के दौरान किया गया था।

लीला गुम्बद की मस्जिद चंपानेर–पावागढ़

केवड़ा मस्जिद

केवड़ा मस्जिद पर्यटकों के बीच प्रमुख आकर्षण के रूप में जानी जाती हैं। केवड़ा मस्जिद का

नगीना मस्जिद और सिनोटाफ

चंपानेर पावागढ़ की खूबसूरत दो मंजिला नगीना मस्जिद दक्षिण में स्थित है। नगीना मस्जिद की व्याख्या अंग्रेजी के गहना शब्द के

सिनोटाफ में बैठी लेखिका

रूप की जाती हैं जोकि सफेद संगमरमर से बनी हैं। मस्जिद के निर्माण में जटिल रूप से डिजाइन की गई मीनारें भी हैं जोकि इसकी खूबसूरती को ओर अधिक निखार देते हैं। मुख्य प्रार्थना हॉल के साथ–साथ तीन प्रमुख बड़े गुंबदों को भी देखा जा सकता है।

कैसे पहुंचें

वायुमार्ग द्वारा :

यहां के लिए निकटतम हवाई अड्डा वडोदरा है जो यहां से लगभग 50 कि.मी. दूर है। अहमदाबाद का एयरपोर्ट लगभग 190 कि.मी. दूर है।

रेलमार्ग :

यहां का निकटतम बड़ा रेलवे स्टेशन भी वडोदरा में है, जो देश के अनेक बड़े शहरों से सीधी रेल सेवाओं से जुड़ा हुआ है। वडोदरा पहुंचने के बाद सड़क यातायात के सुलभ साधन उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग :

गुजरात के अनेक शहरों से सरकारी और निजी कंपनियों की लक्जरी बसें और टैक्सी सेवाएं संचालित की जाती है।

स्थानीय भोजन

चंपानेर–पावागढ़ पुरातत्व उद्यान की यात्रा के दौरान गुजरात राज्य और इसके नजदीकी स्थानों का बहुत ही स्वादिष्ट प्रसिद्ध भोजन भी चख सकते हैं। यहां कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन पर्यटकों की भूख मिटाने के लिए मिल जाएंगे। चंपानेर पावागढ़ की यात्रा के दौरान गुजराती थाली, इतालवी भोजन, भात (चावल), बाजरी नो रोटलो, थेपला/ढेबरा, खाखरा, मथिया और आलू भाजी और आलू करी शामिल हैं।

कहाँ रुके :

चंपानेर पावागढ़ पुरातत्व पार्क के आसपास कुछ ही दूरी पर लो–बजट से लेकर हाई–बजट तक के होटल और लॉज उपलब्ध हैं।

सभी फोटो लेखिका द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं।

***

पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान

"गति से प्रगति"

–कैप्टन प्राण रंजन

पर्यटन हर व्यक्ति के जीवन की एक चाहत होती है। हर व्यक्ति अपने कुछ पल सौम्य सुंदर प्राकृतिक मनभावन स्थलों के साथ ही साथ स्मारकों एवं अन्य आकर्षक रेस्तरानों में व्यतीत करना चाहता है। स्वाभाविक है कि इसके लिए अपेक्षित राशि के साथ ही साथ उचित समय की काफ़ी अहमियत होती है। समय की अधिकता का भी अपना महत्व होता है। इस संदर्भ में भ्रमण हेतु आवागमन में कम से समय लगने का महत्व भी होता है, ताकि गंतव्य स्थल पर अधिक से अधिक समय तक आनंद उठा सकें।

क्षेत्रीय तीव्र परिगमन प्रणाली (Regional Rapid Transit System – RRTS) का परिचालन एक क्रांतिकारी कदम है। इसके तीव्रगति से अंतर्राज्यीय परिचालन से अच्छी दूरी से लोग अनेक गंतव्य स्थानों तक कम समय में आरामदेह सफ़र कर सकेंगे। ज़ाहिर है इसका लाभ अच्छी संख्या में आगंतुक एवं पर्यटक भी उठा सकेंगे। अभी शुरुआत में दिल्ली को विभिन्न दिशाओं के नज़दीकी राज्यों से इस सुविधा की शुरुआत की जाने की प्रक्रिया पर कार्य जारी है, जिसे देश के और कई मार्ग पर लागू किए जाने की सम्भावना हो सकती है।

पर्यटक निर्धारित समय में कई मनपसंद स्थलों पर जा सकें इसके लिए अक्सर लोग टैक्सी, दिन भर के लिए किराए के अन्य वाहनों या फिर निजी वाहन चुनते हैं। अक्सर ज़्यादा दूर न जाकर नज़दीक के ही स्थलों पर बार–बार जाने को मजबूर रहते हैं क्योंकि ऐसे मौके पर, वह चाहकर भी कई उचित दूरीवाले स्थलों पर नहीं जा पाते हैं।

इस दिशा में 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम' अपने आदर्श–वाक्य 'गति से प्रगति' के अनुरूप दृढसंकल्प प्रबंध–निदेशक के दिशानिर्देश पर सक्षम तथा लगनशील कर्मचारियों का समूह अथक प्रयास के द्वारा पूरे परियोजना को समय पर पूरा करने में पूरी क्षमता से कार्यरत है। इसके परिचालन से पर्यटन की दिशा में यथोचित लाभ होना निश्चित है।

*सम्प्रति: राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम सलाहकार

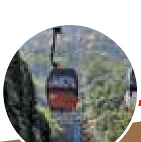

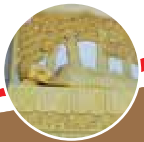

प्रथम चरण

आरआरटीएस नेटवर्क क्षेत्र के यात्रियों को 160 कि.मी.की तेज गति पर हर 5–10 मिनट के बाद त्वरित और विश्वस्तरीय आवागमन सुविधा प्रदान करेगा। बिना रुके यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा जिससे 100 कि.मी. की दूरी 45–50 मिनट के भीतर ही तय की जा सकेगी। इस नेटवर्क पर हर क़िस्म के यात्रियों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर इस बात को भी सुनिश्चित किया जाएगा कि वह सुविधापूर्वक अपने गंतव्य तक पहुंच सकें।

प्राथमिकता के आधार पर कॉरिडोर चिह्नित अनुमानित लंबाई अपेक्षित यात्रा का समय

दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ 82 कि.मी. 55 मिनट

दिल्ली–गुरुग्राम–रेवाड़ी–अलवर 164 कि.मी. 117 मिनट

दिल्ली–पानीपत 103 कि.मी. 65 मिनट

एनसीआर में निर्बाध सम्पर्कता

प्रतीक्षा समय और इंटरचेंज की संख्या सार्वजनिक परिवहन को अपनाने में दो प्रमुख बाधाएं हैं। यात्रियों के लिए निर्बाध आवाजाही प्रदान करने के लिए, तीन आरआरटीएस गलियारे इंटरऑपरेबल होंगे। चरण–1 के सभी तीन गलियारे अर्थात् दिल्ली – गाजियाबाद – मेरठ, दिल्ली – पानीपत और दिल्ली – गुरुग्राम – एसएनबी, दिल्ली के सराय काले खाँ आरआरटीएस स्टेशन पर आकर मिलेंगे। यात्री रेल बदले बिना एक गलियारे से दूसरे तक जा सकेंगे।

भावी चरण: –

चिन्हित किए गए कॉरिडोर:

दिल्ली– फरीदाबाद– बल्लभगढ़–पलवल

गाजियाबाद–खुर्जा

दिल्ली–बहादुरगढ़–रोहतक

गाजियाबाद–हापुड़

दिल्ली–शाहदरा–बड़ौत

दिल्ली से मेरठ लाइन के 14 आरआरटीएस स्टेशन: सराय काले खान, न्यू अशोक नगर, आनंद विहार, साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, मुरादनगर, मोदी नगर दक्षिण, मोदी नगर

उत्तर, मेरठ दक्षिण, शताब्दी नगर, पुल– बेगम और मोदीपुरम।

दिल्ली – अलवर रूट की मेन–लाइन पर बनने वाले स्टेशनः निजामुद्दीन/ सराय काले खान, आईएनए, मुनिरका, एरोसिटी, उद्योग विहार, गुड़गांव सेक्टर 17, राजीव चौक, खेड़की दौला, मानेसर, पंचगांव, बिलासपुर चौक, धारूहेड़ा डिपो, एमबीआईआर, रेवाड़ी, बावल, एसएनबी, खैरथल, अलवर।

दिल्ली–पानीपत कॉरिडोर

लंबाई = 103 किलोमीटर

मुख्य लाइन स्टेशनों की सम्भावित संख्या = 16 (सराय काले खान सहित)।

सतत विकास

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सहित पूरे क्षेत्र में सतत शहरी विकास का लक्ष्य प्राप्त करने में फास्ट ट्रांजिट सिस्टम सहायक सिद्ध होगा। यह ऐसी प्रक्रियाओं को सक्रिय करेगा जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण संरक्षण के साथ एक सतत आर्थिक और सामाजिक विकास करने में सक्षम होंगी।

''आरआरटीएस के प्रथम चरण के संचालन से निम्न मार्गों पर बहुत कम समय में पर्यटक दिल्ली एवं आसपास के पर्यटक स्थलों पर भ्रमण हेतु आराम से जा सकते हैं। विशेषकर दिल्ली के प्राचीन स्मारकों पर पहुंचना सुगम हो जाएगा, जिससे इन जगहों पर पर्यटकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

कम भीड़ कम उत्सर्जन

कम उत्सर्जन और कम भीड़

पर्यावरण के अनुकूल और बहुत कम उत्सर्जन आरआरटीएस उच्च गति से (औसत 100 किमी प्रति घंटा में) कई गुना अधिक लोगों को ले जाएगा। जबकि भूमि पर यह केवल तीन मीटर जगह पर लेगा और इस प्रकार सड़कों पर भीड़ को कम करेगा। कुल मिलाकर यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में परिवहन क्षेत्र से कुल उत्सर्जन को काफी कम कर देगा।

संतुलित आर्थिक विकास

निर्बाध उच्च गति कनेक्टिविटी से पूरे क्षेत्र में संतुलित आर्थिक विकास होगा, जिससे समाज के सभी वर्गों को आर्थिक लाभ होगा और विकास के कई नोड्स एक ही स्थान पर होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों के बजाय विकसित होंगे।

***

सी प्लेन

पर्यटन के क्षेत्र में नए युग का आरम्भ

–डॉ. विश्वरंजन

31 अक्टूबर, 2020 को भारतीय पर्यटन के क्षेत्र में एक नया युग शुरू होने जा रहा है। सरदार पटेल के जन्म दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सी प्लेन का आरंभ करेंगे।

भारत के पर्यटन क्षेत्र में एक नया आकर्षण विश्व स्तर पर स्थापित कर चुका है, भारत की संस्कृति सभ्यता और पर्यटन स्थल का जिस प्रकार से विकास हुआ और विश्व स्तर पर प्रचार– प्रसार किया गया है इसका मूलभूत उदेश्य फलीभूत होते हुए यह नजर आएगा। इससे देश विदेश के सैलानियों में भारत में पर्यटन के प्रति और उत्सुकता बढ़ेगी।

भारतीय पर्यटन को वैश्विक स्तर पर अलग पहचान स्थापित करने के लिए सरदार सरोवर बांध के सम्मुख स्टैच्यू ऑफ यूनिटी खड़ा है। यह गुजरात राज्य के नर्मदा ज़िले में यह नर्मदा नदी के किनारे स्थित केवडिया में बनाया गया है।

इसका निर्माण कार्य 2013 में शुरू किया गया था और 2018 में पूरा होने तक में पांच वर्ष का समय लग गया। 250 से अधिक इंजीनियरों और 3,400 श्रमिकों की मेहनत के साथ इस निर्माण में 70,000 टन सीमेंट, 18,500 टन स्टील बार, 6,000 टन स्ट्रक्चरल स्टील, और 1,700 टन कांस्य का उपयोग किया गया और तब जाकर यह प्रतिमा आकार ले सकी है। यह विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा बनाई गई है जिसकी ऊंचाई 182 मीटर है ।

31 अक्तूबर,2020 को भारत सरकार की एक नई पहल से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी और केवडिया में विकसित पर्यटन के प्रति लोगों में आकर्षण का भाव जाग उठेगा। इस दिन देश के मानीय प्रधानमंत्री जी सीप्लेन की शुरुआत करेंगे।

सीप्लेन एक प्रकार का विमान है जो पानी की सतह पर लैंडिंग कर सकता है चल सकता है और उडान भर सकता है। यह एक रोमांच से भरपूर आनंददायी यात्रा होगी।

1911 और 1912 में ग्लेन एच कर्टिस द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में पहला व्यावहारिक समुद्री जहाज बनाया और उड़ाया गया था।

सीप्लेन के अगले चरण में, धरोई बांध (जिला

अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट और केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के बीच हवाई संपर्क प्रदान करने के उद्देश्य से, सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती 31 अक्टूबर, 2020 से को माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से सीप्लेन की शुरूआत की जाएगी। सीप्लेन 19 सीट वाला होता है और जिसमें 14 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था है।

*लेखक – डॉ.विश्वरंजन
परामर्शदाता, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

मेहसाणा) अंबाजी और शत्रुंजय बांध (जिला भाव नगर) और तापी जिले को जोड़ेगा।

सीप्लेन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं : फ्लाइंग बोट और फ्लोटप्लेन। फ्लाइंग बोट के धड़ के नीचे इसका मुख्य लैंडिंग गियर होता है। यह आमतौर पर विंग टिप्स के पास छोटे फ्लोट्स के साथ पूरक होता है, जिसे विंग या टिप फ्लोट्स कहा जाता है। फ्लोट प्लेन को पानी पर पिंटोज़ द्वारा समर्थित किया जाता है, जिसे फ्लोट्स कहा जाता है।

> फिलीपींस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, फिनलैंड, यूनाइटेड किंगडम, श्रीलंका, फिजी, न्यूजीलैंड, पापुआ न्यू गिनी, संयुक्त अरब अमीरात, इटली, मालदीव और हांगकांग जैसे देशों में सीप्लेन की सेवाएं चालू हैं।
>
> भारत में, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित एक वाणिज्यिक सीप्लेन सेवा, जल हंस को दिसंबर 2010 में 10 यात्रियों की क्षमता के साथ एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू की गई थी।

भारत में सीप्लेन परियोजना :

केंद्र के निर्देशानुसार, उड़ान यानि 'उडे देश का आम नागरीक' योजना को 2016 में नागरिक उड्डयन मंत्रालय के तहत एक क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना के रूप में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने गुजरात, असम, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की राज्य सरकारों और अंडमान और निकोबार प्रशासन से पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए जल हवाई अड्डे स्थापित करने के लिए संभावित स्थानों का पता लगाने का अनुरोध किया।

उड़ान यानि "उड़े देश का आम नागरीक" योजना के तीसरे दौर के तहत, 2019 में, केंद्र सरकार ने छह जल हवाई अड्डों से उड़ानों को भी स्वीकृति प्रदान की थी, जिसमें शत्रुंजय बांध (गुजरात), गुवाहाटी रिवरफ्रंट और उमरंगो जलाशय (असम) और नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) शामिल हैं।सीप्लेन संचालन के लिए दिए गए मार्गों में साबरमती रिवरफ्रंट से लेकर स्टेचू ऑफ यूनिटी और शत्रुंजय डैम शामिल हैं।

परियोजना से स्थानीय स्तर पर पर्यटन और होटल व्यवसाय में वृद्धि होगी। यह स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्रदान करेगा। प्रस्तावित स्थलों पर वर्तमान सामाजिक अवसंरचना सुविधाओं के स्तर में वृद्धि के लिए जल हवाई अड्डों की स्थापना में योगदान करेगा।

पर्यावरण पर प्रभाव:

सीप्लेन ऑपरेशंस के दौरान, टेकऑफ और सीप्लेन की लैंडिंग के दौरान पानी में ज्वार उत्पन्न होता है। इससे पानी में ऑक्सीजन का मिश्रण होगा, जिससे सी–प्लेन संचालन के पास जलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जिससे इस प्रणाली में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ेगी और कार्बन सामग्री कम हो सकती है।

योजना का उद्देश्य क्षेत्रीय मार्गों पर आर्थिक रूप से व्यवहार्य और लाभदायक उड़ानें आरंभ करना है ताकि छोटे शहरों में भी आम आदमी के लिए उड़ानें सस्ती हो जाए। यह योजना मौजूदा हवाई पट्टियों और हवाई अड्डों के पुनरुद्धार के माध्यम से देश के असेवित और रेखांकित हवाई अड्डों को कनेक्टिविटी प्रदान करने की परिकल्पना करती है और प्रायोगिक आधार पर दस वर्षों की अवधि के लिए लागू की जा रही है।

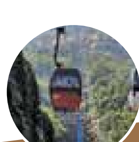

उड़ान 3.0 और उड़ान 4.0 का उद्देश्य जल हवाई अड्डों को जोड़ने के लिए सीप्लेन को शामिल करना है। केवडिया को वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक स्थल बनाने में भारत सरकार की अहम् भूमिका रही है। आप इस कार्य की साक्षी बनने के लिए एक बार केवडिया और उसके आस पास विकसित पर्यटन को देखने जा सकते है। स्टेचू ऑफ यूनिटी के आस पास के पर्यटन स्थल–

विभिन्न स्थानों से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के लिए सीधी सड़क परिवहन के लिए कृपया गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम की उपलब्ध सेवाओं को देखें।

कैसे पहुंचे :

वायुमार्ग : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निकटतम अहमदाबादए सूरत और वडोदरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं। इन हवाई अड्डों के पास अंतरराष्ट्रीय उड़ान पथ हैं और सभी प्रमुख हवाई अड्डों को विश्व स्तर पर जोड़ते हैं।

रेलवे मार्ग : अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से 198 कि.मी./ तीन घंटे 30 मिनट

वडोदरा रेलवे स्टेशन से 91 कि.मी./ एक घंटा 30 मिनट

सूरत रेलवे स्टेशन से 156 कि.मी./तीन घंटे

ईमेल– vishwranjan@yahoo.com

मो. 9852583535

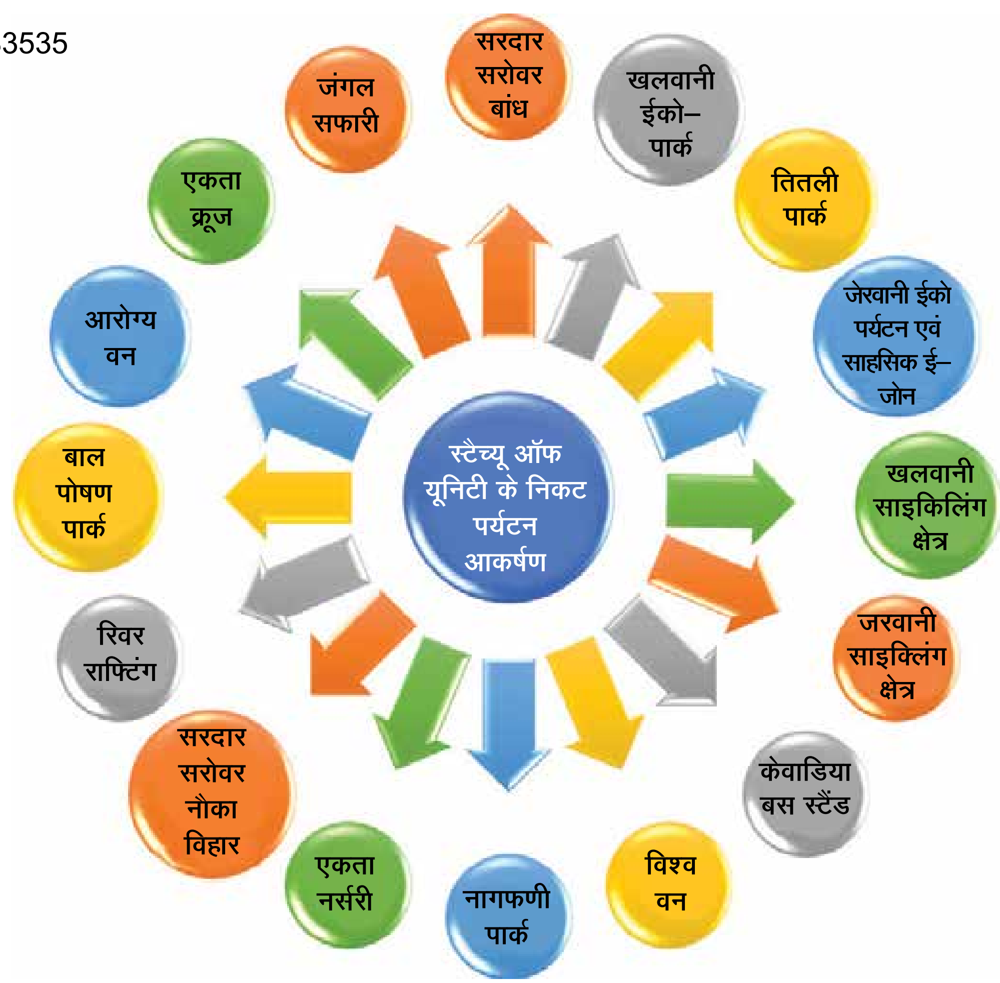

बिहार

राजगीर

—डॉ. कौलेश कुमार

ब्रहमा की तपोभूमि तथा सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक राजाओं का प्रिय स्थान एवं पर्यटकों का मनमोहक स्थान रहा है प्राचीन मगध की राजधानी राजगीर।

पौराणिक काल

इसकी उत्पत्ति की तारीख अज्ञात है। तथापि, शहर में लगभग 1000 ईसा पूर्व के मिट्टी के पात्र पाए गए हैं। प्रसिद्ध साइक्लोपियन वॉल (साइक्लोपियन चिनाई से बनी दीवार) शहर में स्थित है। जिसके बारे में कहा जाता है कि 2,500 साल पुरानी यह साइक्लोपियन दीवार राजगीर के राजधानी शहर की किलेबंदी के लिए बनाई गई थी। यह मिसीनियन वास्तुकला के समान विशाल चूने के पत्थर से बनाई गई दीवार है। इस गौरवशाली संरचना का मौर्य काल अथवा उससे पूर्व काल में कोई उल्लेख मौजूद नहीं है, लेकिन इसके निशान इसके अस्तित्व की भव्यता के गौरव को दर्शाते हैं।

राजगीर की प्राचीन साइक्लोपियन दीवार बड़े पैमाने पर एक साथ लगे हुए पत्थरों से बनाई गई है। इस प्राचीन दीवार की समानता ग्रीक शैली के किलों की दीवारों के साथ की जाती है।

*पर्यटन मंत्रालय की राष्ट्रीय पर्यटन सलाहकार समिति के सदस्य तथा महासचिव, ऑल बुद्धा टूरिस्ट ऑर्गेनाइजेशंस

दुनिया की पुरानी सभ्यताओं में से एक राजगृह जिसे किसने और कब बसाया कोई प्रमाण नहीं मिलता है। प्राचीन काल में इस शहर का नाम क्या था? क्या सुनहरे समय में भी इस शहर का योगदान था ? क्या मानवता के विकास में इस शहर का योगदान रहा है? क्या इस शहर पर भगवान के चरण पड़े और पड़े तो कब पड़े? इस शहर ने दुनिया को क्या कुछ दिया यह सब आज भी शहर के सीने में अनसुलझे रहस्य है। जिन्हें विज्ञान देखता तो है पर समझ से परे कह कर टाल देता है। मगध की राजधानी राजगृह की कार्बन डेटिंग भी लाखों साल पुरानी है और वह किसी पुरानी सभ्यता की ओर इशारा करती है? मैं इस सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डालना चाहता हूं।

–डॉ. कौलेश कुमार

इस दीवार को बड़े पैमाने पर असमान पत्थरों से बनाया गया था। इसकी चौड़ाई लगभग 14 फीट है। दीवार को मजबूती देने के लिए अंतराल पर गढ़ बनाए गए थे। पाली ग्रंथों के अनुसार किलाबन्द शहर में प्रवेश करने के लिए 32 बड़े और 64 छोटे द्वार थे। रत्नागिरी पहाड़ी के साथ चल रही इस प्राचीन विशाल दीवार का काफी हिस्सा अभी भी मौजूद है। यह इतनी लोकप्रिय है कि प्रतिदिन सैकड़ों की तादाद में पर्यटक इसे देखने आते हैं।

राजगीर का प्राचीन शहर राजा बिम्बिसार और उनके पुत्र अजातशत्रु की राजधानी थी जो बुद्ध के समकालीन थे।

नाम ...

कहते हैं कि ब्रह्मा के पुत्र बसुमति ने इस शहर को बसाया था। अतः इसका पहला नाम बसुमतिपुर कहलाया। रामायण में कहा गया है कि यह राजा भरत का ननिहाल हुआ करता था और उस समय इसे कैकेयपुर के नाम से जाना जाता था।

राजगीर शब्द की उत्पत्ति के लिए शाब्दिक अर्थ, ''शाही पहाड़'' भी माना जाता है। यह 5वीं शताब्दी ई.पू. तक इसे राजगृह कहा जाता था। यह मगध की प्राचीन राजधानी थी।

गिरिव्रज, कुशग्रपुर, कैकेयपुर, आदि के नामों से भी प्रसिद्ध प्रकृति की गोद में बसा राजगृह पर्यटकों का मन लुभाता है। राजगीर नाम राजगिहा से आया है, जिसका अर्थ है ''राजा का घर''।

चीनी यात्री ह्वेनत्सांग के अनुसार नगर को विशेष रूपसे पुरातन (ओल्ड) और नव राजगीर में विभाजित किया गया था। पूर्व राजगीर एक घाटी के भीतर स्थित है और पहाड़ियों से घिरी हुई है। इसे मिट्टी के एक तटबंध से अलग किया गया है। जिसके साथ बाहरी किलेबंदी , चक्रवाती दीवारों का एक परिसर जुड़ा हुआ है जो पहाड़ियों के शिखर के साथ बनाया गया था। नव राजगीर को घाटी के उत्तरी प्रवेश द्वार के बाहर, आधुनिक शहर के निकट एक और बड़े तटबंध से परिभाषित किया गया है।

यह शहर प्राचीन राजगृह नगर मगध राज्य की पहली राजधानी थी, जो अंततः मौर्य साम्राज्य में विकसित हुआ था। यह क्षेत्र जैन और बौद्ध धर्मावलम्बियों के लिए भी एक पवित्र स्थल है। यह 20वें जैन तीर्थंकर मुनि सुव्रत का जन्मस्थान था। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध दोनों ने 6वीं और 5वीं शताब्दी ई.पू.के दौरान राजगीर में अपनी मान्यताओं के बारे में लोगों को शिक्षित किया था। राजगीर में ही प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय स्थित था और वर्तमान में उसी नाम से नालंदा विश्वविद्यालय राजगीर में स्थापित किया गया है।

राजगीर के माध्यम से यह भी कहा जाता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने लगभग 250 ई.पू. बोधगया की यात्रा की थी, और रत्नजटित सिंहासन (वज्रासन) को पवित्र मंदिर को समर्पित किया था, जहां भगवान बुद्ध ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था।

गौतम बुद्ध ने कई महीनों तक ध्यान करते हुए ग्रिधरा–कुटा, ('गिद्धों की पहाड़ी') पर अपने कुछ प्रसिद्ध उपदेश भी दिए और मगध नरेश बिम्बिसार सहित अनगिनत लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी। यहीं पर बुद्ध ने अपना प्रसिद्ध अतनत्य सूत्र परिभाषित किया था। इन्हीं पहाड़ियों में से एक पर सप्तपर्णी नामक गुफा है, जहां बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से एक महाकश्यप, के नेतृत्व में बौद्ध महापरिषद का आयोजन किया गया था। भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध संघ की प्रथम बौद्ध संगति के लिए सभापति के रूप में महाकश्यप को ही चुना गया था।

मगध की राजधानी राजगृह वास्तव में अनेक धर्मों का संगम रहा है। यह जैन धर्मावलमबियों का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण स्थल है। भगवान महावीर के उपदेश एवं प्रिय स्थल आपको आज भी 'अहिंसा परमोधर्मः' की ओर ले जाते हैं।

जरासंध का अखाड़ा

जरासंध का अखाड़ा एक प्रसिद्ध अखाड़ा है जहां मार्शल आर्ट का अभ्यास कराया जाता है। आज भी भगवान कृष्ण के रथ के पहियों के निशान यहां के पत्थरों पर देखे जा सकते हैं।

महाभारत काल

भारत के सबसे बड़े साहित्यिक महाकाव्य महाभारत में इस शहर का उल्लेख गिरिव्रजा नगर के रूप में मिलता है। दुनिया के पराक्रमी राजाओं में से एक, मगध नरेश जरासंघ इसके राजा थे। कहा जाता है कि जरासंध अजेय था और उसका शरीर अपने कटे अंगों को फिर से जोड़ सकता था। इस महाकाव्य में जरासंध और पांडव पुत्र भीम की लड़ाई का उल्लेख मिलता है।

द्वापर काल से इसका इतिहास मिलता है। एक समय ऐसा था जब मगध नरेश जरासंध खुद यहां दांव आजमाते थे। उनका अखाड़ा आज भी इसका गवाह है। इस अखाड़े को उन दिनों

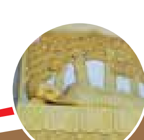

दूध से पटाया जाता था। इसकी मिट्टी आज भी भुरभुरी है। इसकी चर्चा धर्म ग्रंथों में भी मिलती है कि महाभारत की लड़ाई शुरू होने से पहले इसी अखाड़े में मगध सम्राट जरासंध और पांडव पुत्र भीम के बीच 28 दिनों तक मलयुद्ध हुआ था। इस मलयुद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण भी उपस्थित रहते थे। किवदंती के अनुसार, भीम ने जरासंध को दो भागों में विभक्त कर उसके शरीर को दो विपरीत दिशाओं में फेंक दिया जिससे वे दोबारा न जुड़ सकें।

इस अखाड़े को देखने के लिए देश विदेश के पर्यटक और शैक्षणिक भ्रमण पर स्कूली बच्चे बड़ी संख्या में आते हैं। इसकी गौरव गाथा जानकर सैलानी बहुत खुश होते हैं। लेकिन प्रागैतिहासिक कालीन इस अखाड़े का अस्तित्व आज खतरे में है क्योंकि गौरवशाली धरोहर की पहचान महज एक टीले के रूप में सिमट कर रह गई है।

राजगीर में कुश्ती का इतिहास बहुत पुराना है। मकर संक्रांति और राजगीर महोत्सव के मौके पर हर साल राजगीर के इस अखाड़े में कुश्ती का आयोजन किया जाता है। इसमें कई राज्यों के पहलवान अपना दांव लगाने के लिए आते हैं। यह देश ही नहीं बल्कि दुनिया के दुर्लभ अखाड़ों में एक है।

स्वर्ण भंडार गुफाएं :

प्रसिद्ध स्वर्ण भंडार गुफाएं राजगीर में ही स्थित हैं। स्थानीय लोग इसे सोन भंडार गुफा कहते हैं। स्वर्ण भंडार समूह की गुफाओं में दो गुफाएं हैं जिन्हें पूर्वी और पश्चिमी गुफा के नाम से जाना जाता है।

इस गुफा में दो कक्ष हैं। यह दोनों कक्ष पत्थर की एक चट्टान से बने हैं। कक्ष सं. 1 माना जाता है कि सुरक्षाकर्मियों का कमरा था जबकि दूसरे कक्ष के बारे में मान्यता है कि इसमें सम्राट बिम्बिसार का खजाना था। कुछ विद्वानों का मानना है कि बिम्बिसार का खजाना इसी कक्ष में अभी भी बंद है। लेकिन कुछ विद्वानों का कहना है कि यह खजाना पूर्व मगध सम्राट जरासंध का है क्योंकि कुछ ग्रंथों में यह उल्लेख मिलता है कि इस पहाड़ के नीचे ''बारामाथा'' में राजा जरासंध द्वारा सोने के सिक्कों पर चिकनाई का कार्य कराया जाता था और सिक्कों को चिकना करने के बाद ही भंडार की कोठरियों में रखा जाता था। इसलिए इस स्थान को स्वर्ण भंडार कहा जाता था। शायद इन गुफाओं की असाधारण बनावट ही इस स्वर्ण भंडार की सुरक्षा करती थी। इन गुफाओं में छिपे खजाने तक जाने का रास्ता एक बड़े प्राचीन पत्थर के पीछे से होकर जाता है। कुछ का मानना है कि खजाने तक

स्वर्ण भंडार गुफाओं का दृश्य

सोन–भंडार (स्वर्ण–भंडार)

पहुंचने का रास्ता वैभरगिरी पर्वत सागर से होकर सप्तपर्णी गुफाओं तक जाता है, जो सोन भंडार गुफा के दूसरी तरफ तक पहुंचता है।

कालांतर में, पहाड़ में बनी इस गुफा के इस

> इन गुफाओं पर पहली बार कनिंघम की निगाह पड़ी और उन्होंने बौद्ध धर्मपंथ की सप्तपर्णी गुफा का निरीक्षण कर इनमें समानता का निष्कर्ष निकाला। कनिंघम के बाद कई विद्वानों ने इस स्थान का निरीक्षण किया और कुछ समय बाद एक गुफा की दक्षिणी दीवार पर पाए गए। वास्तुकला की दृष्टि से यह गुफाएं नागार्जुन गुफा और मौर्ययुग की बराबर गुफाओं की समकालीन प्रतीत होती हैं।

सोन–भंडार में पत्थरों की कलाकृतियां

स्थान का जैन और बौद्ध भिक्षु 'घर' के रूप में उपयोग करने लगे थे।

गुफाओं के अंदर और बाहर कई भित्ती चित्र तथा अभिलेख पाए गए हैं। यहां आने वाले हजारों पर्यटक इन गुफाओं में कुछेक स्थानों पर ही प्रवेश कर पाते हैं।

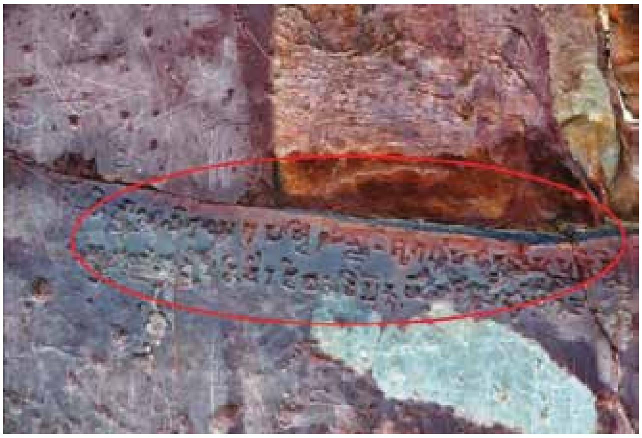

शंख लिपिः गुफा की एक दीवार पर शंख लिपि में कुछ लिखा हुआ है जो आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। कहा जाता है कि इसमें ही खजाने के दरवाजे को खोलने का तरीका लिखा हो सकता है। लेकिन दुनिया भर के विद्वान लिपि को पढ़ने में सफल नहीं हो पाए हैं।

विश्व की पुरानी लिपियों में से एक ''शंख लिपि'' में लिखावट किसी अनसुलझे रहस्य की ओर इशारा करती है।

जैन धर्म

ऐतिहासिक रूप से कई साम्राज्यों की राजधानी रहा राजगीर बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों के

संस्थापकों की पवित्र ऐतिहासिक स्मृति के साथ जुड़ा हुआ है। जैन धर्मावलम्बियों के लिए राजगीर बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन स्थानों का संदर्भ चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों, विशेष रूप से फाहियान और ह्वेन त्सांग के कार्यों में भी मिलता है।

24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपने जीवन के 14 वर्ष राजगीर और नालंदा में, चातुर्मास काल में राजगृह और आसपास के स्थानों में बिताए। यह उनके एक श्रावक (गृहस्थ अनुयायी) राजा श्रेणिक की राजधानी थी। यहां कई अन्य जैन मंदिरों के साथ मुनि सुव्रत को समर्पित लगभग 1200 वर्ष पुराना एक प्राचीन मंदिर भी मौजूद है। बीसवें जैन तीर्थंकर, मुनि सुव्रतका जन्म यहीं हुआ था।

नौलखा जैन मंदिर

जैन के 20वें तीर्थंकर भगवान मुनि सुब्रत स्वामी की 85 ऊरन युक्त शिखर शैली में बना

मंदिर राज्य की प्रसिद्ध धरोहर है। रेलवे स्टेशन से दो किलोमीटर दूर और बस स्टैंड से 600 मीटर की दूरी पर स्थित इस मंदिर का आकर्षण

देश विदेश के पर्यटकों को प्रेरित करता है। 8700 फीट के क्षेत्र में फैले हुए, इस मंदिर के निर्माण में धातु का उपयोग नहीं किया गया है। इसमें प्रतिमा, संगमरमर से बना ऊरन पूर्ण मंडप शिखर, लाल भवन तहखाने बने हैं। यह उच्च वास्तुकला प्रदर्शित करता है। हाल ही में मंदिर के नीचे एक और मंदिर बनाया गया है जो पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है।

ब्रह्मकुंड

राजगीर अपने गर्म पानी के झरनों के लिए प्रसिद्ध है। कहते है कि भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड का निर्माण करने के समय राजगीर में ही तपस्या की थी। जिस स्थान पर उन्होंने तपस्या की थी उसे आज ब्रह्मकुंड के नाम से जाना जाता है। यहां आज भी धरती के नीचे से प्राकृतिक रूप से गर्म पानी निकलता रहता है जिसे चर्मरोगों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। पर्यटक इसमें स्नान करते हैं।

शीतलकुंड

यहां गर्म पानी के अनेक झरने होने के बावजूद शीतल झरना नहीं था। कहते हैं कि एक बार गुरू नानक देव गर्मी के दिनों में राजगीर आए हुए थे। लेकिन वहां केवल गर्म पानी ही उपलब्ध था। शिष्यों द्वारा विनती करने पर गुरू जी जिस

यह नगर वैभार, रत्ना, सैला, सोना, उदय, छठ और विपुला नामक सात पहाड़ियों से घिरी हुई एक घाटी में है। पंचेन नदी शहर के बाहरी इलाके से बहती है। राजगीर अपने गर्म पानी के कुण्डों यानि तालाबों के कारण एक स्वास्थ्य और शीतकालीन आश्रम के रूप में भी विकसित हुआ है। इन कुण्डों के जल में कुछ औषधीय गुण पाए गए हैं ।

स्थान पर बैठे थे, वहीं से शीतल जल का झरना निकलने लगा आज इस स्थान को शीतलकुंड के नाम से जाना जाता है।

वेणुवन

वेणु पाली का शब्द है और वेणु का हिंदी अर्थ होता है बांस। वेणुवन अर्थात बांस का जंगल या बांस का बगीचा। जरासंघ के वध के पश्चात भगवान कृष्ण ने उनके पुत्र सहदेव को राजा घोषित करने के बाद अपनी बांसुरी वहीं वन में गाड़ दी थी। चीन के सभी प्रमुख विद्वान यात्री फाहियान, ह्वेन त्सांग और इत्सिंग यहां आए और उन्होंने अपनी पुस्तकों में 'वेणुवन' नाम से ही इस स्थान का वर्णन किया है। इस स्थान पर भगवान बुध द्वारा इस स्थान पर ध्यान करने के कारण प्रसिद्ध है। आज का वेणु वन एक कृत्रिम जंगल है, जहां

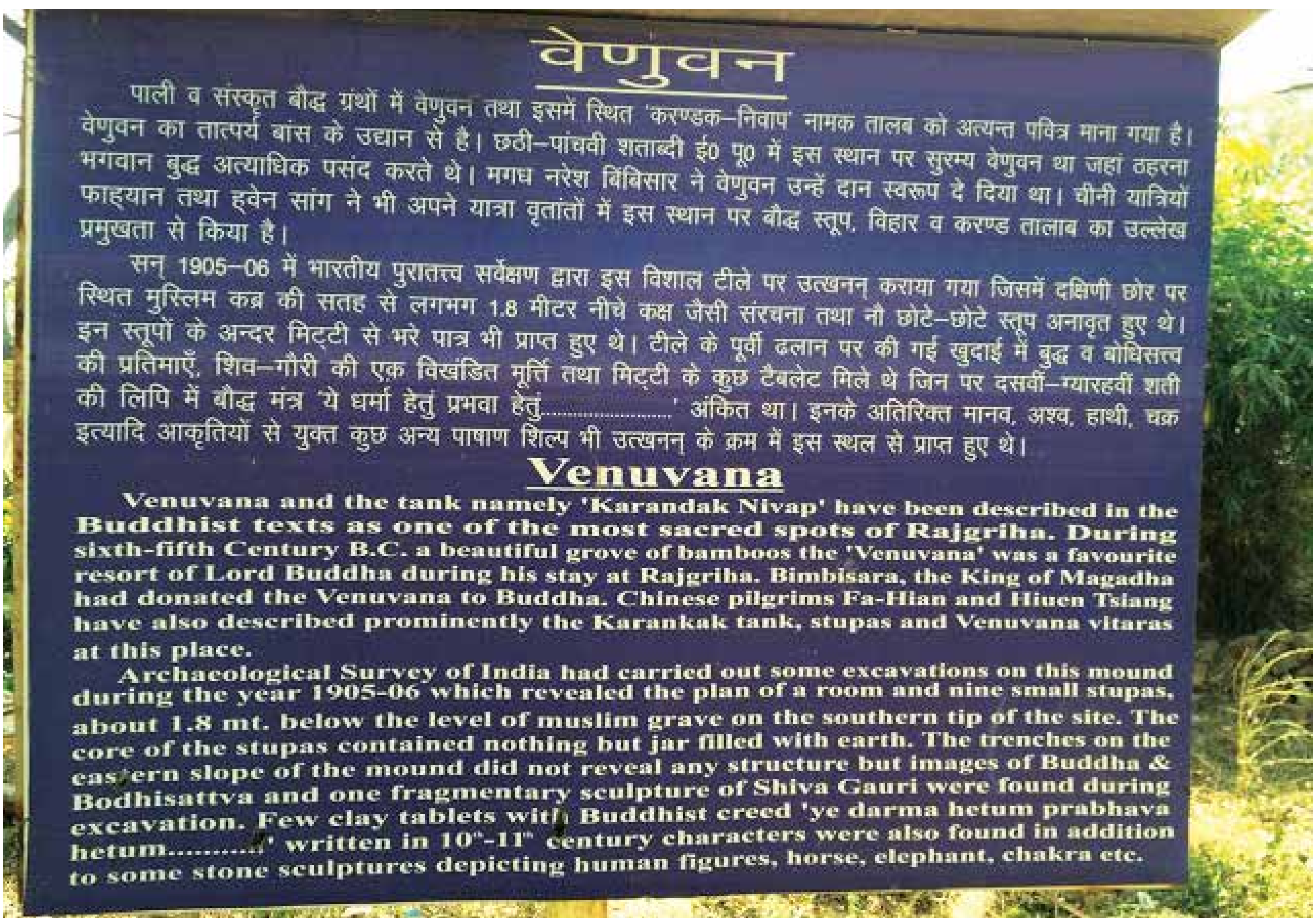

वेणुवन के बारे में जानकारी देता बोर्ड

पर्यटक शाश्वत शांति का आनंद ले सकते हैं। वेणुवन के अंदर एक तालाब है जिसे कलंदक निवास कहते हैं। उस समय में इस तालाब में कलन्दक नाम का एक नाग रहता था उसके नाम पर ही इसका नामकरण किया गया है।

यहां प्रवेश शुल्क पांच रुपये है।

इससे कुछ दूरी पर, श्री रामकृष्ण मठ, जो एक आध्यात्मिक संगठन है, विभिन्न प्रकार से मानवीय तथा सामाजिक सेवा के कार्यों में लगा हुआ है।

इसलिए मंदिर के बारे में स्थानीय लोग इसे महाभारत कालीन राजा जरासंध के समय का बना हुआ बताते हैं। स्थानीय लोगों की मानें तो इस मंदिर में राजगृह के राजा महाराज जरासंध पूजा किया करते थे।

अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित की सर्पदंश से हुई मृत्यु का बदला लेने के लिए उनके पुत्र राजा जनमेजय ने संसार के सारे सर्पो को नष्ट करने के उद्देश्य से, सर्पों की आहूति देते हुए

वेणुवन में लगे बांस के पौधे

मनियारमठ

मनियार मठ राजगीर का आदि धर्म तीर्थ स्थल है। राजगीर के ब्रह्मकुंड से शांति स्तूप जाने के मार्ग में पड़ता है। यहां एक बेलनाकार मंदिर है। इसे राजगृह के देव मणिनाग का मंदिर बताया जाता है। पाली ग्रंथों में इसे मणिमाला चैत्य कहा गया है जबकि महाभारत में मणिनाग मंदिर नाम से उल्लेख मिलता है।

यहीं पर यज्ञ किया था। इस स्थान को आज ''मनियारमठ'' के नाम से जाना जाता है।

मंदिर की संरचना कुएं जैसी है। इसका व्यास 3 मीटर और दीवार 1.20 मीटर मोटी है। इसकी बाहरी भित्ती पर पुष्पाहार से सजे देवताओं की आकृतियां बनी हैं। इनमें शिव, विष्णु, नाग लपेटे गणेश जैसी आकृतियां हैं। छह भुजाओं वाले

नृत्यरत शिव की आकृति प्रमुख आकर्षण है। इनमें कई मूर्तियां नष्ट हो चुकी हैं। कला शैली की दृष्टि से इतिहासकार इन मूर्तियों को गुप्तकालीन बताते हैं। कुंड, चबूतरे और मुख्य मंदिर के आसपास भी कई कलाकृतियां देखी जा सकती हैं।

बिम्बिसार जेल

बिम्बिसार जेल के बारे में प्रसिद्ध है कि अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार को यही कैद करके रखा था और इस जगह का चुनाव खुद बिम्बिसार ने किया था क्योंकि इस स्थान से उन्हें भगवान बुद्ध के दर्शन हो जाया करते थे। लेकिन सूत्र अभी तक सहमत नहीं हैं कि बुद्ध के समकालीन बिंबिसार और अजातशत्रु में से

बिम्बिसार जेल

किसने इसका निर्माण कराया था। अजातशत्रु के पुत्र को राजधानी को पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) स्थानांतरित करने का श्रेय भी दिया जाता है।

विश्व शांति स्तूप

गृद्धकूट पर्वत पर्वत पर बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिये थे। जापान के बुद्ध संघ ने इसकी चोटी पर एक विशाल "शान्ति स्तूप" का निर्माण करवाया है जो आजकल पर्यटकों के आकर्षण का मूख्य केन्द्र है। स्तूप के चारों कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थापित हैं। यह शांति एवं अहिंसा का संदेश देने के लिए विश्व में बनाए गए 80 शांतिस्तूपों में से एक तथा भारत का सबसे पुराना शांति स्तूप है। जिसे 1960 के दशक में जापानी आध्यात्मिक संत फूजी ने उपहार में दिया था।

विश्व शान्ति स्तूप पहाड़ पर स्थित है। वहां तक पहुंचने के लिए दो रास्ते हैं। एक रास्ता पैदल का है और दूसरा रोप–वे। सैलानी भी सोचते है कि पैदल तो रोज चलते ही हैं, यहां आए ही हैं तो क्यों नहीं रोप–वे का भी आनंद लिया जाए। यहां रोप–वे का टिकट जाने तथा वापस आने दोनों ओर का होता है। इस रोप–वे पर बैठकर पर्यटक बहुत ही रोमांचित होते हैं। यह करीब 15 मिनट का सफर है। कुछ समय पहले तक इसका टिकट केवल 100 रूपए प्रति व्यक्ति था।

विश्व शांति स्तूप की दीवारों पर बुद्ध की लेटी हुई प्रतिमा

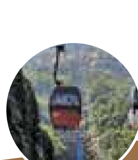
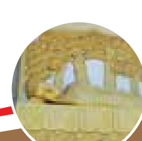

विश्व शांति स्तूप के पास लगा एक पट्ट

जापानी मंदिर के बहार लगी बुद्ध की प्रतिमा

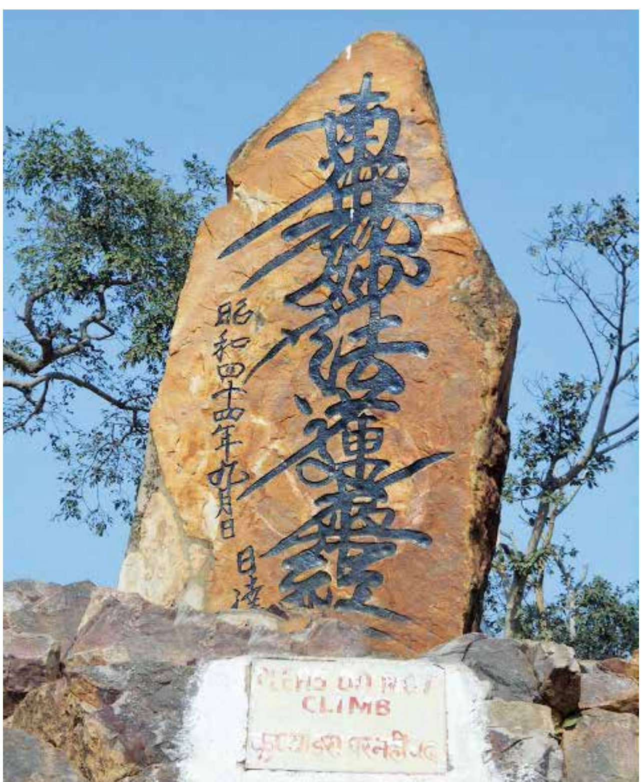

मेले और महोत्सव

कार्यक्रम राजगीर महोत्सव, पुरुषोत्तम मास मेला, सारिपुत्त वर्ल्ड पीस वॉक, मकर संक्रांति मेला

कैसे पहुंचे

वायुमार्गः राजगीर आने के लिए निकटतम "गया अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा" है, जो राजगीर से 80 कि.मी. दूर है। दूसरा हवाई अड्डा पटना में जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा राजगीर से 105 कि.मी. दूर है। इन दोनों ही स्थानों से राजगीर के लिए बसें मिल जाती हैं। पूर्व सूचना/बुकिंग पर इस क्षेत्र के कुछ पर्यटक परिवहन संचालक विशेषकर विदेशी पर्यटकों के लिए वोल्वो बसों या ए.सी. टैक्सी आदि की व्यवस्था करते हैं।

रेलमार्गः राजगीर रेलवे स्टेशन शहर को देश के अन्य हिस्सों से जोड़ता है।

यह भारतीय रेलवे की प्रतिष्ठित बौद्ध तीर्थयात्रा ट्रेन– महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस के गंतव्य में से एक है।

बस सुविधाः बिहार के लगभग सभी बड़ें नगरों से राजगीर के लिए नियमित बसें मिलती हैं।

राजगीर वन्यजीव अभयारण्य

राजगीर या पंत वन्यजीव अभयारण्य, नालंदा जिला प्रशासन के तहत 35.84 कि.मी.के क्षेत्र को कवर करते हुए नालंदा वन प्रभाग में स्थित है। यह वन्यजीव अभयारण्य दक्षिण गंगा के मैदान के भीतर सुरम्य राजगीर की पहाड़ियों में बसे जंगलों का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इस जंगल को बचाने के लिए 1978 में राजगीर वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया था। राजगीर वन्यजीव अभयारण्य में रत्नागिरी, विपुलगिरि, वैभवगिरी, सोनगिरी और उदयगिरि के पांच असमान क्षेत्र शामिल हैं । इस अभयारण्य में सैलानी वनस्पतियों की किस्मों और वन्यजीवों सहित आसपास के परिदृश्य का आनंद ले सकते हैं।

खाजा : सिलाओ, राजगीर रास्ते पर स्थित एक छोटा सा शहर है, यह ''खाजा'' नामक स्वादिष्ट मिठाई के लिए प्रसिद्ध है। यह बिहार की एकमात्र मिठाई है जिसे GI Tag प्राप्त है।

स्थान की लोकप्रियता

1970 में आई देव आनंद की फिल्म जॉनी मेरा नामके एक गीत ''ओ मेरे राजा'' को राजगीर में रत्नागिरी हिल्स और वहां बने रोपवे में फिल्माया गया था। इसके अलावा भी भारतीय प्राचीन संस्कृति के इन भग्नावशेषों में समय समय पर कई फिल्मों की शूटिंग की गई हैं।

राजगीर में ''विरासत संग्रहालय'' पर्यटकों की रूचि का एक और स्थान है।

1982 में राजगीर में सुंदर वीरायतन संग्रहालय खोला गया। आचार्य श्री चंदनजी द्वारा डिजाइन किए गए 24 तीर्थंकरों के जीवन और शिक्षाओं के कलात्मक हस्तनिर्मित प्रतिनिधित्व से युक्त संग्रहालय में 50 से अधिक पैनल हैं। यह एक बहुत ही लोकप्रिय गंतव्य है, जिसके बारे में कहा जाता है कि अब तक पचास लाख से अधिक पर्यटक इस संग्रालय में आ चुके हैं। गैलरी की यात्रा किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं है।

यह भी देखें: राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर की पहाड़ियां, अतनियत सुता, राजगीर महोत्सव, मगध के पौराणिक राजा भड्डा कुंडलकेसा, नाहुब, नालंदा, कुर्की हार होर्ड, राजगीर की चक्रवाती दीवार, बोअर की गुफा, श्री धनासनाथ जैन मंदिर, जरासंध का अखाड़ा, घोरा कटोरा, वन्यजीव अभयारण्य

यहां अंदर जाने का प्रति व्यक्ति 15 रूपये का टिकट लगता है।

***

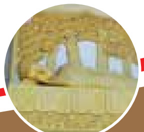

तमिलनाडु

चेट्टीनाड के व्यंजन

—के. दिनाकरण

लेखक गाइ ट्रेबे एक पुस्तक के अग्रलेख में कहते हैं: ''दक्षिण भारत में एक कहावत है कि वह लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें चेट्टियारों की तरह भोजन करने का अवसर मिलता है। चेट्टियार खुद भी कहते हैं कि जब तक नाक से पानी, आंख से आंसु और माथे से पसीने के साथ पूरे शरीर में सिहरन पैदा न हो, खाने का मजा ही नहीं आता है। उनके भोजन के व्यंजन असामान्य रूप से सूक्ष्म और सुगंधित होते हैं।

चेट्टियार, जिन्हें नागरथर्स भी कहा जाता है, व्यापारियों और बैंकरों का एक छोटा समुदाय था जो चोल साम्राज्य के समय में पुम्पुहार और कावेरीपट्टनम में रहते थे। कहा जाता है कि 8वीं शताब्दी में तंजावुर राज्य में आई एक बड़ी बाढ़ ने चेट्टियारों को कोरोमंडल तट से हटकर राज्य के शुष्क क्षेत्र में आकर बसने को विवश कर दिया था, जिससे चेट्टियार कारैक्कुडि क्षेत्र में आकर बस गए थे। यहां से उन्होंने दूर दराज के राज्यों तथा पूर्व के देशों के साथ व्यापार के माध्यम से अपने भाग्य को बदलने और खुद को फिर से स्थापित करने के लिए प्रयास किए। इतिहास साक्षी है कि चेट्टियारों ने बर्मा, जावा, खमेर (कंबोडिया), श्रीलंका और मॉरीशस जैसे देशों के साथ दक्षिण भारत के मसाला व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

*सम्प्रतिः लाकेशंस एण्ड लाजिसटिक्स प्रा.लि., मुम्बई के प्रबंध निदेशक तथा ब्लाग्र। लाकेशंस एण्ड लाजिसटिक्स के कार्य का पूरा परिचय पिछले अंको में दिया गया है।

तमिलनाडु में चेट्टीनाड का चेट्टियार या नागरथर या नट्टुकोट्टई समुदाय आज भारतीय संस्कृति की धरोहर बन गया है। लेकिन चेट्टीनाड के व्यंजन और वहां के खानपान का आज भी तमिलनाडु के व्यंजनों की सूची में सबसे अहम स्थान है। एक अर्ध–शुष्क क्षेत्र में रहने से उन्होंने सब्जियों के साथ ही आंवला, अमरूद, जामुन,सेव जैसे अन्य फलों को धूप में सुखाकर उनका उपयोग करने में महारत हासिल की। जब वह व्यापार के लिए मालाबार तट पर पहुंचे उनकी भोजन की आदतें गैर–शाकाहारी भोजन से प्रभावित हुई क्योंकि वहां पश्चिम एशिया के रूढ़िवादी ईसाई और मुस्लिम बड़ी संख्या में रहते थे और हिंदूओं को भी मांसाहार से कोई आपत्ति नही थी। इससे चेट्टियार भी मांस, मछली तथा कुछ समुद्री उत्पादों को भी धूप में सुखाकर उपयोग करने लगे थे। यद्यपि, उनके अधिकांश व्यंजन चावल और चावल आधारित संगत जैसे डोसा, अप्पम, इडियप्पम और इडली के साथ खाए जाते थे। बर्मा से व्यापारिक संपर्कों के माध्यम से उन्होने चिपचिपे लाल चावल से बने एक प्रकार के चावल का हलवा बनाना सीखा। लेकिन लेखक उल्लेख करते है कि पहले भी चेट्टियार शुरू में तट के पास ही रहते थे। इसलिए वहां कई स्वनामधन्य

व्यंजन जैसे मीन कुझुम्बु (फिश करी), नंदू मसाला (केकड़ा करी), सुरापुट्टु (शार्क मछली पेस्ट्री) और एरल मसाला (झींगा करी) भी पाए गए थे। जब इस समुदाय के लोग बाद में आज के तमिलनाडु के गर्म और शुष्क आंतरिक इलाकों में बस गए, तब जंगली उत्पाद भी उनकी आहार आदतों में शामिल हो गए। जिनमें जंगली मुर्गी, कडा (बटेर), मुयल (खरगोश) और टर्की (एक प्रकार की बत्तख) आदि मांसाहारी व्यंजन प्रमुख थे। आज भी, चावल या चावल आधारित व्यंजनों जैसे दोसा, अप्पम, इडियप्पम,अडाई और इडली के साथ परोसा जाता है।

इतिहास की कुछ पुस्तकों से ज्ञात होता है कि दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ मसालों आदि का व्यापार करने के लिए 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब चेट्टियारों ने श्रीलंका, बर्मा, डच ईस्ट इंडीज और फ्रेंच इंडो –चीन (अब मलेशिया और सिंगापुर) में कारोबार स्थापित किए तो आगे चलकर उन्होंने अपने समुदाय के लिए कुछ भोजनालय आरम्भ किए थे जिनका स्वाद लेने के लिए स्थानीय लोग भी आने लगे तो वह गैर–शाकाहार की ओर उन्मुख हुए। (द बंगला टेबलः फ्लेवर एंड रेसिपीज इन चेट्टिनाड : सुमीत नायर और मीनाक्षी मय्यप्पन : 2014, में इतिहासकार एस मुथैया)

मसालों के व्यापार में चेट्टियारों की भागीदारी सदियों पुरानी विरासत बन गई है। उन्होंने वैश्विक आयात और मुंगफली के बीज, फल और छाल से निर्यात से कोचीन और पेनांग, बांदा द्वीप समूह, अरब बंदरगाह पोर्ट ऑफ होर्मुज लाओस और वियतनाम जैसे स्थानों तक दक्षिण भारत के मसालों, नारियल, चावल और फलियों का निर्यात किया और वहां से तलचेरी काली मिर्च, श्रीलंकाई इलायची, इंडोनेशियाई जायफल, मेडागास्कर लौंग और नीला अदरक या गैलंगल से अपने क्षेत्र को अवगत कराया।

पिनांग जैसी जगहों पर, जो अब मलेशिया में है, चेट्टियारों ने चाइनीज पाक कला की मीठी–खट्टी तीखी पसंद को विकसित किया। साइगॉन (आज का हो ची मिन्ह सिटी) में उन्होंने वियतनामी भोजन को सुगंधित जड़ी बूटियों से भर कर अपने व्यंजनों को प्रसिद्ध किया। बौद्ध देश श्रीलंका में, उन्होंने निषेध आहार के सामने रूढ़िवादी आहारों को एक नया रूप देकर हिंदुओं और बौद्धों के सामने स्वादिष्ट व्यंजन प्रस्तुत किए। 'कवुनी अरसी' (चिपचिपा काला चावल का हलवा) जैसे पारंपरिक व्यंजनों में बर्मी और 'इडियप्पम' में श्रीलंकाई प्रभाव पाया जाता है।

चेट्टियार पारंपरिक रूप से शाकाहारी रहे हैं। पारम्परिक अनुष्ठानों के समय उनके भोज में शाकाहारी व्यंजन ही प्रमुख होते हैं। चेट्टियार भोजन को बहुत अधिक महत्व देते थे, इसलिए उनके भोजन की खासियत यह है कि उनके प्रत्येक व्यंजन के लिए पत्थर की सिल या हाथचक्की में पिसे हुए ताजे मसालों का ही उपयोग किया जाता है।

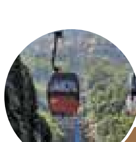
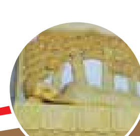

चेट्टीनाड के पारंपरिक व्यंजनों में ज्यादातर स्थानीय खट्टे मसाले जैसे कि स्टार ऐनीज, काली मिर्च, कलप्सी (केले का फूल) और मारट्टी मोगु (सूखे फूल की फली) इस्तेमाल किए जाते हैं। विदेशी सामग्री और संरक्षण तकनीक जैसे धूप में सुखाए गए मीट, जामुन, सब्जियां और नमकीन में अचार ने भी इस समुदाय के पाक प्रदर्शन को समृद्ध किया। कवुनी अरसी (चावल का हलवा) में स्पष्ट रूप से बर्मी प्रभाव दिखता है तो इडियाप्पम में श्रीलंकाई स्पर्श होता है।

चेट्टियार पारंपरिक रूप से शाकाहारी रहे हैं। इसीलिए व्यंजनों की शानदार विविधता के साथ, सुगंध से भरा चेट्टीनाड भोजन हर तरह से जीवंत है। तमिलनाडु के चेट्टियार समुदाय के पारंपरिक व्यंजनों किसी भी अन्य की तुलना में पाककला की एक परंपरा है। वास्तव में, बहुत मसालेदार भोजन के पर्यायवाची, चेट्टीनाड व्यंजन सुसंतुलित स्वादों का एक जटिल मिश्रण हैं। प्रत्येक व्यंजन अपने आप में पाककला की एक कृति होने के साथ, यह खाने के शौकीनों को एक यादगार पाक–कला का अनुभव प्रदान करता है।

चेट्टीनाड व्यंजन

चेट्टियारों की पाककला की परंपरा का एक दिलचस्प इतिहास है। समुद्र के निकट रहने के बाद, चेट्टियारों ने अपने कई स्व–नाम व्यंजन बनाने के लिए समुद्री भोजन का उपयोग किया, जैसे कि मीनकुजाम्बु (मछली करी), नंदू मसाला (केकड़ा), सुरा पुट्टु (शार्प फिन करी), और एराल मसाला (प्रॉन) आदि।

तमिलनाडु में चेट्टीनाड यानि ऐसा स्थान जहां चेट्टियारों ने अपनी सुन्दर हवेलियों, उनमें लगे बर्मी टीक, बेल्जियन ग्लास, खास प्रकार की पराम्परिक अथंगुडी टाइलें, झाड़ फानुसों से सजे कमरों और बड़े–बड़े घर के साथ, एक भव्य जिंदगी बिताई, ऐसी जिंदगी शायद राजाओं को मिल पाई होगी। आज, इनमें से अधिकांश हवेलियां खाली पड़ी हैं। लेकिन उस जीवन का अनुभव करने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। चेट्टीनाड के अधिकांश विशाल घरों को अब मैरिज हॉल में बदल दिया गया है। तमिलनाडु सरकार ने चेट्टीनाड को विरासत शहर के रूप में घोषित किया गया है। आजकल यहां कई घरों को पैतृक विरासती होटलों का रूप देकर संरक्षित किया गया है।

चेट्टियार भोजन को बहुत अधिक महत्व देते थे इसलिए कारैक्कुडि के घरों में रसोईघर को भी एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था।

रसोई के लिए स्थान

खाना पकाने के लिए बनाए गए चूल्हे

यहां, घर की महिलाएं या आच्छियां (खाना बनाने वाली नौकरानी) घर के लिए – पत्थर की कुंडी में हाथ से पिसे गए सुगंधित तेज मसाले, अरमनई (लोहे के दरांत) से काटी गई सब्जियों को, एक अलग स्वाद तैयार करने के लिए लकड़ी की आग पर अलग–अलग तरीके से (यानि धीमी, मध्यम या फिर तेज आंच पर) भोजन तैयार करती थीं।

चेट्टियार अपने समारोह, खासकर विवाह के के अवसर पर दिए जाने वाले भोज का भव्य रूप से आयोजन करते थे। ऐसे मौकों पर, दो तीन दिन पहले से ही समयालकर (रसोइयों की टीम) परिवार की बड़ी महिलाओं के निदेशन में कम से कम छह मुख्य अनाजों से व्यंजन, नौ प्रकार के सुगंधित शर्बत और छह प्रकार की मिठाइयां बनाने बैठ जाते थे। समय के साथ, इनमें से कई समयालकरों ने कारैक्कुडि के आसपास के क्षेत्रों में अपने भोजनालय स्थापित कर लिए थे।

यहां तक कि चेट्टियार रसोई में इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन भी खूबसूरती से बनाए जाते थे जो आज संग्रहणीय बन गए हैं। उनके डिजाइन, आकार और विरासती होने के कारण काफी महंगे होते हैं।

चेट्टीनाड शैली में केले के पत्तों पर पारंपरिक भोजन परोसते समय एक विशिष्ट शैली और नियम का पालन किया जाता है – प्रत्येक व्यंजन एक निर्दिष्ट स्थान पर क्रम से रखा जाता है ।

एक पारंपरिक भोजन आम तौर पर केले के पत्ते पर परोसा जाता है, जिसमें प्रत्येक व्यंजन का अपना निर्धारित स्थान होता है। सर्वप्रथम दिए गए व्यंजन को पत्ते के ऊपरी बाएं कोने पर रखा जाता है, उत्तरोत्तर क्रम में दाईं ओर बढ़ते हुए – नमक, अचार, मोरमिल्गै (दही में डूबी तली हुई सूखी लाल मिर्च), वरूवल (एक मसालेदार सूखा पकवान), कूटू (मसूर की दाल), उरुंदई (तली हुई दाल के गोले), पोरीयाल (रसेदार सब्जियों) और मसियाल (पीसी हुई सब्जी)। अप्पलम (पापड़), सब्जी का पकौड़ा और आलू फ्राइज को बायीं ओर रखा जाता है, जबकि चावल और चपाती, साम्बर, रसम को कुजाम्बु के साथ बीच में रखा जाता है। नीचे दाई ओर मीठा व्यंजन जैसे कि उक्काराई या पाल–पयासम होता है।

भोजन की गरमी को बेअसर करने के लिए

छाछ का एक पेय के साथ आमतौर पर भोजन समाप्त हो जाता है! एक विशिष्ट भोजन में अचार, मोर मिलगई, अप्पलाम, वरूवल, कूटू (दाल की सब्जी), पोरीयाल, उरुंदई, मसियाल, सांभर, रसम, कुसुम्बु, चावल और पूरी (आजकल चपाती) शामिल हैं। उक्करई या पाल पयासम जैसी मिठाइयां खाने के बाद में परोसी जाती हैं।

शाकाहारी व्यंजनः

इडियप्पम

नरम और रोएँदार, इडियप्पम भुने हुए चावल के आटे से बने हुए धागे में गूँथे स्ट्रिंग हैं। इसे मीठे नारियल के दूध, गुड़ की चाशनी या मसालेदार स्टू के साथ परोसा जाता है।

कोझुकट्टई

कोझुकट्टई असल में चावल को उबालने के बाद पीस कर बनाए घोल की पकौड़ी है। इसे मीठा या नमकीन किसी भी रूप में बनाया जा सकता है। बस इसे बनाते समय बहुत प्यार यानि अति सावधानी की जरूरत है। पहले उबाले गए चावलों को पीस कर उसके गाढ़े घोल को एक

सांचे में भर कर, उसमें सामग्री (मीठा बनाने के लिए भुना हुआ खोया, मेवे और गुड) अथवा (नमकीन बनाने के लिए उबले मटर तथा आलू के साथ जीरा, दालचीनी, लौंग तथा हरा धनिया और काली मिर्च के साथ भूनकर बनाए मसाले) को भर कर इडली की तरह भांप से बनाया जाता है। आम तौर पर नमकीन के साथ चटनी और रसम दिया जाता है, जिसे लोग चटकारे लेकर खते हैं। जबकि मीठे कोझुकट्टई को सीधे ही प्लेट में रखा जाता है। यह मिठाई, चेट्टीनाड क्षेत्र में सभी शुभ अवसरों पर बनाई और बहुत पसंद की जाती है।

कुजी पनियारम

खस्ता और कुरकुरे कुजी पनियारम चेट्टीनाड व्यंजनों में एक बहुत लोकप्रिय व्यंजन है। यह असल में चावल के लसदार मिश्रण/घोल में पनीर मिलाकर पनियारक्कल नामक एक विशेष सांचे में बनाया जाता है। यह व्यंजन भी मीठा और नमकीन दोनों ही तरह से बनाया जाता है। मीठे पनियारम को ऊपर से कटे हुए ड्राई फ्रूट्स से सजाया जाता है। जबकि नमकीन पनियारम

को साम्बर, रसम और नारियल की चटनी के साथ परोसा जाता है।

परुप्पु उरुंडई कुझाम्बू

परुप्पु उरुंडई कुझाम्बू, सीधे शब्दों में, यह एक साबुत इमली की चटनी में दाल के गोले हैं। इस बहुमुखी डिश में मीठे, खट्टे और तीखे स्वादों का ऐसा जटिल मिश्रण होता है कि खाते समय बार बार सिर सहलाना पड़ता है ।

वजैप्पु मीन कुजाम्बू

इसके नाम से लगता है कि यह एक मछली का व्यंजन होगा? लेकिन ऐसा नहीं है। इस

मछली करी में जरा भी मछली नहीं है। बिना मछली करी की यह सब्जी अत्यधिक पौष्टिक होती है। वजैप्पु मीन कुजाम्बू केले के फूल को तलने के बाद तेज मसालेदार ग्रेवी में भिगोने से बनाया जाता है। केले का फूल या वजैप्पु की कलियां तलने के बाद छोटी–छोटी मछलियों जैसे दिखते हैं, इसलिए इसे यह नाम दिया गया है!

गोभी गाजर पोरियल

हल्की मसालेदार, चटपटी और उबली हुई गोभी गाजर पोरियाल चेट्टीनाड की एक पारंपरिक सूखी सब्जी है। टमाटर रसम और उबले हुए चावल के साथ परोसे जाने पर यह सरल व्यंजन अच्छा और स्वादिष्ट लगता है।

एन्नाई कथ्रिकई

एन्नाई कथ्रिकई अधिकांश तमिल लोगों का एक प्रिय व्यंजन है। असल में यह भुने हुए तेज मसालों के मिश्रण में बना भरवां बैंगन है जिसे तीखी चटपटी करी में रखा जाता है और चावल या अप्पम के साथ परोसा जाता है।

चेट्टीनाड विभिन्न प्रकार के शाकाहारी और मांसाहारी व्यंजन प्रस्तुत करता है। लोकप्रिय शाकाहारी व्यंजनों में 'इडियप्पम', पनियरम, वेल्लाई पनियारम, करूपट्टी पनियरम, पालपनियरम, कुजी पनियरम, कोझुकुट्टई, मसाला 'डोसा', 'इडली', 'अप्पम' पनियरम, आदिकुझा,कंधारप्पम, सीयम, मसाला सीयम, कावुनी, अरिसी, मावुरुंदई, 'वजैप्पू मीन कोजाम्बु' (केले के फूल की ग्रेवी), 'एन्नाई कथ्रिकई' (तली हुई बैंगन ग्रेवी) और आदिरसम शामिल हैं। मांसाहारी व्यंजनों में चेट्टीनाड चिकन करी, 'मिलगु कोजी वरूवल','कराइकुडी एराल मसाला', मटन चुक्का, 'मीने कुजुम्बु' आदि प्रमुख हैं।

चेट्टीनाड भोजन में, इस्तेमाल किए जाने वाले प्रमुख मसालों अनासिपू (स्टार एनीसेड), कल्पवासी (एक लाइकेन), पुली (इमली), मिलगी (मिर्च), सोम्बू (सौंफ बीज), पट्टई (दालचीनी), लवंगम् (लौंग), तेज पत्ता, कारू मिलगु (काली मिर्च का दाना), जीरागम (जीरा बीज), और वेंथयम (मेथी) शामिल हैं।

मीठे व्यंजन:

कंदरप्पम

चेट्टीनाड व्यंजनों में सबसे महत्वपूर्ण व्यंजनों में से एक, कंदरप्पम सभी त्योहारों के अवसर पर बनाया जाने वाली एक पारंपरिक मिठाई है। चावल के साथ चार प्रकार की दालों को रात भर पानी में रखा जाता है और सवेरे इसे पीसकर पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट में गुड़ तथा बारीक कटे मेवे डाल कर, इसे गोलाकार रूप में, किनारे खस्ता और मध्य भाग चिकना तथा मुलायम रखते हुए, गोल्डन ब्राउन तला जाता है और कुछ देर गुड़ की चाश्नी में रखा जाता है।

पाल पायसम

मुख्यतः दूध, पिस्ता, बादाम, केसर, चावल, और इलायची के साथ बनाई जाने वाली पाल पायसम एक ऐसा क्लासिक पकवान है, जो सीधे ही दांतों के साथ चिपकता है और सभी को पसंद आता है। उत्तर भारत के लोग इसे खीर भी कह सकते हैं, लेकिन यह खीर से अधिक गाढ़ा और अधिक मीठा होता है। इस पकवान को समृद्ध और मलाईदार स्वाद देने के लिए ऊपर से मेवों की कलियों की लिंचिंग की जाती है। चेट्टीनाड में इसे विरासती पकवान माना जाता है।

मांसाहारी व्यंजन:

चेट्टीनाड चिकन

चिकन चेट्टीनाड इस क्षेत्र का एक बहुत ही लोकप्रिय व्यंजन है। चेट्टीनाड व्यंजनों में इसे एक क्षेत्रीय पाक रत्न माना जाता है। नारियल के पानी के मिश्रण में उबाले गए नरम चिकन को लहसुन,प्याज, अदरक आदि के साथ भून कर, तेज मसालों से बनाया जाता है।

मिलगु कोजी वरुवल

मिलगु कोजी वरुवल या काली मिर्च चिकन फ्राई एक क्लासिक डिश है जो किसी भी खानेवाले को नचा सकती है। चेट्टीनाड व्यंजनों में सबसे सुगंधित व्यंजनों में से एक, इस व्यंजन में तेज मिर्च, लहसुन और अदरक जैसे ताजे जमीनी मसालों का भरपूर मात्रा में उपयोग किया जाता है।

कारैक्कुडि एरल मसाला

कराईकुडी एरल मसाला में, एक मसालेदार गाढ़ी रसदार करी में बनाए गए झींगे की प्लेट में ऊपर से सरसों के बीज, तीखी मिर्च तथा बारीक कटा करी पत्ता छिड़का जाता है। फिर उसके साथ प्याज, नींबू की एक फाड़ और पालक,हरा धनिया तथा पोदिना को पीसकर तड़का लगाई गई चटनी के साथ परोसा जाता है।

कडा फ्राई

असल में यह बटेर का मसालेदार मांस है। कारैक्कुडि के स्थानीय भोजनालयों के मेनू में आम तौर पर मिल जाता है। इसे इस प्रकार तला जाता है कि बाहर की तरफ खस्ता और अंदर मुलायम होता है। इसके साथ प्याज, टमाटर हरा धनिया आदि से सजा कर पोदीने और पालक की तली हुई स्वादिष्ट चटनी के साथ परोसा जाता है।

मटन चुक्का

एक बार देखने पर तो शायद लगेगा कि यह गुजराती डोडा मिठाई या राजस्थान के घरों में बनने वाला मीठा चूरमा है। लेकिन ऐसा नहीं है, चेट्टीनाड मटन चुक्का वास्तव में भेड़ के मांस से बना तेज मसालेदार एक सूखा व्यंजन है। इसके लिए मांस को पीस कर इलायची, दालचीनी, लौंग, मिर्च और करी पत्ते के मसाले के घोल में मिलाकर धीमी धीमी आंच पर भून कर खूबसूरती से तैयार किया जाता है और परोसने से पहले इसके ऊपर से गर्म देसी घी डाला जाता है। मसालों की तेज

सुगंध और तीखापन एक बार तो पूरे शरीर में सिहरन पैदा कर देती है। आजकल यह मटन से भी बनाया जाता है । यह अविश्वसनीय रूप से स्वादिष्ट पकवान जैसे शरीर की सारी इंद्रियों का इलाज कर देता है।

मीन कुजाम्बू

जैसे कि इसके नाम से ही ज्ञात हो जाता है मीन कुजाम्बू चेट्टीनाड शैली में बनी एक पारंपरिक मछली करी है जो तालू पर लगते ही एक सिहरन सी उत्पन्न कर देती है। इसमें मछली को खाल और परों के साथ ही बनाया जाता है यानि मछली को अन्दर से साफ कर, 'खाल' और 'पर' के साथ मक्खन लगा लगा कर हल्की आंच पर भूना जाता है और लाल होने पर इसे तेज मसालेदार और खट्टी करी में डाल कर काफी देर रखने के बाद परोसा जाता है। इससे एक–एक टुकड़ा स्वादिष्ट हो जाता है।

कैसे पहुंचे :

सड़क मार्ग: तमिलनाडु रोडवेज की बसें ही कारैक्कुडि के लिए परिवहन का प्रमुख साधन है।

वायु मार्ग: कारैक्कुडि आने के लिए निकटतम हवाई अड्डा तिरुचिरापल्ली लगभग 95 कि. मी. है और मदुरै अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा सौ कि.मी. दूर है। इन हवाई हड्डों पर कारैक्कुडि आने हेतु निजी टैक्सियां आसानी से उपलब्ध रहती हैं।

शहर का अपना रेलवे स्टेशन है जो प्रमुख दक्षिण भारतीय शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

कहां ठहरें:

कारैक्कुडि में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। महंगे होटल्स के के अलावा बजट होटल्स, अच्छे गैस्ट हाउस के अलावा अपार्टमैंट उपलब्ध हैं। इसके अलावा यदि आप चाहें तो यहां के हैरिटेज घरों में भी रह सकते हैं।

चेट्टीनाड के लिए पारंपरिक चेट्टीनाड व्यंजनों के चमत्कारों का स्वाद लेना हो तो सबसे अच्छा एक ही तरीका है। कराइकुडी की यात्रा!

***

रूसी कहानी

एक सूर्यास्त का ब्यौरा

प्रस्तुति : सुशांत सुप्रिय
मूल लेखक : व्लैदिमिर नैबोकोव

सड़क के अँधेरे आईने में अंतिम ट्राम गायब हो रही थी। ऊपर बिजली के तारों का जाल था जिसमें से कभी–कभी तिड़कने की आवाज के साथ चिंगारियां निकलती थीं। दूर से वे किसी नीले सितारे जैसी लगती थीं।

"पैदल चलना ही ठीक होगा, हालाँकि तुम पिए हुए हो, मार्क। नशे में धुत्त हो..।'' मार्क ने मन में कहा।

चिंगारियां बुझ गई थीं। मकानों की छतें चांदनी में चमक रही थीं। उनके चाँदी जैसे तीखे किनारे तिरछी काली दरारों में गुंथे हुए थे।

इस अंधकारमय सड़क पर वह लड़खड़ाता हुआ घर की ओर चला जा रहा था। मार्क स्टैंडफस्स एक दुकान में सेल्समैन का काम करता था श्वेत बालों वाला मार्क किसी अर्ध–देवता जैसा लगता था। वह किस्मत वाला व्यक्ति था जिसकी कमीज के कॉलर पर कलफ लगा होता था। उसकी गर्दन के पीछे कॉलर की सफेद रेखा के ऊपर उसके बालों का अंत एक हास्यजनक लटकन के रूप में होता था जो नाई की कैंची से बची हुई थी। बालों की इसी चोटी की वजह से क्लारा उससे प्यार करने लगी थी और उसने कसम खाई थी कि मार्क के प्रति उसका प्यार सच्चा था। उसने यह भी कहा था कि वह उस बरबाद रूपवान विदेशी नवयुवक को अब भूल चुकी थी जो पिछले साल उसकी माँ से एक कमरा किराए पर लेकर रहने आया था।

"और फिर भी तुम नशे में धुत्त हो, मार्क ...।''

उस शाम मार्क और भूरे–लाल बालों तथा पीले चेहरे वाली क्लारा के सम्मान में मित्रों ने एक पार्टी का आयोजन किया था जहां बीयर के साथ संगीत का बंदोबस्त भी किया गया था। एक हफ्ते बाद उनकी शादी होनी तय हो गई थी। इसके बाद जीवन भर का परमानंद और शांति होगी। फिर वे दोनों अपनी रातें भी एक साथ बिताया करेंगे जब क्लारा के भूरे–लाल बालों की चमक पूरे तकिये पर फैली होगी और सुबह उसकी खनकती हँसी, उसके हरे परिधान और उसकी अनावृत ठंडी बांहों का साथ होगा।

मार्क सोचता हुआ घर जा रहा था। चौक के बीचोबीच एक अस्थाई, चौकोर झोंपड़ी–सी बनी हुई थी। ट्राम की पटरियों की मरम्मत का काम चल रहा था। उसे याद आया कि आज कैसे उसने क्लारा की पोशाक की छोटी आस्तीन में अपना मुँह घुसा कर उसकी बाजू पर बने हृदय को छू लेने वाले चेचक के टीके के निशान को चूम लिया था। बहुत ज्यादा खुशी और ज्यादा पी

*सम्प्रतिः लोकसभा में अधिकारी

लेने की वजह से उसकी चाल अस्थिर थी। वह अपने हाथ में पकड़ी हुई पतली छड़ी को घुमाता हुआ चला जा रहा था। खाली सड़क के दूसरी ओर स्थित अंधेरे मकानों से टकरा कर उसके कदमों की आवाज रात में गूंज रही थी। पर सड़क के नुक्कड़ पर पहुंचने पर उसके कदमों की प्रतिध्वनि आनी बंद हो गई। वहां, हमेशा की तरह टोपी और चमड़े की पेटबंद पहने वही आदमी सुअर के मांस से बना सामिष आहार बेच रहा था। वह मांस भूनने की अपनी ग्रिल के बगल में खड़ा हो कर किसी उदास चिड़िया की कोमल आवाज में ग्राहकों को अपने पास बुला रहा था।

मार्क ने उस सामिष आहार और चाँद और तारों के जाल में कभी–कभी जल कर बुझ जाती नीली चिंगारियों के लिए एक सुखद करुणा महसूस की। अपनी तनी देह को बाड़ का सहारा देते हुए उसे हंसी आ गई और झुकते हुए जोर की सांस लेकर कहा, "क्लारा, क्लारा, ओ मेरी प्रिये!"

बाड़ के दूसरी ओर मकानों के बीच की खाली जगह में एक आयताकार भूखंड था। कई बंद–गाड़ियां वहां विशाल ताबूतों की तरह खड़ी थीं। उनमें इतना सामान भरा हुआ था कि वे फूली हुई लग रही थीं। ईश्वर ही जानता था कि उनमें क्या–क्या भरा हुआ था। सम्भवतः बलूत की लकड़ी से बने संदूक, लोहे की मकड़ियों जैसे दीपाधार और बड़े भारी पलंग। चाँद उन बंद–गाड़ियों पर जैसे अपनी निष्ठुर कोप–दृष्टि डाल रहा था। भूखंड के बाईं ओर एक खाली पिछली दीवार पर हृदय के आकार की विशाल काली परछाइयाँ नजर आ रही थीं। दरअसल वे आवर्धक परछाइयां पटरी के किनारे लगे बिजली के खंभों के पास उगे एक पेड़ की पत्तियों की अतिरंजित छाया थी।

जब मार्क अपने फ्लैट के मंजिल की अंधेरी सीढ़ियां चढ़ा, तब भी मुँह बंद करके हँस रहा था। वह सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर पहुँचा पर गलती से उसने अपना पाव फिर ऊपर उठा दिया जिससे उसका पाँव भद्दे ढंग से धड़ाम से नीचे आया। जब वह अंधेरे में दरवाजे में चाबी डालने वाले छेद को टटोल रहा था, उसकी छड़ी उसकी बगल में से फिसलकर एक आवाज के साथ सीढ़ियों पर से नीचे सरक गई। वह सांस रोककर खड़ा हो गया। उसे लगा कि नीचे फिसलती हुई छड़ी घुमावदार सीढ़ियों के साथ घूम कर सबसे निचली सीढ़ी तक पहुँच जाएगी। लेकिन लकड़ी के सीढ़ियों से टकराने की तेज आवाज बीच में ही बंद हो गई। छड़ी जरूर कहीं अटक कर रुक गई होगी। राहत महसूस करते हुए वह मुस्कुराया और जंगले को पकड़ कर वह सीढ़ियों से धीरे–धीरे नीचे उतरने लगा। उसके खोखले सिर में पिए हुए बीयर का संगीत बज रहा था। सीढ़ियां उतरते हुए वह गिरने ही लगा था और वह किसी तरह एक सीढ़ी पर बैठ गया जबकि उसके हाथ अंधेरे में कुछ टटोलते रहे।

ऊपर वाली मंजिल के फ्लैट का दरवाजा खुला। आधे कपड़े पहने, मिट्टी के तेल का चिराग अपने हाथ में पकड़े, पलकें झपकाती हुई फ्राऊ स्टैंडफस्स बाहर आई। उस रोशनी में उसके बाल धुँधले लग रहे थे। उसने आवाज लगाई , "क्या वह तुम हो, मार्क? "

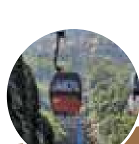

एक पीली फनाकार रोशनी जंगले, सीढ़ियों और उसकी छड़ी पर पड़ रही थी। हांफता हुआ किंतु प्रसन्न मार्क दोबारा सीढ़ियां चढ़ कर ऊपरी मंजिल पर पहुँच गया।

तब कम रोशनी वाले उस कमरे में, जिसे एक लाल परदे ने दो हिस्सों में बांट रखा था, उन दोनों में यह बातचीत हुई :

"मार्क, तुम नशे में धुत्त लग रहे हो।''

"नहीं, नहीं, माँ ... मैं बेहद खुश हूँ ...।''

"तुम्हारे कपड़े गंदे हो गए हैं, तुम्हारे हाथ पर कालिख लगी है ...।''

"मैं बेहद खुश हूँ ..अहा, बड़ा सुखद लग रहा है ...अच्छा...थोड़ा ठंडा पानी है क्या ...मेरे सिर पर डालो ... सबने मुझे बधाई दी... मेरे सिर पर थोड़ा पानी और डालो।''

"लेकिन वे कहते हैं कि कुछ समय पहले वह किसी और से प्यार करती थी। साहसिक कार्य करने वाले किसी विदेशी से। वह फ्राऊ हेइसे को बकाया किराया दिए बिना ही वहां से चला गया था ...।''

"बस, बस ! तुम कुछ नहीं समझती हो ... आज पार्टी में सबने कितने गीत गाए ... देखो, मेरा एक बटन टूट गया है ... मुझे लगता है, जब मेरी शादी हो जाएगी तो वे मेरा वेतन दुगुना कर देंगे।''

"जाओ, बिस्तर पर सो जाओ... तुम सिर से पांव तक गंदे लग रहे हो, और तुम्हारी नई पतलून भी गंदी हो गई है।''

उस रात मार्क को एक बुरा सपना आया। उसने दुःस्वप्न में अपने स्वर्गीय पिता को देखा। उसके पिता उसके पास आए। उनके पसीने से भरे पीले चेहरे पर एक अजीब मुस्कान थी। उन्होंने मार्क को बांहों के नीचे से पकड़ लिया और चुपचाप उसे गुदगुदी करने लगे। बिना रुके, लगातार और हिंसात्मक ढंग से।

उसे वह सपना तब याद आया जब वह सामान बेचने वाली उस दुकान पर पहुँचा जहां वह काम करता था। एक पल के लिए उसकी आत्मा में जैसे कोई झरोखा खुल गया जो पल भर के लिए हैरानी के साथ स्थिर हो कर जम गया और फिर जैसे वह झरोखा फटाक्क–से बंद हो गया। फिर सब कुछ दोबारा सहज और निर्मल हो गया और वे टाइयाँ, जिन्हें वह अपने ग्राहकों को बेचता था, उसकी प्रसन्नता से हमदर्दी रखते हुए मुस्कुराने लगीं। वह सोचने लगा कि शाम को वह क्लारा से मिलेगा। वह रात का खाना खाने के लिए सीधे उसके घर चला जाएगा.. उस दिन जब वह क्लारा को बता रहा था कि शादी के बाद वे दोनों कितने आराम से और प्रेम से रहेंगे, तो वह फूट–फूट कर रोने लगी थी। मार्क समझ गया था कि यह तो प्रसन्नता के आँसू थे (जैसा कि क्लारा ने स्वयं बताया) वह कमरे में तेजी से घूमने लगी थी। और उसकी पोशाक किसी हरे पाल की तरह लग रही थी। फिर वह आईने के सामने तेजी से अपने खूबानी के मुरब्बे के रंग जैसे चमकदार बालों को सीधा करने लगी। उसका चेहरा पीला और बदहवास–सा था। जाहिर है, वह भी प्रसन्नता की वजह से होगा। आखिर यह सब कितना सहज–स्वाभाविक था ...।

उसने अपने हाथ पर ही टाई की गाँठ बनाई और उसे इधर–उधर हिला–डुला कर देखा। यह उसका ग्राहक को लुभाने का तरीका था। उसने सावधानी से गत्ते के चौरस डब्बों को खोला...।

इस बीच उसकी माँ से मिलने कोई अतिथि आया। वह फराऊ हेइसे थी। वह बिना किसी पूर्व–सूचना के आई थी और उसकी आंखों में आँसू थे। बहुत सावधानी से वह एक तिपाई पर बैठ गई जैसे वह टूट कर टुकड़े–टुकड़े होने से डर रही हो। फराऊ स्टैंडफस्स साफ–सुथरी रसोई में बर्तन धो रही थी।

"मैं आपके पास एक बुरी खबर ले कर आई हूँ, फराऊ।'' यह सुनकर दूसरी महिला अपनी जगह पर जड़–सी हो गई।

"यह खबर क्लारा के बारे में है। वह पागल हो गई है। असल में मेरा पिछला किराएदार आज वापस आ गया– आप जानती हैं न, वही जिसके बारे में मैंने आपको बताया था और हां, क्लारा अपने होशो–हवास खो बैठी है। यह सब आज सुबह ही हुआ ...वह अब आपके बेटे की शक्ल भी नहीं देखना चाहती ..आपने उसे नई पोशाक सिलवाने के लिए जो कपड़ा दिया था, वह कपड़ा आपको लौटा दिया जाएगा और हां, यह पत्र मार्क के नाम है। मुझे समझ नहीं आ रहा, यह क्या हो रहा है...क्लारा पागल हो गई है।''

मार्क दुकान का काम निपटा चुका था और अब अपने घर की ओर निकलने वाला था। उसका मित्र ऐडोल्फ उसे घर तक छोड़ने उसके साथ आने वाला था । वे दोनों रुके , उन्होंने एक–दूसरे से हाथ मिलाया और मार्क ने अपने कंधे से दुकान के दरवाजे को धकेला जो एक ठंडे खालीपन की ओर खुल गया ।

"घर क्यों जाएं? छोड़ो उसे। चलो तुम और मैं कहीं चल कर कुछ खाते–पीते हैं'' ऐडोल्फ अपनी छड़ी के सहारे टिक कर ऐसे खड़ा था जैसे वह कई पूंछ हो। " चलो, मार्क ...।''

मार्क ने अपने गालों को धीरे से रगड़ा और फिर हँसते हुए बोला, "ठीक है, मगर बिल के पैसे मैं अदा करूँगा।''

आधे घंटे बाद जब वह शराबखाने से निकला और उसने अपने मित्र को विदा किया तो नहर का पूरा दृश्य आग्नेय सूर्यास्त की लाली से भरा हुआ था। दूर दिख रहे बारिश से भीगे हुए पुल का किनारा सुनहरा लग रहा था जिस पर से छोटी–छोटी काली आकृतियां गुजर रही थीं।

उसने अपनी घड़ी पर निगाह डाली और सीधे ही अपनी प्रेमिका के घर जाने का फैसला किया। उसकी प्रसन्नता और शाम की निर्मल स्वच्छता की वजह से उसका माथा थोड़ा चकरा रहा था। किसी कार से बाहर कूद रहे किसी बाँके युवक के रोगन किए जूते से ताँबे का एक चमकीला तीर टकराया। गड्ढे अब तक नहीं सूखे थे। वे चारों ओर से गीले अंधेरे से घिरे हुए (डामर की सजीव आंखों जैसे) लग रहे थे। शाम की मुलायम उद्दीप्ति उनमें प्रतिबिंबित हो रही थी। सारे मकान हमेशा की तरह धूसर लग रहे थे। लेकिन उनकी छतें, ऊपरी मंजिलों के ऊपरी सांचे, कलई लगे बिजली के खंभे, पत्थर के गुम्बद और लघु–स्तंभ

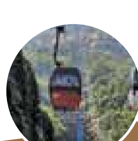

ये सब अभी चटख गेरुआ रंग में रंगे हुए थे। दिन में तो किसी को भी इनके होने का अहसास नहीं होता क्योंकि अधिकांश लोग ऊपर देखते ही नहीं। सूर्यास्त की ऊष्मा में ये सब अप्रत्याशित और जादुई लग रहे थे उनके बाहर निकले हिस्से, छज्जे, कंगनियां और छजलियां तथा खंभे अपने चमकदार गहरे पीले रंग की वजह से एक–दूसरे से अलग दिख रहे थे, जबकि हल्के भूरे अग्र–भाग उनके नीचे मौजूद थे।

अहा! मैं कितना खुश हूं – मार्क सोचता रहा। मेरे चारों ओर मौजूद हर चीज जैसे मेरी खुशी का जश्न मना रही है।

ट्राम में बैठते हुए उसने एक प्यार भरी, कोमल निगाह अपने सहयात्रियों पर डाली। मार्क के चेहरे पर यौवन की लाली थी। उसकी ठोड़ी पर गुलाबी मुंहासे थे और उसकी चमकती आंखें प्रसन्नता से भरी थीं। उसकी गर्दन के पीछे गुद्दी के पास बिन कटे बालों की एक लटकन मौजूद थी ... किस्मत ने शायद उसे बचाए रखा था।

वह विचारों में मग्न था कि कुछ ही पलों बाद मैं क्लारा को देखूंगा। वह मुझे दरवाजे पर मिलेगी और कहेगी कि वह बड़ी मुश्किल से शाम तक उसकी प्रतीक्षा कर पाई ।

अचानक वह चौंक गया। जिस जगह उसे उतरना था, ट्राम वहां से आगे निकल चुकी थी। ट्राम के दरवाजे तक पहुंचने की जल्दी में वह चिकित्सकीय पत्रिका पढ़ रहे एक मोटे आदमी से टकरा कर गिरते–गिरते बचा। मार्क अपनी टोपी को तिरछा झुकाना चाहता था, पर इस चक्कर में वह लगभग गिर ही गया: ट्राम पहियों के घर्षण की आवाज के साथ मुड़ रही थी। अपना संतुलन बनाए रखने के लिए ऐन मौके पर उसने ऊपर लटके एक पट्टे को पकड़ लिया। उस मोटे आदमी ने गुस्से से बड़बड़ाते हुए धीरे–धीरे से अपना पैर पीछे खींच लिया। उसकी मटमैले रंग की मूँछें किसी सैनिक की तरह ऊपर की ओर उठी हुई थीं। मार्क ने उसे अपनी गलती स्वीकार कर लेने वाली मुस्कान दी और ट्राम के अगले हिस्से के दरवाजे पर पहुंच गया। उसने पकड़ कर उतरने वाली लोहे की छड़ों को दोनों हाथों से पकड़ लिया। फिर वह आगे की ओर झुका और चलती ट्राम से बाहर छलांग लगाने के लिए गति का सही अनुमान लगाने लगा। नीचे चिकना और झिलमिलाता डामर बिछा हुआ था। मार्क ने छलांग लगा दी। उसे अपने पैरों के तलवों में घर्षण की जलन महसूस हुई और उसके पैर जमीन पर पड़ते ही अपने–आप दौड़ने लगे – वहां उसके पैरों के पटके जाने की अनैच्छिक गूंज आने लगी। तभी कई अजीब–सी चीजें एक साथ हो गईं, मार्क से दूर जाती हुई ट्राम के अगले हिस्से से कंडक्टर की बहुत तेज चीख सुनाई दी, चमकदार डामर किसी झूले की सीट की तरह तेजी से ऊपर की ओर उठा, किसी गरजते हुए आकार ने मार्क को पीछे से जोरदार टक्कर मारी। उसे लगा जैसे सिर से पैर तक उसकी पूरी देह पर बिजली गिर गई हो और उसके बाद जैसे कुछ नहीं हुआ। वह चमकदार, चिकने डामर पर अकेला खड़ा था। उसने अपने चारों ओर देखा। अपने पीछे उसे अपनी ही परछाई दिखाई दी।

इकहरी पीठ वाला मार्क स्टैंडफस्स सड़क पर तिरछा चला जा रहा था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। हैरान हो कर वह तेजी से चला और एक ही पल में, जब वह फुटपाथ के पास पहुंच रहा था तो उसकी पूरी देह लगातार कम होती थरथराहट से भर गई। वह तो बेवकूफाना बात थी। वह ट्राम से लगभग कुचल ही दिया गया था।

सड़क चौड़ी और खुशनुमा थी। सूर्यास्त के रंग ने आधे आकाश पर कब्जा कर लिया था। मकानों की ऊपरी मंजिलें और छतें धूप की शानदार रोशनी में नहा रही थीं। वहां ऊपर मार्क पारभासी मंडपों, चित्रवल्लरियों और भित्तिचित्रों, नारंगी गुलाबों वाली जालियों, सुनहरे आकाश की ओर उन्मुख पंख लगी मूर्तियों और प्रदीप्त वीणाओं को देख सकता था। जैसे चमकीली लहरों में ये पारलौकिक, आनन्दमय वास्तुशिल्पीय सम्मोहन किसी सुखद दूरी में पीछे लौट रहे थे। मार्क यह नहीं समझ सका कि उसने पहले कभी इन ऊंची लटकी दीर्घाओं को ध्यान से क्यों नहीं देखा था।

उसकी छाती और घुटना किसी चीज से टकराया और दर्द फिर जोर से उभर आया। फिर से वही काली बाड़। उधर दूर खड़ी बंद–गाड़ियों को पहचान लेने पर वह अपनी हँसी नहीं रोक सका।

अरे, मुझे वहां जा कर देखना चाहिए, वर्ना यदि क्लारा मुझसे पूछेगी तो मैं क्या बताउंगा। उसने एक बंद–गाड़ी के दरवाजे को जल्दी से हल्का धक्का दिया और उसके भीतर चला गया। भीतर से वह लगभग खाली था। वहां बीच में केवल पुआल से बनी एक कुर्सी पड़ी थी जो हास्यास्पद ढंग से तीन टांगों पर टेढ़ी टिकी हुई थी।

मार्क ने अपने कंधे उचकाए और वह दूसरी ओर से वहां से बाहर निकल गया। एक बार फिर गर्मियों की शाम की चकाचौंध उसकी आंखों में भर गई। और अब उसकी आंखों के सामने लोहे का परिचित छोटा फाटक था और उसके आगे एक पेड़ की हरी डाल से घिरी क्लारा के कमरे की खिड़की थी। क्लारा ने खुद ही फाटक खोला जैसे कि वह उसकी ही प्रतीक्षा में वहीं खड़ी हो, वह अपनी अनावृत कोहनियां उठाए अपने बालों को संवारती रही। उसकी बगलों में मौजूद बालों के गेरुआ गुच्छे उसकी छोटी आस्तीनों की धुपहली खुली जगह में से दिखाई दे रहे थे।

बिना आवाज किए हँसते हुए मार्क उसे गले से लगा लेने के लिए दौड़ कर आगे बढ़ा। उसने अपने गाल क्लारा के गरम हरे रेशमी वस्त्र से दबाए।

क्लारा का हाथ उसके सिर पर आ कर रुक गया। वह सोचने लगा, "मैं आज सारा दिन कितनी अकेली थी, मार्क। शुक्र है, अब तुम यहां मेरे पास हो।''

उसने मकान का दरवाजा खोला और मार्क ने तुरंत अपने–आप को भोजन–कक्ष में पाया। वह कमरा उसे अत्यधिक बड़ा और रोशन लगा।

"जब लोग खुश होते हैं, जैसे कि हम अभी हैं'' "क्लारा बोली , "तो उन्हें गलियारे की जरूरत नहीं होती।" क्लारा भावपूर्ण फुसफुसाहट में बात कर

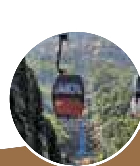
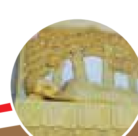

रही थी और मार्क को लगा जैसे उसके शब्दों का कोई खास और असाधारण अर्थ था। भोजन–कक्ष में बर्फ जैसी सफेद, अंडाकार मेजपोश के इर्द–गिर्द बहुत सारे ऐसे लोग बैठे हुए थे जिन्हें मार्क नहीं जानता था और जिन्हें उसने अपनी प्रेमिका के घर में पहले कभी नहीं देखा था। उनमें चौड़े सिर वाला सांवला ऐडोल्फ भी था। वहां छोटे पैरों और बड़ी तोंद वाला वह बूढ़ा आदमी भी था जो ट्राम में बैठा एक चिकित्सकीय पत्रिका पढ़ रहा था और वह अब भी बड़बड़ा रहा था।

मार्क ने शर्माते हुए, सिर हिला कर वहां मौजूद सभी लोगों का अभिवादन किया और क्लारा की बगल में बैठ गया। मगर उसे उसी समय लगा जैसे भयानक दर्द की एक असहनीय लहर उसकी पूरी देह से गुजर गई हो जैसा कि उसे कुछ पल पहले भी लगा था। वह दर्द से तड़पने लगा और क्लारा का हरा परिधान तैरता हुआ दूर चला गया और अंत में छोटा होकर एक हरी बत्ती में बदल गया। डोरी से लटकी वह हरी बत्ती एक ओर से दूसरी ओर हिल रही थी और मार्क उस हरी बत्ती के नीचे पड़ा था। अकल्पनीय दर्द उसकी देह को रौंद रहा था और उस झूलती हरी बत्ती के अलावा कुछ भी पहचान में नहीं आ रहा था। उसकी पसलियां उसके सीने में चुभ रही थीं जिसकी वजह से उसके लिए सांस लेना मुश्किल सा होता जा रहा था। कोई उसके पैरों को मोड़ रहा था, खींच रहा था और उसे लगा जैसे एक पल में उसका पैर ही टूट जाएगा। किसी तरह उसने स्वयं को मुक्त किया और वह हरी बत्ती दोबारा चमकती हुई दिखी। मार्क ने खुद को कुछ दूरी पर क्लारा के साथ बैठे हुए देखा और उसे लगा जैसे उसके पैर क्लारा के गरम रेशमी लहंगे को छू रहे हों। अपना सिर पीछे किए क्लारा हंसती जा रही थी।

अभी–अभी क्या हुआ था, उसे सबको यह बताने की ललक महसूस हुई। और मिलनसार ऐडोल्फ और चिड़चिड़े मोटे आदमी समेत वहां मौजूद सभी लोगों को एक प्रयास के साथ सम्बोधित करते

हुए उसने कहा – " विदेशी नदी के किनारे यह प्रार्थना कर रहा है'' उसे लगा कि उसने सब कुछ स्पष्ट कर दिया था और जाहिर है, वे सब यह समझ गए थे ... क्लारा ने अपने होठ गोल करते हुए उसके गाल पर चिकोटी काटी और कहा,"ओ मेरे बेचारे प्रेमी, सब ठीक हो जाएगा ..''

अब वह थकान महसूस कर रहा था और उसे नींद आ रही थी। उसने क्लारा की गर्दन के गिर्द अपना हाथ रखा, उसे अपनी ओर खींचा और पीछे हो कर लेट गया, तभी भयानक दर्द ने उस पर फिर झपट्टा मारा और सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट हो गया और उसके ऊपर लटकी हरी बत्ती अब आगे–पीछे नहीं झूल रही थी। मूंछों वाला वह परिचित मोटा आदमी, जो कि सफेद लबादे में एक डॉक्टर था, मार्क को गौर से देखते हुए चिंतित स्वर में कुछ बड़बड़ाया, "हे ईश्वर! अब किसी भी पल एक पसली उसके हृदय को चीर कर फाड़ देगी.. यह बेवकूफाना बात है... क्लारा यहां क्यों नहीं है? अप्रसन्न दिखते हुए डॉक्टर कुड़कुड़ाया। मार्क अब साँस नहीं ले रहा था। वह प्रस्थान कर चुका था, पता नहीं किन दूसरे सपनों में, यह कोई नहीं बता सकता।

I–5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड,
इंदिरापुरम, गाजियाबाद – 201014 (उ. प्र.)

***

शुभकामनाएं

जुलाई से सितम्बर,2020 की तिमाही के दौरान सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/ कर्मचारी

नाम	पद	माह
श्री मानस रंजन पटनायक	उपमहानिदेशक	जुलाई, 2020
श्री राधे श्याम यादव	सहायक	जुलाई, 2020
श्री सतवीर सिंह	एमटीएस	अगस्त, 2020
श्री प्रकाश चन्द,	सीनियर स्केल ड्राईवर	अगस्त, 2020
श्री आर के सुनानी	सहायक निदेशक	अक्तूबर, 2020

पर्यटन मंत्रालय से सेवानिवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभ कामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

हिमाचल प्रदेश

दग्शाई

–अनिरूद्ध सिंह

दिछले दिसम्बर में शिमला जाना था। धर्मपुरा से थोड़ा पहले लिखा देखा कसौली। तभी याद आया कि 'कोई मिल गया' फिल्म की लोकेशन कसौली था और बहुत सुन्दर जगह है। सोचा शिमला तो बाद में चलेंगे, एक दिन कसौली देख ली जाए। वहीं एक और बोर्ड लगा देखा था – दग्शाई 11 कि.मी। साथ ही किसी स्कूल का नाम लिखा था और उसके फोटो बने हुए थे। होटल के मैनेजर ने बताया कि दग्शाई तो भूतों का शहर है, जरा सम्भल कर जाइएगा । बस मन में ख्याल आया कि अब तो एक दिन के लिए दग्शाई भी देख ही लिया जाए।

दग्शाई अंग्रेजों के शासन में बनी भारत की पुरानी सेना छावनियों में से एक है।

सड़क के चारों ओर कोई आबादी नहीं थी और एक तरफ सिर्फ घने हरे भरे जंगल और दूसरी ओर गहरी घाटियां। रास्ता थोड़ा धूमिल था और हल्की बूंदा बांदी हो रही थी। इसलिए रास्ते में पूरा दृश्य नहीं दिख रहे थे और ऐसा लग रहा था कि जैसे दुनिया से बाहर था। रास्ता सुंदर था और छावनी का पूरा अहसास दिला रहा था। रास्ते भर, सेना के जवानों के विवरण प्रदर्शित करते बोर्ड थे जिनमें देश के लिए प्राणों की आहुति देने वाले और पुरस्कार विजेताओं के नाम थे।

जैसे अपने पेड़ों के भीतर गुप्त रहस्यों को छुपाए एक शांत स्थान है। छावनी रोड के समीप एक कब्रिस्तान है जो पर्यटकों के साथ एक बहुत ही संभावित पर्यटक स्थल के रूप में लोकप्रिय हो रहा है।

आसपास के लोग दग्शाई को प्रेतवाधित शहर (हांटेड सिटी) कहते हैं। इसके खूबसूरत परिवेश, हरियाली, पहाड़ों आदि को देखते हुए इसे प्रेतवाधित शहर कहने की बात गले नहीं उतरती। यहां के कब्रिस्तान और जेल के मामले में भी यह बताना मुश्किल है यह प्रेतवाधित है या नहीं। दूसरे ऐसे स्थानों की तरह ही इसका भी एक असामान्य सा अतीत है। समुद्र तल से 5,689 फीट ऊंची पहाड़ी के ऊपर स्थित यह भारत का एक बहुत पुराना छावनी शहर है। लेकिन यह कोई विशिष्ट गांव नहीं है और न ही इसका कोई विस्मयकारी इतिहास है।

छावनी का नाम : एक लोकप्रिय स्थानीय किंवदंती के अनुसार, दग्शाई नाम दाग–ए–शाही से लिया गया था। माना जाता है कि मुगल काल में जिस व्यक्ति को किसी भी कारण से एक साल से अधिक की कैद होती थी, उसके माथे पर एक "शाही निशान" यानि दाग लगाया जाता

था ताकि सभी को दूर से ही पता लग जाए कि वह पक्का अपराधी है। ''शाही दाग'' लगाने के लिए उन्हें यहां लाया जाता था। इस स्थान का नाम ''दगशाई'' शायद उसी से ''दाग–ए–शाही'' के नाम से प्रेरित है। समय के साथ इसका नाम बदलते हुए दागशाही और फिर दग्शाई हो गया।

राजस्व विभाग के पुराने दस्तावेजों में उल्लेख मिलता है कि पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंह ने शुरू में यहां तपेदिक के रोगियों के लिए एक सेनिटोरियम बनाने के लिए मुफ्त में डब्बी, बड़हटियाला, चुनवाड़, जवाग और दग्शाई नाम के पांच गांव अंग्रेजों के नाम दान कर दिए थे। बाद में, 1847 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ब्रिटिश शासकों रहने के लिए इसे एक सेना छावनी में बदल दिया। अंतिम और सबसे बड़े गांव के नाम पर नई छावनी का नाम दग्शाई रखा गया था।

दग्शाई में मुख्य रूप से सेना की छावनी, सेना की कुछ इमारतें, दो स्कूल हैं। आर्मी पब्लिक स्कूल, दग्शाई और एक निजी स्कूल, जिसे दग्शाई पब्लिक स्कूल कहा जाता है। पहले केवल सैनिक स्कूल ही आवासीय था। बाद में निजी स्कूल ने भी आवासीय सुविधाएं दी हैं।

दग्शाई सेंट्रल जेल

यहां सैलानियों के लिए एक अन्य बड़ा आकर्षण है, दग्शाई सेंट्रल जेल है, जिसे अब संग्रहालय में बदल दिया गया है।

मेरे परिचय देने के बाद वहां सेना के एक अधिकारी आ गए और मुझे जेल दिखाते हुए बता भी रहे थे। यह 1849 में बनाया गया था और सबसे डरावनी जगहों में से एक है जब हम प्रवेश करते हैं तो दो बहुत छोटे खुले वायु यौगिक होते हैं जो थे गलियारे के साथ वास्तविक जेल हॉल की ओर जाता है। भारी धातु का दरवाजा जो पीछे बंद हो जाता है यू के रूप में कभी भी कम है। पहली चीज जो यू से टकराती है वहां काफी अंधेरा है। एक बड़े हॉल में, लगभग 20–22 फीट ऊंची छत और दीवारों में नाममात्र की छोटी खिड़कियां जिनसे हवा का प्रवेश लगभग दुर्लभ है।

1849 में बनी दग्शाई सेंट्रल जेल में भी अतीत में दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुई हैं। इसके गौरवशाली अतीत को देखते हुए, अधिकतर लोग इसे भारत का एक प्रेतवाधित स्थान मानते हैं। इस जेल ने बहुत सारी यातनाओं और हत्याओं को देखा है जिनके कारण उनकी बुरी कंपन अभी भी जेल में और उसके आसपास बताई जाती हैं।

यह जेल तब सुर्खियों में आई थी, जब कोमागाटामारू घटना के चार क्रांतिकारियों को दग्शाई में फांसी दी गई थी। उसके बाद कई आयरिश स्वतंत्रता सेनानियों को यहां लाकर रखा गया था। वर्तमान में इस जेल का रखरखाव जीई एस/एच कसौली के तहत एमईएस द्वारा किया जाता है। इसे अब संग्रहालय में बदल दिया गया है।

दग्शाई जेल

दग्शाई सेंट्रल जेल को 1849 में एमईएस ने बनाया था। इसी जेल के नक्शे पर अंडमान की

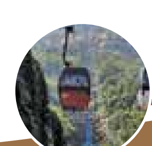
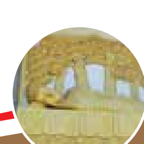

सेलुलर जेल को भी बनाया गया था। यह उत्तर भारत की सबसे बदनाम सेलुलर जेल कही जाती थी । पत्थरों की चिनाई से बनी टी–आकार की इस अनूठी जेल को वर्ष 1849 में 72,875 रुपए की लागत से बनाया गया था जो उस समय एक बहुत बड़ी रकम थी।

160 साल पुरानी दग्शाई सेल्युलर जेल में संग्रहालय के दो खंड हैं। इसमें 8x12 फीट आकार के 54 सेल (कोठरियां) हैं। जिसमें 20 फुट ऊंची छत और लोहे के भारी दरवाजों के साथ बाहर भारी बैरिकेड थे। इसकी 54 कोठरियों में से 16 एकांत कारावास के लिए थीं। इन अंधेरी कोठरियों में कहीं से भी प्राकृतिक प्रकाश आने की व्यवस्था नहीं है। इनमें हवा आने का स्थान भी नहीं है। यहां 50 कैदियों को यहां रखा जाता था।

आजकल इनमें से 11 में कर्मचारी रहते है और 16 को अभी एकांत कोठरी के नमूने के तौर पर रखा गया है।

जेल की एक अनूठी विशेषता लकड़ी का फर्श है। यह जमीन से दो फीट ऊपर और भीतर से खोखला है। बताया गया कि यह सुनिश्चित करता था कि कैदी के हर कदम को सुना जाए उन्हें भागने से रोकें। हॉल में दरवाजे जैसी सलाखों के साथ कई छोटी कोठरियां थीं।

लगभग चार फुट की चौड़ी खाई के बाद एक और ठोस धातु का दरवाजा, जिसके लिए एक छोटी खिड़की है हवादार। प्रत्येक सैल में लगभग 3–4 कैदी रखे जाते थे। दरवाजे के बीच में खड़े होना भी मुश्किल, चरम सुनिश्चित करने के लिए मुसीबत खड़ी की गई थी। शारीरिक परेशानी थी क्योंकि वे न तो बैठ सकते थे और न ही आगे बढ़ सकते थे। अब तक की लग्जरी जेलों से अलग,

आज के कैदियों से अलग , इस जेल में कैदियों को इस तरह की जगहों पर ऐसे रखा जाता था कि बाहर आने के बाद वह दोबारा से अपराध करने की हिम्मत नहीं करेंगे।

छोटा जेल क्षेत्र, व्यायाम यार्ड, मुख्य भवन में बहुत छोटी कोठरियां थीं और लकड़ी के फर्श पर वेलकम शब्द लिखे हुए हैं।

दग्शाई सेंट्रल जेल को आजादी के बाद बहुत समय तक जूनियर इंजीनियर और मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस (MES) द्वारा गोदाम कार्यालय के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। भारत की स्वतंत्रता के बाद इसे एक संग्रहालय में बदल दिया गया है।

संग्रहालय की स्थापना में कसौली के ब्रिगेड कमांडर, ब्रिगेडियर अनंत नारायणन के प्रयास और अभियान के कारण हुई थी। उन्होंने एक लम्बे समय तक सरकार से लिखा–पढ़ी की और अंततः सरकार ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दग्शाई जेल संग्रहालय का उद्घाटन 13 अक्टूबर 2011 को जनता के लिए मेजर जनरल एसके गेडॉक द्वारा किया गया था।

रोशनदान, दरवाजे और एक प्रदर्शनी क्षेत्र है जो कि जेल और उसके आसपास के क्षेत्रों की अभिलेखीय तस्वीरें प्रदर्शित करता है। इस संग्रहालय के जिसमें भारत और यू.के. और आयरलैंड से पुरानी और अभिलेखीय तस्वीरें और अन्य सामग्री शामिल थीं।

चर्च ऑफ इंग्लैंड

दग्शाई कैंट में स्थित चर्च ऑफ इंग्लैंड के परिसर का, चर्च सहित, कुल क्षेत्रफल के आसपास 0.65 एकड़ है। इस चर्च का निर्माण 1846 में कराया गया था । 160 साल से अधिक पुराना है और इसे लकड़ी के चिनाई पर समर्थित पत्थर की चिनाई और नैनीताल पैटर्न हल्के स्टील की छत के साथ बनाया गया है।

रोमन कैथोलिक चर्च

सेंट पैट्रिक रोमन कैथोलिक चर्च दग्शाई छावनी क्षेत्र में बनाया गया यह पहला चर्च था और यह उत्तरी भारत के सबसे बड़े चर्चों में से एक है। इसके निर्माण की योजना अगस्त 1835 में बनाई गई थी और 1852 में यह पूरा हुआ था। उस समय इसके निर्माण पर 5030 रुपये की लागत आई थी।

दग्शाई के कब्रिस्तान

दग्शाई में ब्रिटिश शासन समय के दो कब्रिस्तान हैं जिनका निर्माण 1850 (पुराना) और 1876 (नया) में किया गया था। जिन्हें अच्छा और बुरा दोनों नाम दिए गए हैं। यहां बनी एक कब्र लोगों की श्रद्धा का केंद्र रही है। इसे आज भी 'मेम की कब्र' कहा जाता है।

कुछ पुस्तकों में उल्लेख किया गया है कि रॉयल आर्मी मेडिकल कोर के एक ब्रिटिश मेजर जॉर्ज वेस्टन नाम के एक डॉक्टर अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनकी पत्नी मैरी ही उनकी नर्सिंग सहायक थी। लेकिन विवाह के वर्षों के बाद भी उनके कोई संतान नहीं हुई थी। एक बार ऐसा हुआ कि एक दिन एक संत बाबा भटकते हुए

उधर आ गए। मैरी ने उन्हें खाना खिलाया और संत के पूछने पर मैरी ने अपनी व्यथा बताई तो उन्होंने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। कुछ समय बाद ही मैरी गर्भवती हुई तो परिवार ही नहीं, छावनी में अंग्रेज मित्र भी बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन उनकी खुशी अल्पकालिक रही क्योंकि संयोग से दिसंबर, 1909 में गर्भावस्था के आठवें महीने के दौरान पहाड़ी से फिसलने से अजन्मे बच्चे के साथ मैरी की मृत्यु हो गई।

जॉर्ज ने अपनी प्यारी पत्नी और अजन्मी संतान की याद में एक सुंदर कब्र बनवाई। उसकी अंतिम आरामगाह के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला संगमरमर इंग्लैंड से लाया गया था। ऐसा कहा जाता है कि मैरी की आत्मा अभी भी उसकी कब्र के आसपास घूमती है।

मैरी की ध्वस्त कब्र

जैसे–जैसे समय बीतने लगा मैरी की कब्र के बारे में अफवाहें उड़ने लगीं कि वह देवी थी। वहां दर्शन करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती थी और पुत्र की प्राप्ति होती थी। जो निसंतान महिला मैरी की कब्र से संगमरमर का एक टुकड़ा काट कर खा लेगी तो वह बेटे को ही जन्म देगी। आसपास के गांवों के हिन्दु ही नहीं बल्कि छावनी में रहने वाले अंग्रेज इसाई भी इस स्थान पर आ कर प्रार्थना करने लगे। एक गलत धारणा की कल्पना से कई लोग एक बेटे की चाह में संगमरमर के टुकड़े को काटने के लिए मैरी की कब्र पर जाने लगे। परिणामस्वरूप, एक पत्नी की याद में बनाई गई संगमरमर की यह सुंदर संरचना ऐसे अज्ञानी लोगों ने लगभग नष्ट ही कर दी। अंततः ब्रिटिश अधिकारियों ने इस क्षेत्र में भारतीयों को प्रवेश करने पर रोक लगा दी और साथ ही अंग्रेजों पर भी कड़ी नजर रखी जाने लगी थी। यह बात भी फैल गई कि रात में और कभी तो दिन में ही मैरी को घूमते देखा गया है। तब जाकर लोगों ने वहां कब्र से टुकड़े काटना बंद किया।

*(दग्शाई: ए टाउन ऑफ घोस्ट्स एंड मेमोरीज लॉस्ट इन फेबल्स एंड टाइम : से साभार)

आज भी बहुत से स्थानीय लोग कब्र के आसपास मैरी की आत्मा देखने का दावा करते हैं। कुछ तांत्रिक कहते हैं कि हो सकता है, अपनी कब्र को नष्ट होने से बचाने और अवांछित यात्रियों को दूर रखने के लिए ही मैरी की आत्मा यहां घूमती हो। लेकिन सच्चाई क्या है, कोई नहीं जानता है? यद्यपि इस कब्रिस्तान को भारत में शीर्ष 25 प्रेतवाधित स्थानों में सूचीबद्ध किया गया है, फिर भी पर्यटकों को दिन में ही आने की अनुमति है।

रोमन कैथोलिक कब्रिस्तान (पुराना)

दग्शाई के छावनी में गैरीसन कब्रिस्तान नंबर चार औपनिवेशिक युग का है और इसका निर्माण 1850 में आयरिश सिपाहियों ने किया था। यहां उन अधिकारियों और सैनिकों की कब्रें है, जिन्होंने युद्धों में अपनी जान गंवाई या बीमारियों के शिकार हुए थे। इसमें कई कब्रें सुंदरता से बनाई गई थीं जो उनके साथियों द्वारा प्रिय लोगों के प्रति प्रेम, विश्वास और स्मृतियों को दर्शाती हैं। सबसे पुरानी कब्र अंग्रेज सिपाही हेनरी चार्ल्स HM 22nd Reg की है। 20 वर्षीय चार्ल्स को 2 जून, 1850 को उसके साथियों ने मिट्टी प्रदान की थी।

इस खूबसूरत अलबेला रहस्यमयी गांव तक कैसे पहुंचे?

सड़क मार्ग : दग्शाई के लिए दिल्ली/शिमला/चंडीगढ़ से सरकारी और निजी बसें उपलब्ध हैं। धरमपुरा से पांच कि.मी. दायी ओर दग्शाई है।

रेल मार्ग : कालका – शिमला रेलमार्ग पर कुमारहट्टी (दग्शाई) में उतर सकते हैं। वायु मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा चंडीगढ़ है।

दग्शाई में कहाँ ठहरें?

दग्शाई में कोई बड़ा होटल नहीं हैं। फिर भी, दग्शाई से कुछ पहले दो अच्छे होटल हैं। इसके अलावा, सभी सुविधाओं के साथ शांत और आरामदेह होमस्टे भी उपलब्ध हैं।

दग्शाई परेड ग्राउंड – यहां 1919 में, प्रथम विश्व युद्ध की विजय परेड की गई थी।

दग्शाई का विशाल खेल का मैदान कभी प्रसिद्ध डूरंड फुटबॉल कप का मेजबान होता था। इसी परेड ग्राउंड में डूरंड फुटबॉल टूर्नामेंट या डूरंड कप के शुरुआती मैच भी खेले गए। विश्व युद्ध के दौरान डूरंड कप को निलंबित रखा गया था और अंत में 1940 से इस मैच के पारंपरिक स्थल को दग्शाई से नई दिल्ली कर दिया गया।

यह एक ब्रिटिश युग का कब्रिस्तान है जहां एक घाटी दिखाई देती है। दोनों ओर दो खड़ी सड़कें हैं। और बर्फ के बाद, बर्फ की श्रृंखलाओं

इस छोटे से शहर की गलियों और दुकानों का ताना–बाना लगभग वैसा ही है जैसा कि 1847 के आसपस का परिवर्तन से अछूते और अप्रभावित दुकानों के तीन गुना लकड़ी के मोटे दरवाजे, छोटी और ढलान वाली संकरी सड़कें अनियंत्रित रहती हैं क्योंकि उन पर कोई कार नहीं चलाई जा सकती। सभी अतीत से, शांत और शांत वातावरण से जुड़े हुए हैं। वे कहते हैं कि मोटी लकड़ी अनंत काल तक फैली हुई होती है क्योंकि वे बहुत अंतर्मुखी और संरक्षित होती हैं। अभी भी यहां की शांत हवा और मोटी शाखाओं के साथ लंबे पेड़ लगभग सूरज की रोशनी को रोकने का पूरा पूरा प्रयास करते हैं। चीड़ के पेड़ों की विशाल ध्वनि कई डरावना कहानी की पृष्ठभूमि देती है।

का आनंद लेने के लिए दग्शाई उससे नीचे जाने के लिए आवश्यक है। वहां पर एक सेना की एक इकाई है, समुद्र तल से 5689 फीट की ऊंचाई पर, डगशाई की बेहतर ठंडी हवा न केवल एक फेफड़े को ऑक्सीजन से भर देती है, बल्कि इसकी समृद्ध ऐतिहासिक उपस्थिति को भी प्रभावित करती है।

आयरिश सैनिकों का विद्रोह, 1920

1920 में स्वाधीनता संग्राम के समर्थन में ब्रिटिश सेना में आयरिश सैनिकों के बड़े पैमाने पर विद्रोह के बाद दर्जनों दंगाई सैनिक दग्शाई जेल में कैद किए गए। 2 नवंबर 1920 को, उत्परिवर्ती एक 24 वर्षीय नेता जेम्स डैली को फायरिंग दस्ते द्वारा जेल के आंगन में गोली मार दी गई थी और दग्शाई के कब्रिस्तान में दफना दिया था। 1970 में आयरलैंड के कुछ राजनीतिक नेताओं की मांग पर उनके अवशेषों को आयरलैंड लाया गया था और पूरे सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार दिया गया था (संदर्भः द कनॉट रेंजर्स : म्यूटिनी इन इंडिया,1920)।

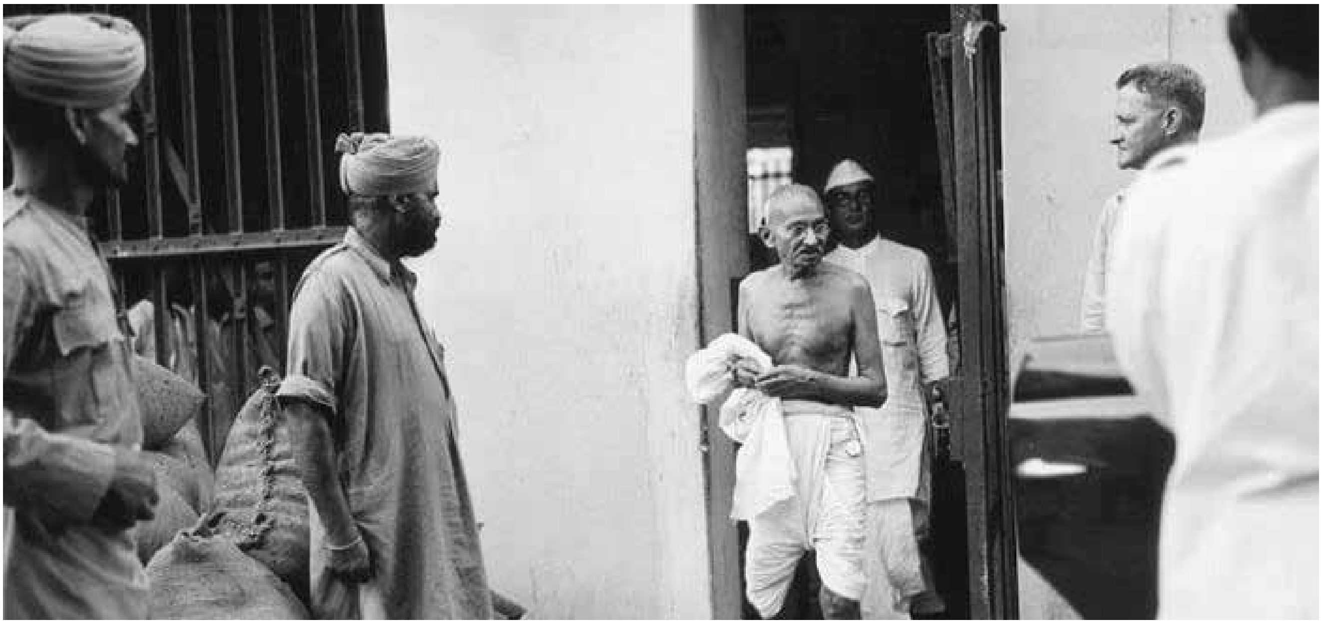

भारत में सबसे पुराने छावनी कस्बों में से एक, खूबसूरत पहाड़ी शहर दग्शाई में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए छावनी बोर्ड ने तीन पिकनिक स्पॉट बनाए हैं। इस जगहों पर दिन के समय यहां से परवानू की हरी भरी पहाड़ियों का नजारा देख सकते हैं। यहां से रात में चंडीगढ़ और पंचकुला की रोशनी के व्यापक और लुभावने दृश्य देखे जा सकते हैं।

लोकप्रिय पर्यटन स्थलों की पागल भीड़ से दूर शांति की तलाश में रहने वालों को दग्शाई में देखा जा सकता है।

दग्शाई छावनी की सैन्य जेल महात्मा गांधी के आगमन की भी गवाह है। लेकिन वह यहां आयरिश कैदियों से मिलने के लिए आए थे। 1920 में जब एक आयरिश सैनिक जेम्स डेली को छोटा सा प्रदर्शन करने के लिए गोली मार दी थी। तब गांधी जी ने अंग्रेज सरकार के विरोध तथा आयरलैंड के लोगों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए स्वेच्छा से इस जेल में एक रात बिताई। स्थानीय लोग महात्मा गांधी के एक रात के लिए

यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय

वैसे तो दग्शाई एक ऐसा शहर है जहां पूरे साल कभी जा सकते हैं। फिर भी गर्मियों के दौरान दग्शाई की यात्रा करना सबसे अच्छा होता है, जब मौसम सुखद होता है। दग्शाई में जनवरी में आमतौर पर कुछ समय के लिए बर्फ गिरती है। सर्दियों के दौरान हिमाच्छादित दग्शाई आश्चर्यजनक लगती है।

जेल के अलावा यहां पर दग्शाई हेरिटेज म्यूजियम भी है। जेल और संग्रहालय दोनों की वास्तुकला हरे रंग में विशिष्ट ब्रिटिश शैली में बनाई हैं। स्टीम इंजन, रेलवे लाइन, दग्शाई के पुराने रीति–रिवाजों आदि का एक संक्षिप्त उल्लेख देखा जा सकता है। अंग्रेज शासन काल के कुछ पुराने नोटों की तस्वीरें हैं। साथ ही युद्ध के समय के कुछ चित्र भी लगाए गए हैं। वह जेलों के मकबरे में मकानों की पुरानी तस्वीरों का संग्रहित किए गए हैं जो उस जगह के इतिहास और ब्रिटिश शासन काल से कुछ यादगार हैं। यह विश्वासघात का दोषी कैदियों के लिए था, जिन्हें बैरकों खिड़कियों और दरवाजों में बंद किया गया था।

दग्शाई जेल में मेहमान होने की बात बड़े गर्व से करते हैं। कहा जाता है कि गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को भी इसी जेल में रखा गया था और उसे इस जेल का अंतिम कैदी माना जाता है। इस शहर में पर्यटकों के लिए कोई होटल, रेस्तरां, कोई खरीदारी क्षेत्र नहीं है। बस दैनिक जरूरत की कुछ दुकानें हैं। जेल के बाहर सिर्फ एक अच्छा सा रेस्तरां और कुछ दूरी पर एक छोटा कैफे है।

मनोरम दृश्य कि यू इतने सारे बिंदुओं के लिए मरना है। प्रचुर मात्रा में इस तरह के सौंदर्य शांति और आनंद देने वाले पहाड़ों की।

स्थानीय लोगों का दावा है कि दग्शाई एक प्रेतवाधित शहर है, लेकिन इसके लिए कोई प्रमाण नहीं हैं।

***

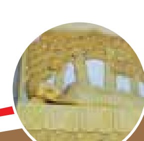

पर्यटक सावधान

एक मीठा जहर!

—मोहन सिंह

अभी कुछ दिन पहले दोपहर में अचानक ही तबीयत खराब हो गई। खांसी उठने लगी। रात भर सोना मुश्किल हो गया तो अगले दिन एक जाने माने अस्पताल में दिखाने जा पहुंचा। डाक्टर ने बिना कोई बात किए ही सलाह दी, चार हजार रुपए जमा कर, कोरोना की जांच करा लो। मेरे मना करने पर उसने चार पांच टैस्ट लिख दिए। जिनमें रक्त की जांच आदि के साथ, बलगम की जांच भी शामिल थी।

चार घंटे के बाद सारी रिपोर्ट देख कर, उनका कहना था खून में चर्बी (वसा) आ गई है शायद वजन बढ़ने के कारण ऐसा है। उनकी अगली सलाह थी, इससे खून में थक्के बन सकते है और हार्ट अटैक भी हो सकता है। परन्तु मन में एक आशंका थी कि रक्त में सफेद वसा के कण क्या हो सकते हैं ? अधिक देर तक लगातार बैठ कर काम करने के अलावा, खान पान तथा दिनचर्या पर नियंत्रण है, फिर यह सब क्या है?

अगले ही दिन सवेरे डाक्टर अफ्फाक मिल गए और उन्होंने इस पर फिर से चर्चा करने की सलाह दी। चूंकि वह भी उसी अस्पताल में तैनात थे, मुझे दोपहर बाद आने के लिए कहा। लगभग चार बजे, लैब तकनीशियन मैडम को बुलाया और बहुत देर तक बात चलती रही। मेरी रिपोर्ट पर बात होती रही, कुछ और एडवांस टेस्ट कराने की बात हुई, लेकिन फिर रक्त में ठोस सफेद कणों पर वह अचानक ही पूछ बैठी कि खाने पीने का कुछ भी सामान पैक कराकर लाते है क्या? वह बताने लगी कि उन्होंनें कहीं रिसर्च पेपर्स पढ़े थे, जिसमें रक्त में Micro plastic के ठोस कण पाए जाने का उल्लेख था। एक बार लगा कि यहीं हमारी बहस का समाधान दिख रहा है।

> ध्यान दीजिए हम लोग अक्सर समोसा, कचौरी या फिर ऐसी ही खाने की चीजें पैक करा कर ले जाते हैं। रेस्तरां या ढाबे वाला दुकानदार चटनी, सब्जी आदि एक छोटी पोलिथीन में पैक कर देता है जिसे हम घर जाकर बर्तन में निकाल लेते हैं और यहीं से समस्या शुरू होती है। इस विषय पर और आगे जो बातें सामने आई वह सुधि पाठकों के लिए प्रस्तुत की जा रही है ताकि आप सुरक्षित रहें।

पोलिथीन की इस छोटी सी थैली में पोलिथीन के हजारों कण होते हैं जो हमें दिखाई नहीं देते हैं। जिन्हें तकनीकी भाषा में micro particles कहा जाता है। चटनी – सब्जी के चटपटे स्वाद में पता ही नहीं लगता कि कौन सा मीठा ज़हर हमारे शरीर में प्रवेश कर गया है। यही कण धीरे धीरे हमारे रक्त में मिल जाते हैं और 10–12 वर्ष बाद समस्या बन जाते हैं।

*सम्प्रति: कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानए खड़गपुर के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक अध्ययन में बताया है कि पेपर कप में चाय पीते हैं तो सावधान हो जाईए। कोई व्यक्ति अगर प्रति दिन पेपर कप में औसतन तीन बार चाय या कॉफी पीता है, तो वह लगभग 75,000 छोटे सूक्ष्म प्लास्टिक के कणों को निगलता है।

लगभग तीन दशक पहले तक देश में स्थानीय टी–स्टालों आदि पर चाय आदि चीनी मिट्टी के कप में दी जाती थी। फिर समय आया कांच के गिलास का, यहां तक ठीक था। समोसे आदि के साथ चटनी पत्ते के दौने में दी जाती थी। होटल से दाल सब्जी रोटी लाने के लिए घर से बर्तन ले जाना होता था। इसके लिए बाजार में छोटे बड़े साइज के ढक्कनदार और लटकाने के लिए कड़ी लगे स्टील के बर्तन आ गए जो मुख्यतः दूध लाने के लिए उपयोग किए जाते थे।

भूले बिसरे बर्तन

कप–गिलास धोने, सम्भालने, टूटने जैसी समस्याओं से निजात पाने के लिए कुछ वैज्ञानिकों ने प्लास्टिक का गिलास बना दिया, जिसे शुरू में पानी या शीतल पेय के लिए इस्तेमाल किया जाता था। कुछ पर्यावरण हितैषियों ने पेड़ों को काटने और पत्ते तोड़ने पर आन्दोलन किए तो पत्तल के लिए पेपर प्लेट बना डाली।

अभी समस्या गर्म की थी तो थर्मोकोल के गिलास आपके सामने रख दिए गए। इसी तरह थर्मोकोल की मोटी परत की थालियां बना दी गई, जो समय के साथ बहुत पतली हो गई। धोने, सम्भालने की भी जरूरत नहीं। इस्तेमाल करिए और फैंक दीजिए। परन्तु यह थर्मोकोल कुछ महंगा पड़ रहा था, चाय के साथ इसके लिए अलग से पैसे लिए जा रहे थे। अब और भी सस्ता विकल्प तैयार किया गया जिसे नाम दिया गया यानि डिस्पोजेबल पेपर कप।

आज पॉलीथीन, प्लास्टिक और थर्मोकोल हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग बन गए हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा बार बार प्रतिबंध लगाने के बाद भी इस दिशा में कुछ भी ठोस परिणाम सामने नहीं आ पाए हैं। आप बाजार से सब्जियां, फल, कच्ची दालें और अन्य सामान लाते है। ठोस पदार्थ धोने आदि से पॉलीथीन के 90 प्रतिशत तक कण धुल कर बह जाते हैं। लेकिन समस्या तरल पदार्थ की है? इसका केवल एक ही तरीका है कि तरल पदार्थ डालने से पहले पॉलीथीन को गर्म पानी से धो लिया जाए जिसके लिए दुकानदार तैयार नहीं होगा। बिमारी लाने से अच्छा है कि

उपयोग से बचें

अपना बर्तन ले जाया जाए। थोड़ी समस्या तो होगी लेकिन आप बिमारियों से बच सकेंगे।

पेय पदार्थों के सेवन के लिए डिस्पोजेबल पेपर कप काफी लोकप्रिय विकल्प साबित हुआ और हमने पेपर कप में चाय/ काफी पीना तो शुरू कर दिया हैए लेकिन सच तो यह है कि इस डिस्पोजेबल पेपर कप में रखी जाने वाली चाय ही हमारी सेहत को बिगाड़ रही है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि पेपर कप के भीतर आमतौर पर हाइड्रोफोबिक फिल्म की एक पतली परत होती है जो ज्यादातर पॉलीथीन (प्लास्टिक का एक रूप) और कभी–कभी सह–पॉलिमर से बनी होती है। पेपर कप के भीतर के अस्तर में इस्तेमाल सामग्री में सूक्ष्म–प्लास्टिक और अन्य खतरनाक घटकों की उपस्थिति होती है और उसमें गर्म तरल पदार्थ परोसने से पदार्थ में दूषित कण आ जाते हैं।

देश में पहली बार किए गए अपनी तरह के इस शोध में आईआईटी, खड़गपुर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग की शोधकर्ता और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुधा गोयल तथा पर्यावरण इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन में अध्ययन कर रहे शोध् ाकर्ता वेद प्रकाश रंजन और अनुजा जोसेफ ने दावा किया है कि पांच मिनट के भीतर यह सूक्ष्म प्लास्टिक की परत गर्म पानी की प्रतिक्रिया में पिघल जाती है। इतनी देर से कहीं अधिक समय तक चाय का कप आपके हाथ में या सामने रख रह जाता है ।

डिस्पोजल पेपर कप खतरनाक?

प्रोफेसर सुधा गोयल के अनुसार, 'उनकी रिसर्च के अनुसार एक पेपर कप में रखा 100 मिलीलीटर गर्म तरल (85–90 ओसी), 25,000 माइक्रोन–आकार (10 माइक्रोन से 1000 माइक्रोन) के सूक्ष्म प्लास्टिक के कण छोड़ता है और यह प्रक्रिया कुल पांच से सात मिनट में पूरी हो जाती है।

शोधकर्ताओं ने शोध के लिए दो अलग–अलग प्रक्रियाओं का पालन किया। पहली प्रक्रिया में, गर्म और पूरी तरह स्वच्छ पानी (85–90^{0}C; pH~6/9) को डिस्पोजेबल पेपर कप में डाला गया और इसे 15 मिनट तक उसी में रहने दिया गया। इसके बाद जब इस पानी का विश्लेषण किया गया तो पाया गया कि उसमें सूक्ष्म–प्लास्टिक की उपस्थिति के साथ–साथ अतिरिक्त आयन भी पूर्णतः मिश्रित हो चुके थे।

जबकि, दूसरी प्रक्रिया में, कागज के कपों को शुरू में गुनगुने (30–40 डिग्री सेल्सियस) स्वच्छ

पानी (पीएच/ 6।9) में डुबोया गया और इसके बाद, हाइड्रोफोबिक फिल्म को सावधानीपूर्वक कागज की परत से अलग किया गया और 15 मिनट के लिए गर्म एवं स्वच्छ पानी (85–90°C; pH~6/9) में रखा गया। इसके बाद इस प्लास्टिक फिल्म के गर्म पानी के संपर्क में आने से पहले और बाद में उसमें आए भौतिक, रासायनिक और यांत्रिक गुणों में परिवर्तन की जांच करने पर पता चला कि यह तत्व पानी में घुल चुके थे।

तो फिर चाय किसमें पीना चाहिए?

इस स्थिति से बचने के लिए क्या किया जाए? इस सवाल पर आईआईटी खड़गपुर के निदेशक प्रो. वीरेंद्र के. तिवारी लिखते हैं, ''इस शोध से यह साबित होता है कि किसी भी अन्य उत्पाद के इस्तेमाल को बढ़ावा देने से पहले यह जरूर देखना चाहिए था कि वह उत्पाद पर्यावरण के लिए प्रदूषक और जैविक दृष्टि से खतरनाक तो नहीं है। हमने मिट्टी और कांच से बने उत्पादों को डिस्पोजेबल पेपर उत्पादों से बदलने में जल्दबाजी की थी। जबकि जरूरत इस बात की थी कि हम पर्यावरण अनुकूल उत्पादों की तलाश करते। भारत पारंपरिक रूप से एक स्थायी और प्राकृतिक जीवन शैली वाला देश रहा है और शायद अब समय आ गया है, जब हमें स्थिति में सुधार लाने के लिए अपने पिछले अनुभवों से सीखना होगा। इन डिस्पोजेबल उत्पादों के स्थान पर पारंपरिक मिट्टी आदि के उत्पादों का इस्तेमाल किया जा सकता है।''

आज के आधुनिक जीवन में कपड़े या कागज में रोटी लपेटना और स्टील के कटोरों में खाना पैक करना काफी ''आउटडेटेड'' और पिछड़ापन लगता है। अखबार के कागज या फिर कपड़े की जगह अब चमचमाती एल्युमिनियम फॉयल ने ले ली है। ऑफिस जाना हो या बच्चों का टिफिन बॉक्स तैयार करना हो ज़्यादातर लोग एल्युमिनियम फॉयल में ही खाना पैक करते हैं। माना जाता है कि इससे खाना ताजा और काफी

अध्ययन दल का दावा है कि यह सूक्ष्म प्लास्टिक आयन जहरीली भारी धातुओं जैसे पैलेडियम, क्रोमियम और कैडमियम जैसे कार्बनिक यौगिक और ऐसे कार्बनिक यौगिक, जो प्राकृतिक रूप से जल में घुलनशील नहीं हैं भी, समान रूप से, वाहक के रूप में कार्य कर सकते हैं। जब यह मानव शरीर में पहुंच जाते हैं, तो स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल सकते हैं।

देर तक गर्म बना रहता है । लेकिन क्या आप इस बात से वाकिफ हैं कि एल्युमिनियम फॉयल की वजह से आपका खाना आपको कितना नुकसान पहुंचा रहा है, आइए जानते हैं कैसे?

एल्युमिनियम फॉयल के नुकसान को लेकर भी कई शोध किए गए हैं। हाल में न्यूट्रिशन और एक्सरसाइज साइंस एक्सपर्ट रुजुता दिवेकर ने इस सिलसिले में अपनी फेसबुक वाल पर एक विडियो साझा किया था जिसमें उन्होंने एल्युमिनियम फॉयल में खाना पैक करने के नुकसान के बारे में बताया है। उनके मुताबिक़, खाना एल्युमिनियम फॉयल या प्लास्टिक के लंच बॉक्स में पैक करने के स्थान पर शीशे के बर्तन में पैक करना ज्यादा सही रहता है। इससे खाने के पोषक तत्व बरकरार रहते हैं। उनका कहना है कि पानी भी कांच, मिट्टी या कांसे के गिलास/बर्तन में पीना बेहतर है।

विशेषज्ञ भी खाना पैक करने के लिए एल्युमिनियम फॉयल के प्रयोग को सही नहीं मानते हैं। उनके मुताबिक, खाना जब एल्युमिनियम फॉयल के संपर्क में आता है तो उसकी तासीर बदल जाती है। उसमें एल्युमिनियम के तत्व आने लगते हैं जिससे खाने की गुणवत्ता प्रभावित होती है जो सेहत के लिए खतरनाक मानी जाती है।

अब प्रश्न है कि जब लाखों लोग इस वैकल्पिक काम के रोजगार में लगे हैं, ऐसे में इस पर रोक लगाने से बेरोजगारी के खतरें के साथ ही प्राकृतिक संसाधानों पर भार पड़ सकता है।

फिर इस समस्या से कैसे बचा जाए। इससे बचने का एक ही तरीका है कि आप अपना थर्मस और कप/गिलास साथ रखें। चाय, दूध, काफी जो भी लेना हो, अपने सामने पैक करवाएं और अलग से अपने कपों में डालकर पी जाए। **मजे की बात यह है कि आपके थर्मस को गर्म पानी से धोने में दुकानदार को कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन पेपर कप को धुलवा कर देखें।**

> इस प्रकार बाहर खाने का ज्यादा प्रभाव पर्यटकों और यात्रियों पर पड़ता है। किसी बस स्टैंड पर इस रुकी तो चाय लेनी है, जो पेपर कप में हाजिर है। फलों का जूस चाहिए तो प्लास्टिक के गिलास हाजिर हैं। इसी प्रकार अपनी गाड़ी में सफर करते हुए भी रोड़साइड दुकानों पर चाय आदि पीना एक आम बात है।

***

''यदि मुझसे पूछा जाए कि किस आकाश के नीचे मानवीय मस्तिष्क ने अपने कुछ चुनिन्दा उपहारों को विकसित किया हैं, जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर गहन विचार किया हैं और उनके हल निकाले हैं, तो मैं भारत की तरफ इशारा करूँगा''

– मैक्स मुलर

दीदार के लिए बेकरार

–डॉ. विश्वरंजन

रंग भी तेरा, ढंग भी तेरा।
बुलबुल बोले चमन है मेरा।
नदिया बोली धार है मेरी
हवाएं बोली बाहर है मेरी।
सब ने बोला,जाओ ! उनको बताओ।
कैसे किया है इस पल का इंतजार।
जब होता थे, दीदार के लिए बेकरार।
हवाएं! छु के आना, मुझे बताना।
कैसी दिखती है परवरदिगार मेरी।
नदिया बोली आ के बैठ मेरे किनारे।
दिखेगी इस निर्मल धारा में अमृत तेरी।
रंग भी तेरा ढंग भी तेरा।
खुशुबू भरा है ये चमन मेरा।

गुजारिश

गुजारिश करूं तुमसे,
चाहत से समेट ले मुझे।
न जाने की तुमसे,
दिदार कब होगा मुझे।
निर्मल है तेरी लहर,
काश ये बहती मेरी भी शहर।
हम आते उन लहरों के किनारे,
बाँहो में समेटे अमृत को सिर मोर चढाते,
है गुजारिश तुमसे, चाहत से लिपटूं तुझे।

संप्रतिः कंसल्टेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, नई दिल्ली

श्री टी. वीरेन्द्र की दो कविताएं

मौसम

जंगल से मिलने आता मौसम
रंगों की छटा दिखलाता मौसम,
गर्मी में पारा चढ़ा देता
सर्दी में पाला गिरा देता,
वर्षा में बादल बन जाता
अम्बर को सारा रंग जाता,
फिर रंग पतझड़ का दिखलाई,
सब हरियाली को उड़ा जाई,
जब नंगा-बुच्चा जंगल बोला
बसंत ने अपना थैला खोला,
फूल-पत्तियों का दिया परिधान,
तब विहंगों ने भी गाया गान,
हे-बसंत राजा तुम महान
हे बसंत राजा तुम महान.

समय

सात बजे का भोंपू बोला,
मैंने अपना कमरा खोला,
कमरा खोल उठाया झोला,
इतने में साथी एक बोला,
मुझको भी चलना है भाई,
थोड़ी साथ चलो भिड़ाई,
ना-ना मैं ना करूंगा ऐसी भूल
सात बजे का है स्कूल
ठीक समय का रखो ध्यान
होंगे पूरे सारे काम

*सम्प्रतिः फिल्म निर्माता, निदेशक, लेखक एवं अभिनेता, चेन्नई

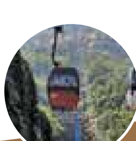

एक बच्चा और जिन्न की कहानी

—कंचन

महज 11 साल का एक बच्चा
जिसने लॉकडाउन में खो दिया था किसी को
रो रहा था याद करके अपने पिता को
अभी उसे समझ भी न थी जीवन मृत्यु की
वह उम्र, जब होती है जरूरत पिता की
फिर मिला उसे एक जादुई चिराग
जिसकी शक्ति से था वह अज्ञात
चिराग में से निकला एक जिनी बाहर
और निकलते ही जिनी बोला हुकुम मेरे आका
उसे देख बच्चा डरा और चिराग फैंक कर दूर भागा
जब जब बच्चा चिराग को अपने हाथ में लेता
जिनी उससे बाहर निकल आता और कहता हुकुम
मेरे आका
समझ उसे ना आया कि आखिर होता क्या है आका
जिनी ने कहा मैं आपका गुलाम हूं।
बहुत सी ताकतों का आयाम हूं।
हुक्म करो आका, झट होगा वह पूरा
ख्वाब जो तुम देखोगे रहेगा नहीं अधुरा
यह सुन कर बच्चा हुआ बेहद खुश
सोचा
चाहूंगा मैं जो भी, पूरा होगा क्या वैसा
इसी सोच में मांगा उसने जीनी से कुछ ऐसा
जिसे सुन कर जीनी भी पड़ गया सोच में
तो सुनिए उस बच्चे की मासूम सी ख्वाहिश
ए जीनी अगर तू हर ख्वाहिश को पूरा करता है?
तो क्या तू इस महामारी को दूर भगा सकता है?
क्या तू मेरे पिता को वापस ला सकता है
मेरी माँ खूबसूरत हर वक्त सजी धजी सी
अब वह रहने लगने लगी है डरी—डरी सी
बेहद सुन्दर लगती थी उसकी मुस्कान
अब न जाने कहां खो गई, वह मुस्कान
क्या तू उसकी खोई हुई मुस्कान वापस ला सकता है?
क्या उस खुबशुरती को लौटा सकता है
छिन गया जो मुझसे मेरे पापा का साया
वही साया तुम वापस ला सकते हो क्या
एक अलग ही खुशी थी उनके रहने से
अब वो नहीं, तो जो मातम पसरा है
उस मातम को खुशी में बदल सकते हो क्या
बच्चा जो मासूमियत से अपनी ख्वाहिशें बता रहा था
मानो वो अपने दिल में काफी चिजे दबाए बैठा था
बाते सुन कर उसकी जीनी आँखों में आँसु लिए बोला
जाने वाले को तो मैं वापस नहीं ला सकता
पर हो कोई और ख्वाहिश जैसे
मन हो कुछ खाने का, ला सकता हूं
देखनी हो दुनिया तो घुमा सकता हूं
बच्चा फिर बोला,
कर दो पूरी बस इतनी सी ख्वाहिश
ला दो तुम मेरे पापा को वापस,
नहीं है ख्वाहिश मुझे मँहगे कपडे और तोहफे की
ज़रूरत तो है सिर्फ मुझे अपने पापा की।
आ गए अगर वह तो खाना और घुमाना वो ही कर देगें
नहीं जरूरत कुछ कहने की वो सब कुछ समझ लेगे।
उसका मासुम सा चेहरा जीनी से देखा न गया
उसकी बातें सुन जीनी वापस चिराग में चला गया
आया न कभी जीनी फिर उस चिराग से बाहर
क्योंकि पूरी न कर पाया था वो उस बच्चे की मुराद
जब मिला ना उसे जीनी से कोई भी जवाब
होता क्या है जीवन उसने अब सीख लिया
जीवन और मृत्यु को वो समझ गया
उसने चिराग को कहीं दूर नदी में फैंक दिया
वो महज 11 साल का बच्चा न जाने कब बडा हो गया
अब वह खुद ही अपना जीनी बन गया।

*सम्प्रति : पर्यटन मंत्रालय में एम. टी. एस

स्त्री का सफर

—कंचन

चलो आज एक स्त्री का सफर सुनते हैं,
सफर हिंदी का भी और suffer इंग्लिश का भी।
चलो आज एक स्त्री का सफ़र सुनते हैं
जिसकी गोद में सर रखकर हम कई सपने बुनते हैं।
स्त्री की काया, जैसे कोई माया*।
मानसिकता से ही हम अक्सर पुरुष को चुनते हैं,
स्त्री की ही गोद में सर रखकर हम अपने कई सपने बुनते हैं।
जब आई वह इस दुनिया में पहली बार,
शायद उसे मिला मां बाप का पहला प्यार,
हां, एक बेटे की कमी को वह पूरा नहीं कर सकती है,
पर एक बेटा वो पैदा जरूर कर सकती है।
भेदभाव को भूल, पूरे मन से अपनी मां का हाथ बटांती है,
होता होगा महसूस उसे भी, आखिर वह भी इंसान हैं,
मगर अपना दुख वो कहां किसी को जताती है।
सबसे प्यारा रिश्ता उसका भाई के साथ होता है ,
वह बिना किसी मतलब और बीना फरेब के होता है।
बहन अपने भाई के लिए उसका पहला प्यार है,
अगर जिंदगी मां–बाप की देन है, तो बहन उस जिंदगी का सार है।
प्रेम की मूरत होती है औरत, जिसके प्रेम में पुरुष खो ही जाता है,
कितना भी पत्थर दिल हो मर्द, पत्नी के आगे रो ही जाता है।
पुरुष पर तो अपनी मां बाप की जिंदगी का कर्ज़ है,
"पर"
पर अपने पति के मां–बाप की सेवा करना सिर्फ उसके प्यार का फर्ज़ है।
खुदा का नायाब तोहफा और धरोहर'' है स्त्री,
इस धरोहर** को संभाल लेना,
नौ माह अपने पेट में रखने और उसके दूध का बदला,
किसी और की इज्जत उछाल कर ना देना।
घर की एक औरत, जो अभी अस्पताल में लेटी हुई है,
मैं बहुत खुश हूं क्योंकि आज मेरे घर बेटी हुई हैं।।

'माया एक ऐसा शब्द है, जिसके हम अपने अपने वाक्य के प्रयोग के हिसाब से अनेक अर्थ निकाल सकते हैं।

***** ''यहां धरोहर का अर्थ है 'स्त्री', स्त्री ना हो तो दुनिया चल ही नहीं सकती।***

---

*सम्प्रति : पर्यटन मंत्रालय में एम. टी. एस

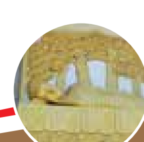

चन्द अशआ'र

—घनश्याम दास बैरवा

1. हम वो नहीं, घबरा के तेरे कदमों में अपनी आबरू[1] डाल दे
इंसाफ की बात कर, या मेरे जिस्म में मुर्दो का लहू डाल दे

2. कैद ए हयात ओ[2] बंदिश ए इश्क[3], मेरे बे—अदब मेहमां निकले
या इलाही, मेरा अब ना दम निकले, ना मेरे अरमां निकले

3. अजीब फितरत का गै़र मुतावका[4] शय इंसान है
हस्ब ए जरुरत[5] फ़क़ीर, हस्ब ए ताकत[6] फिरौन[7] है

4. रोये है जिस्म गरीब का, बहते हैं आँसू, रोज बन के पसीना
कहां बचा है आब, बने जो अश्क, टूटे जब दिल का सफीना[8]

5. तअ'ल्लुक़ के दर ओ खिड़कियों की बेलौस सदाएं[9], जब से हुई है बंद
मुआशरे के दिल ओ दिमाग हैं ख़राब, कुछ हो गए है बंद, कुछ है कुंद

6. महोब्बत के जज्बात बहुत पाक[10] है, नज़र से नापाक हो जाते हैं
गोया, पंख तितली के है, छुओ तो रंग उँगलियों पे उतर आते हैं

7. कभी तू भी मेरे दिल ए नाशाद[11] की ख़ामोश रहगुजर से गुजर
कितने शगुफ्ता[12] है मेंरे जख्म ए दिल, गुल ए नाले ओ शज़र[13]

8. ना चाहूँ तो भी तुझे जीना है, रोना है, हँसना है, हँसाना है, निभाना है

अजीब शय[14] है जिंदगी, फिर भी जीने का तू, ख़ूबसूरत एक बहाना है

9. तू खुदा है तो क्या, दिल तो तेरा इंसानों सा गोया होगा
बना के नसीब गरीबों का, तू भी तो खूब रोया होगा

10. जो भी हँस के मिलता है, अपना सा समझ लेते हैं
क्या खबर थी, हर चेहरे में छुपे, चेहरे हज़ार होते हैं

11. वक्त की गर्मी से चिपके हुए कागज उखड़ जाते हैं
एहसास में जब ठंडक हो, रिश्ते बिगड़ जाते हैं

12. माना, लगती नहीं है मंडियां दुनियाँ में गुलामों की अब आम
बिकते है यहाँ आज भी, ख़िरद[15], इमां ओ जब्र[16], बंडलों के दाम

13. बहुत मुश्किल है यहाँ इंसां होना, अदब[17], तहजीब[18], रफ़ाक़त[19] को समझना
अच्छा है, जाहिल ख़ालिस[20] हो जाएं, चलो खुद से धर्म और ईमान हो जाएं

(1) प्रतिष्ठा/इज़्ज़त/गौरव (2) जीवन रूपी कैद (3) इश्क के प्रतिबंध अशिष्ट (4) अपूर्वानुमेय (5) जरुरत के अनुसार (6) ताकत के अनुसार (7) फिरौन बादशाह (8) नाव (9) निस्वार्थ आवाजें (10) पवित्र (11) दुःखी (12) खिले हुए (13) फ़रियाद रूपी फूल और पेड़ (14) वस्तु/चीज (15) ज्ञान (16) ईमान मजबूरी (17) साहित्य, (18) संस्कृति, (19) भाईचारा (20) शुद्ध बेवकूफ

---

*सम्प्रति : सहायक निदेशक, भारतपर्यटन कार्यालय, सिंगापुर

याद इन्हें भी कर लें

साहित्य संस्कृति और पर्यटन की खामोश सिपाही

—मोहन सिंह

ऐसी शख्सियत पर उसके निधन पर लिखना कितना कठिन होता है? खासकर, जब आप कहीं न कहीं उसके सम्पर्क में रहे हों और वह भी एक ऐसा व्यक्तित्व जो प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए हार नहीं मानें। ऐसी ही एक शख्सियत थी दिल्ली की साहित्कार,पत्रकार, और लेखिका सादिया देहलवी।

उनके दादा हाफिज यूसुफ देहलवी ने 1938 में उर्दू फिल्मों और साहित्यिक प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका 'शमा' की स्थापना की। फिर उनके पुत्र यूनुस देहलवी ने उर्दू पत्रकारिता का नए तरह से नेतृत्व करते हुए शमा के अलावा, 'सुषमा', बच्चों के लिए 'खिलौना', महिलाओं के लिए 'बानो', अपराध कथाओं पर ''मुजरिम'' और ''दोषी'' जैसी उर्दू पत्रिकाएं शुरू की। पत्रिकाओं के सफल संचालन के साथ ही देश दुनिया की समस्याओं को आम बोलचाल में, नुक्कड़ नाटकों को माध्यम से उठाने वाले यूनुस देहलवी पहले लेखक थे। उन्होंने कृष्ण चंदर, इस्मत चुगताई, राजिंदर सिंह बेदी जैसे दिग्गज और लोकप्रिय साहित्यिकारों को 'शमा' के साथ जोड़ा और इतना ही नहीं, नरगिस और मीना कुमारी जैसे फिल्मी सितारों को सामयिक स्तंभों में लिखने को प्रेरित किया।

सादिया देहलवी

दिल्ली के चाणक्यपुरी के डिप्लोमैटिक एन्क्लेव में शमा कोठी, फिल्मी सितारों की मेहमाननवाजी की पहचान बन गई थी। दिलीप कुमार, राज कपूर, नरगिस, मीना कुमारी और वहीदा रहमान जैसे बॉलीवुड सितारे कभी यहां के मेहमान बने थे। इतना ही नहीं इस कोठी में कृष्ण चंदर इस्मत चुगतई, राजिंदर सिंह बेदी, खुशवंत सिंह जैसे लोकप्रिय साहित्यकार भी रात्रि भोज पर मेहमान बन चुके थे।

सादिया ने सबसे पहले महिलाओं की उर्दू पत्रिका 'बानो' का संपादन किया और उसके माध्यम से महिलाओं के हकों की बात की। सादिया ने 'बानो'' में मीना कुमारी की गजलों को स्थान दिया। उसने सुप्रसिद्ध लोकप्रिय लेखकों के साथ उभरते नए लेखकों को अवसर दिया और इन पत्रिकाओं को एक नई बुलंदी पर पहुंचाया। आज हम सोच भी नहीं सकते कि यह पत्रिकाएं कितनी लोकप्रिय थी? उर्दू बोलने वाले हरेक घर में पाई जाती थीं।

परन्तु वक्त सदा एक सा नहीं रहता। उर्दू पाठकों की घटती संख्या से कमाई में गिरावट ने इस ग्रुप को तोड़कर रख दिया। अपने पारिवारिक कारोबार को बनाए रखने के लिए सादिया ने बहादुरी से प्रयास किए, लेकिन पार नहीं पा सकीं।

सादिया को खाना बनाने का शौक था। खाना भी कुछ ऐसा था कि मेहमान भावुक हो जाता था। सादिया अक्सर कई तरह के कबाबों के बारे में बात करती थी। वह घर में होने वाली पार्टियों में खुद सर्व करती थी। वह हर तरह से 'दिल्ली वाली' थी। उसने 30 साल पहले दिल्ली शहर के भोजन और संस्कृति के बारे में लिखा था।

1979 में, सादिया ने चाणक्यपुरी के डिप्लोमैटिक

एन्क्लेव में, अपनी माँ के साथ मिलकर कबाब के लिए प्रसिद्ध रेस्तरां अल कौसर की स्थापना की। उसने लेखन और पत्रकारिता के साथ ही एक शेफ की टोपी पहनी और ITC के साथ मिलकर 'ऑल सिक्स डे डिनर बुफे' नाम से फूड फेसटिवल लगा कर दिल्ली के प्रामाणिक व्यंजनों को प्रस्तुत करते हुए उनका जश्न मनाया। इस निराले, कैफे शैली के रेस्तरां में आज भी काकोरी कबाब और अन्य मुगलई व्यंजन परोसे जाते हैं। सादिया के बनाए आलू–गोश्त का सालन, खिली हुई माश (उड़द) की दाल और निहारी एक ट्रेड मार्क के योग्य है!

2017 में, उसने ''जैस्मीन एंड जिन्स'': मेमोरीज एंड रेसिपी ऑफ माई दिल्ली '', नाम से पुस्तक लिखी जिसे दिल्ली की पाककला के इतिहास पर पहली पुस्तक माना जाता है।

इसके बाद भी सादिया ने पत्रकारिता में दबदबा जारी रखा स्तंभ और टेलीविजन धारावाहिक लिखना (और कभी–कभी कैमरे का सामना करना भी) और अपने प्रिय शहर दिल्ली, इसके खानपान, संस्कृति, भाषा और शिष्टाचार आदि के बारे में बताना उसका जुनून था।

हमेशा एक अच्छी सत्कारिणी, अच्छे खानों की शौकीन और सच को सामने रखने वाली, एक लेखिका जिसका काम तेजी से विश्वास, संस्कृति और महिलाओं पर केंद्रित था। वह कई दैनिक समाचार पत्रों की स्तम्भकार रही उनके ओजस्वी लेख, अक्सर हिंदुस्तान टाइम्स, फ्रंटलाइन में अंग्रेजी के अलावा हिंदी और उर्दू के अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। जिन लोगों ने उसे टेलीविजन बहसों में देखा उसके प्रशंसक बन गए। शांति और सामंजस्य से बात करते हुए, मुखर आवाज में सहज आक्रामकता से अपनी बात रखना, उसकी विशेषता थी।

पिछले दशक में उसने तीन पुस्तकें लिखीं– सूफीज्मः द हार्ट ऑफ इस्लाम' (2009), (जिसमें उन्होंने इस्लाम की सूफी परंपराओं, प्रेम, सहिष्णुता और भाईचारे के सूफी संदेश के महत्वपूर्ण विवरण दिए हैं।), सूफी कोर्टयार्डः दरगाह्ज ऑफ दिल्ली, जैस्मीन और जिन्सः मेमोरीज एण्ड रेसिपीज ऑफ माय देलही लिखीं। इनके अलावा, ''दिल्ली दस्तरख्वान'' दृचौप्टर इन सिटी इम्प्रोबेबलः एन एंथोलॉजी ऑफ राइटिंग ऑन दिल्ली'' जिसका सम्पादन श्री खुशवंत सिंह ने किया था।

मुझे याद है कि सादिया एक ऐसी शख्सियत थीं, जो उनके माता–पिता के दोस्त या अपने दोस्तों के माता–पिता की नासाज तबीयत की खबर लगते ही सिर्फ 10 मिनट के लिए ही सही उनसे मिलने जरूर जाती थी।

निर्मात्री और लेखिका के साथ ही इन टीवी सीरीयलों में अभिनेत्री के रूप में:

- जिन्दगी कितनी खूबसूरत है (2001)
- अम्मा एंड फैमिली (1995)

निर्मात्री :

- नॉट टू ए नाइस मैन टू नो (1998) टीवी सीरियल (एसोसिएट निर्माता)

सादिया को अपनी बीमारी का पता चला तब तक कैंसर चौथे चरण में पहुंच चुका था। अंत में बुधवार 5 अगस्त 2020 की रात कैंसर से एक लंबी लड़ाई से हार गई।

सादिया के साथ दिल्ली के आतिथ्य, शिष्टाचार, तहजीब और अदब की एक शमा मंद हो गई है।

दाग-ए-फिराक-ए-सोहबत-ए-शब की जली हुई।
इक शमा रह गई थी तो वो भी खामोश है।
अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।

***

साहित्य और संस्कृति की सिपाही

डॉ. कपिला वात्स्यायन

लेखिका और कलाविद भारतीय शास्त्रीय नृत्य, वास्तुकला, इतिहास और कला की प्रख्यात विदुषी कपिला वात्स्यायन का जन्म 1928 में दिल्ली में हुआ था और उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर के बाद शिक्षा के विषय में अमेरिका के मिशिगन विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई की थी।

दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन के कुछ समय बाद ही उनके व्यापक ज्ञान और अनुभव को देखते हुए उन्हें शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय में ले लिया गया।

जिस समय शिक्षा की सुविधाएं प्रारंभिक स्तर पर थीं, उस समय डॉ. वात्स्यायन ने शिक्षा

सुविधाओं के विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी लंबी जीवन यात्रा में, कपिला जी ने स्वयं को सत्ता से दूर ही रखा। कोई भी सार्वजनिक कार्यालय उन्हें आकर्षित नहीं कर सका और इसके बजाय, लोगों की सहायता करने के मिशन में लगी रहीं। भारत के बंटवारे के बाद ही वह महिलाओं की सुरक्षा में सक्रिय हो गई थी। फरीदाबाद के शरणार्थी शिविर में महिलाओं की देखभाल में पहुंच गईं। गांधी जी के साथ उनकी निकटता और आर्थिक बेरोजगारी व रचनात्मकता की कर्तव्यनिष्ठा ने भारतीय सहकारी आंदोलन को बढ़ाते हुए हस्तशिल्पकारों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड और अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड की संस्थाएं 1952 में एक सरकारी सलाहकार के रुप में उनकी सक्रिय पैरवी के कारण ही अस्तित्व में आईं।

वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की संस्थापक निदेशक तथा सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) की प्रथम अध्यक्ष थीं।

वह राज्यसभा की मनोनीत सदस्य भी रह चुकी थीं और इंडिया इंटरनेशल सेंटर की एशिया परियोजना की अध्यक्ष और आजीवन न्यासी थीं।

कला के हर क्षेत्र में चाहे वह संगीत, नृत्य, थिएटर या शिल्प रहा हो उनका प्रेम और जुनून था। एक युवा लड़की के रूप में, उन्होंने एक थिएटर कलाकार के रूप में रूढिवादी परम्पराओं को चुनौती दी। उन्होंने अपने लंबे करियर में कला और इतिहास पर लगभग 20 पुस्तकें लिखी थीं। उनके दिल्ली स्थित आवास पर बुधवार 16 सितंबर 2020 को चिरनिद्रा में सो गई। वह 92 वर्ष की थीं।

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान –

भारत सरकार ने 1955 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

सामुदायिक नेतृत्व के लिए रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (1966), संगीत नाटक अकादमी का आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (1974), हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को पुरस्कार (1977) प्रदान किए गए। उन्हें 2011 में भारत सरकार द्वारा पदम् विभूषण से सम्मानित किया गया था।

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि

भारतीय संस्कृति में सौलह संस्कार

–शंकर लाल माहेश्वरी

''संस्कार'' शब्द की व्युत्पत्ति ''सम्'' उपसर्ग के साथ ''कृ'' धातु के ''धत्र्'' प्रत्यय के योग द्वारा है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका आशय है– सम्यक बनाना अथवा शुद्ध करना। संस्कार वह धार्मिक अनुष्ठान हैं जो व्यक्ति को योग्य बनाते हैं। उसके जीवन को सार्थकता प्रदान कर, आत्मोन्नति में सहायक होते हैं।

संस्कारों की संख्या के संदर्भ में गौतम संस्कारों की संख्या 40 बताते है तो मनुस्मृति में 13 संस्कारों का उल्लेख है। महाभारत में भी 13 संस्कारों की गणना है। मनु स्मृति 2/36 के अनुसार प्रत्येक द्विज को स्थूल एवं शरीर की शुद्धता के लिए सौलह संस्कारों का वर्णन है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 16 संस्कारों को मान्यता प्रदान करते हुए लिखा है कि स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर की मानसिक एवं शारीरिक शुद्धता के लिए जो क्रियाएं की जाती है उन्हे संस्कार कहा गया है।

> सौलह संस्कारों में गर्भाधान, सीमान्तोनयन और पुंसवन प्राण संस्कार जन्म संस्कार कहे जाते है। बालक के जन्म से विद्यारम्भ तक जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन तथा कर्णबेध संस्कार सम्पन्न होते है। इस समय तक बालक शिक्षा प्राप्त करने योग्य हो जाता है। अन्य संस्कार बाद की अवस्था से संबंद्ध हैं।

*सम्प्रति : पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, भीलवाड़ा,राजस्थान

पुंसवन संस्कार– गर्भ की स्थिति का ज्ञान होने के बाद दूसरे या तीसरे महीने में किया जाता है। यहीं से पुत्र व पुत्री की कामना का शुभारम्भ होता है। माँ के गर्भ में शिशु का प्रतिष्ठापन होना गर्भाधान संस्कार है। जिस कर्म को प्राप्त कर महिला सुख धारण करती है उसे गर्भाधान कहते है। सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार स्त्री 16 वर्षो से कम न हो तथा पुरुष 25 से कम नहीं होना चाहिए।

सीमान्तोनयन संस्कार– इस संस्कार में गर्भवती स्त्री के केशों में पति स्वयं सीमन्त (माँग) निकालता हैं। इस संस्कार का उद्वेश्य स्त्री को अमंगलकारी शक्तियों से बचाना है। धर्मग्रंथों में इसे चौथे महीने में करने का संकेत है।

जातकर्म संस्कार– बालक के जन्म लेने के बाद यह प्रथम संस्कार है। इसी संस्कार में नाल उच्छेदन होता है। इसमें पिता द्वारा स्वर्ण सलाही से बच्चे को घृत और मधु चटाया जाता है। कुछ स्थानों एवं सम्प्रदायों में स्वर्ण सलाही से बच्चे की जीभ पर ''ओउम'' लिखा जाता है तथा उसके कान में वेद शब्द ''ओउम'' उच्चरित किया जाता है। ऐसा माना गया हैं कि इस विधि से बालक मेधावी, दृढ़चित्त एवं पुष्ट बनता है।

नामकरण संस्कार– जन्म के बाद का दूसरा संस्कार है। नामकरण बृहस्पति के ''वीर मित्रोदय संस्कृति प्रकाश'' के अनुसार नामकरण को

अनिवार्य माना गया है। यह लौकिक व्यवहारों का कारक है तथा कल्याण व भाग्योदय का आधार है। आश्वलाभ ग्रह सूत्र के अनुसार बालक का नामकरण जन्म से दस दिन जोड़ के 11वें या 101 वें अथवा दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में जिस दिन जन्म हुआ है उस दिन करना चाहिए।

यह संस्कार वर्णो के अनुसार जिस–जिस वर्ण का जो गुण धर्म है तदनुसार किया जाता है।

ऋगवेद के सूत्रों द्वारा कहा गया हैं कि बच्चा नाम के अनुरुप अपने व्यक्तित्व का निर्माण करे ऐसी आशा और प्रार्थना की गई है।

निष्क्रमण संस्कार– प्रथम बार बालक को घर से बाहर निकालने का संस्कार है जो चौथे माह में सम्पादित होता है। बालक को पिता द्वारा बाहर ले जाकर सूर्य दर्शन कराया जाता है। वस्तुतः यह संस्कार बालक को चलना सीखाने का माना जाता है। मन्त्रों द्वारा पृथ्वी से प्रार्थना की जाती है कि अब बालक को तुम्हे ही संभालना है और आजीवन रक्षा करनी है। बालक को इससे यह प्रेरणा दी जाती है। कि वह संकीर्णता से विशालता की ओर अग्रसर हो। इस संस्कार द्वारा बालक में सामाजिकता का प्रवेश होता है। ग्रहसूत्र के अनुसार यह बालक के जन्म के छटे माह में किया जाता है।

अन्नप्राशन संस्कार – बालक जब छः माह का हो जाता है तो उसके शारीरिक विकास के लिए ऊपरी भोजन की भी आवश्यकता होती है। पहली बार इसी उद्देश्य से अन्न दिया जाता है। धार्मिक कृत्य दान पुण्य किए जाते हैं इस संस्कार का प्रारम्भ वैदिक युग से ही माना जाता है।

चूड़ाकर्म संस्कार– इस संस्कार द्वारा बालक के दीर्घायु व स्वस्थ होने की कामना की गई है। यह कार्य ग्रहसूत्र के अनुसार जन्म के प्रथम वर्ष के अंत में अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति पर आयोज्य है। सिर के कोमलतम और महत्वपूर्ण भाग पर शिखा रखी जाती है। मान्यता हैं कि मृत्यु के उपरान्त यही से आत्मा का निकास होता है अतः यह महत्वपूर्ण तथ्य है।

कर्णभेद संस्कार– बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार जन्म के 10वें 12वे या 16वें दिन किया जाता है। कात्यायन तो तीसरे व पाँचवे वर्ष के लिए भी निर्देशित करते है। आयुर्वेदानुसार इसका वैज्ञानिक महत्व है। इस संस्कार द्वारा अण्डकोष एवं आन्त्रवृद्धि (हर्निया) आदि से बचाव होता है।

विद्यारम्भ संस्कार– इस संस्कार को अक्षराम्भ संस्कार भी कहते हैं इसका शुभारम्भ चोल और मुण्ड संस्कार के साथ ही किया जाता है। विधि मन्त्रों से कर्ण भेद के साथ ही अक्षर प्रारम्भ करने की प्रक्रिया क्रियान्वित की जाती है। इस संस्कार द्वारा बालक ज्ञान का वह कौशल प्राप्त करता हैं जिसके द्वारा ज्ञान को लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखा जाता है। यह संस्कार आयु के सातवें वर्ष में होता हैं। कई आचार्य मानते हैं कि यज्ञोपवीत संस्कार से पूर्व यह संस्कार सम्पन्न किया जाए। वेद का पठन उपनयन संस्कार के पश्चात प्रारम्भ किया जाता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी इसका उल्लेख है। भारतीय संस्कृति में विद्यारम्भ का प्रारम्भ बंसत पंचमी पर्व से शुभ माना गया है।

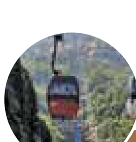
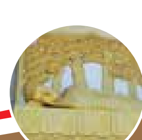

संस्कार द्वारा बालक को विभिन्न वर्ण करने के बाद वर्णानुसार ही दीक्षित किया जाता है।

उपनयन संस्कार– उपनयन दो शब्दो के योग से बना है। उप का अर्थ समीप तथा नयन शब्द का अभिप्राय ले जाना हैं अतः बालक को गुरु के पास ले जाने से उपनयन शब्द स्पष्ट होता है। अथर्ववेद में उपनयन का अर्थ किया गया हैं कि आचार्य के द्वारा ग्रहण किया जाना। यजुर्वेद के अनुसार उपनयन शब्द से छात्र एवं गायत्री के मध्य का सम्पर्क बनाया गया है। मनु के अनुसार दूसरे जन्म में जिसका प्रतीक मूंझ की मेखला धारण करना है इस संस्कार के बाद बालक का ब्रह्मचर्य आश्रम का शुभारम्भ होता है।

यज्ञोपवीत संस्कार– जब ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत पहनाया जाता है। आचार्य यज्ञोपवीत को हाथ में लेकर ब्रह्मचारी के बांये कंधे के ऊपरी भाग से कंठ के पास से सिर के बीच में निकालकर दाहिने हाथ के नीचे से बगल में निकालकर कमर तक पहनता है। आचार्य यज्ञोपवीत को हाथ में लेकर मंत्र पढ़ते समय यज्ञ वेदी के पश्चिम भाग में सुन्दर आसन पर पूर्वाभिमुख बैठता है। यह संस्कार आयुष्य प्रदायक और सफलता की ओर बढ़ाने वाला है। बालक को अध्ययन का अधिकार मिल जाता है। शिक्षा देने वाला आचार्य आध्यात्मिक पिता कहलाता है।

वेदारम्भ संस्कार– उपनयन संस्कार द्वारा छात्र गुरु के निकट आता तथा वेदों के अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न की जाती थी। वेद धर्म का मूल माना गया है। ज्ञान कर्म और भक्ति के मार्ग को दिखाने वाला वेद ही है। जिसका आशय है ज्ञान। मनु के अनुसार वेद पितृ, देव, मनुष्य सनातन चक्षु है। द्विज वही व्यक्ति कहलाता है जो वेद को छोड़कर अन्यत्र श्रम नहीं करें। वेद का शुभारम्भ गायत्री मंत्र से होता है। भारतीय संस्कृति में गायत्री को माँ कहा गया है। गायत्री मंत्र वेदत्रयी का सार स्वरुप है। ऋगवेद, यर्जुवेद, सामवेद तीनों वेद समाविष्ट है। ये तीनों वेद ज्ञान कर्म और उपासना के वेद हैं। अथर्व वेद को विज्ञान का क्षेत्र माना गया है। गायत्री मंत्र द्वारा ही समझा जाता हैं कि जीवन में उस पर ब्रह्म का क्या संबंध है। यही संस्कार वैदिक संस्कृति को अपनाने के लिए सहायक है।

समावर्तन संस्कार– इसे दीक्षान्त संस्कार के नाम से भी जाना जाता है। जो ब्रह्मचारी तपस्चर्या का जीवन जीया हो वह समुद्र के समान गंभीर तथा श्रेष्ठ ब्रह्मचारी के रुप में प्रतिष्ठित हो, ज्ञान के स्वाध्याय तथा आचार्य के प्रति निष्ठावान हो, अपने गुण धर्म तथा स्वभाव में उत्तमता से समाज के लिए कल्याणकारी कर्तव्यों का पालन करता है। आस्वालन में उल्लेख हैं कि स्नातक समाज में सर्वाधिक आदरणीय होता हैं तभी समाज के लोग स्नातक का आदर करते हैं। समावर्तन संस्कार से अभिप्राय है 'कुशल या दक्ष'। इसीलिए स्नातक को निष्णात कहा जाता है। विद्याध्ययन के समापन पर आचार्य दीक्षित करता है। वह उपदेशित करता हैं कि "तुम सत्य बोलना, धर्माचरण करना, स्वाध्याय से प्रमाद न करना, आचार्य को अनुकूल दक्षिणा देना, तब ही गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना। स्वाध्याय तथा प्रवचन द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाना, माता पिता,

विद्वजन के प्रवचन सुनना, दूसरों की श्रृद्वा पूर्वक सहायता करना, यदि कर्तव्य बोध में संशय उत्पन्न हो जाए तो तपस्वी, संत स्वभाव वाले और शीर्ष विद्वानों से शंका का समाधान करना चाहिए। वेद और उपनिषदों के अनुसार, समावर्तन संस्कार उन्ही ब्रह्मचारियों को दिया जाता था जो गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के योग्य होते थे। अन्यथा वे आचार्य कुल में रहते हुए अध्ययनरत रहते थे।

विवाह संस्कार– भारतीय संस्कृति में विवाह दो विषम लिगिंयों के संबंधो की व्यवस्था एवं नियमों की संस्था है। विवाह एक धार्मिक संस्कार हैं जिसमें धर्म प्रजोपति आदि के भौतिक सामाजिक व आध्यात्मिक उद्देश्यों से स्त्री पुरुष परस्पर स्थायी संबंधों में बंधते है। यह समझौता न होकर संस्कार ही है। ब्रह्मचारी आचार्य कुल लौटने के बाद गृहस्थ जीवन में प्रवेश का अधिकारी होता है। मनु स्मृति में कहा गया हैं "गुरु की मान्यता पाकर और विधि पूर्वक समावर्तन संस्कार करके स्नातक द्विज शुभ लक्षणों से युक्त अपने वर्ण की भार्या के साथ विवाह करे। विवाह संस्कार को गृहस्थ संस्कार के नाम से भी वर्णित किया गया है। समस्त धर्म ग्रंथों मे दैहिक और पारलौकिक सुखों की प्राप्ति के लिए विवाह संस्कार को अनिवार्य माना गया है। यह धार्मिक और मोक्ष प्राप्ति का संस्कार है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति इसी संस्कार के द्वारा होती है। वस्तुतः विवाह तीन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आवश्यक है। 1. धर्म का निर्वाह, 2. संतान/पुत्र प्राप्ति और 3. रति धर्म ही भारतीय संस्कृति का आधार है। इसी से धार्मिक जीवनशैली संतति में समाहित होती है।

वानप्रस्थ संस्कार– भारतीय संस्कृति में गृहस्थाश्रम के बाद वानप्रस्थ आश्रम का विधान है। उपनयन और विवाह संस्कारों के अन्त में दर्शन के पश्चात वानप्रस्थ आश्रम साधनापरक है। इस आश्रम ही में वेद में उल्लिखित व्रत, दीक्षा, श्रद्वा और तप तथा ब्रह्मचर्य एवं सत्य अर्थात सभी साधनाओं का परिपक्व स्वरुप देखने को मिलता है। श्री अरविन्द के अनुसार अपने जीवन की तीसरी अवस्था में वह वन में जाकर एकान्तवास करता है। सत्य को जीवन में उतारने का यह आश्रम है। सामाजिक दायित्वों के साथ अध्यात्म की दिशा में प्रवृत्त होता है। वानप्रस्थी की आयु, प्राण, अपान, समान, चक्षु, श्रोत, वाणी, मन , आत्मा, ज्ञान, ज्योति स्वर्ग सभी त्यागमय हो। वानप्रस्थी कठोरतम सामाजिक बंधनों से मुक्त रहकर जीवन यापन करता है। वह इस अवस्था में अपनी परिपक्वावस्था के साथ एक शिक्षक अथवा अध्यात्म गुरु के रुप में प्रस्तुत करते हुए समाज को दिशा बोध प्रदान कर सकता है।

अन्त्येष्टि संस्कार– इस संस्कार को अग्नियाधान भी कहते है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में जीवन को यज्ञ रुप माना गया है और मूल मध्य तथा अन्त में भी यज्ञ है। यह शास्वत नियम हैं कि जिसका जन्म हुआ है उसका अन्त भी आवश्यक है। यह संस्कार अंतिम संस्कार के रुप में माना गया है। बोधायन पितृमेध सूत्र में कहा गया है कि जन्मान्तर संस्कारों द्वारा व्यक्ति इस लोक को जीतता है।

हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में यज्ञ को अनवरत चलने वाली क्रिया कहा गया है और

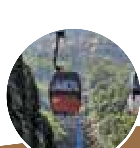

समाज में अग्नि सर्वदा जलती रहती थी। परिजन की मृत्यु पर उसके दाह संस्कार के लिए उसी घर से अग्नि ले जायी जाती थी। इसीलिए प्रतीक स्वरुप आज भी शवयात्रा के साथ घर से अग्नि पात्र में अग्नि ले जायी जाती है। वैज्ञानिकता की दृष्टि से शरीर के अंत होने पर वह दुर्गंध से भर जाता है। इसीलिए अग्नि के द्वारा वायुमण्डल को शुद्ध किया जाता है। शवदाह के बाद घर को मार्जित, लेपन, प्रक्षालन आदि से शुद्ध किया जाता है। दान दक्षिणा का विधान है तथा दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना, भजन, पाठ आदि आयोजित होते है।

इस प्रकार यह संस्कार पूरे मानव समाज की आधार शिला हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की सम्पूर्ति के साथ ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए भी श्रेयस्कर है।

****

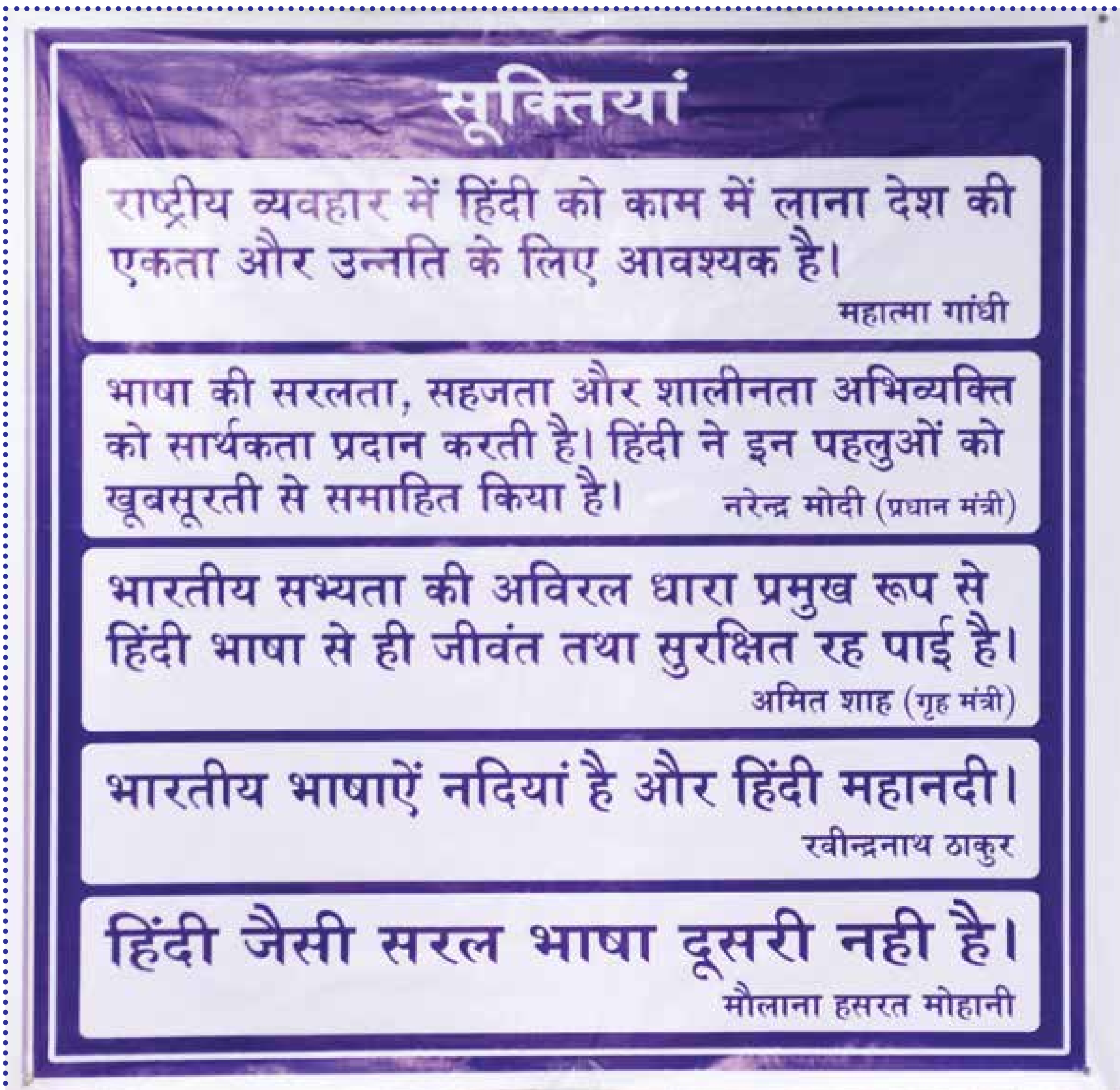

पर्यटन मंत्रालय
की
सचित्र गतिविधियां
एवं
समाचार

बौद्ध स्थलों की तीर्थ यात्राएं ''क्रॉस बॉर्डर टूरिज्म'' पर वेबिनार

17 जुलाई, 2020: पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने भारत को भगवान बुद्ध की भूमि बताते हुए कहा है कि पर्यटन मंत्रालय ने देश में बौद्ध स्थलों के विकास तथा सवंर्धन हेतु अनेक पहलें की हैं। श्री पटेल "एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट टूअर ऑपरेटर्स" द्वारा 15 जुलाई 2020 को ''क्रॉस बॉर्डर टूरिज्म'' पर आयोजित वेबिनार के उद्‌घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

माननीय मंत्री जी ने इस अवसर पर भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण स्थलों का उल्लेख करते हुए कहा कि दुनिया भर में बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक है। भारत तो भगवान बुद्ध की भूमि के रूप में जाना जाता है और बौद्ध विरासतों के मामले में भी देश काफी संपन्न है। इसके बावजूद यहां विदेशों से आने वाले बौद्ध तीर्थयात्रियों का प्रतिशत कम है। ऐसे में इसके कारणों को समझना होगा और तदनुसार सुधारात्मक उपाय करने होंगे।

उन्होंने आगे कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत देश में बौद्ध स्थलों के विकास के लिए कई पहलें करते हुए देश के महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों पर चीनी भाषा के साथ ही कई अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में साइन बोर्ड लगाए जा रहे हैं। इस तरह के साइन बोर्ड उत्तर प्रदेश के सारनाथ, कुशीनगर और श्रावस्ती सहित पांच बौद्ध स्थलों/स्मारकों में लगाए गए हैं। इसी तरह, श्रीलंका से बड़ी संख्या में बौद्ध यात्रियों/पर्यटकों के आगमन वाले स्थल मध्यप्रदेश के सांची में सिंहली भाषा में साइन बोर्ड लगाए गए हैं।

मंत्री जी ने भारत सरकार के उत्तर प्रदेश के कुशीनगर हवाई अड्डे को अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित करने के फैसले पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे पर्यटकों को यहां आने–जाने के लिए बेहतर संपर्क सेवाएं मिल सकेंगी जिसके परिणामस्वरूप घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के साथ ही इस क्षेत्र के आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

"एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट टूअर ऑपरेटर्स" ऐसे टूअर ऑपरेटरों का संगठन है जो भारत में मौजूद बौद्ध तीर्थो पर्यटक स्थलों के लिए देश में यात्राएं आयोजित करते हैं। इस संगठन के देश–विदेश में 1500 से ज्यादा सदस्य हैं।

वेबिनार में अन्य लोगों के अलावा संयुक्त राष्ट्र शांति सेना परिषद, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, कंबोडिया, इंडोनेशिया, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम के यात्रा और आतिथ्य सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया।

****

मिजोरम में विश्व स्तरीय "थेनजोल गोल्फ रिसोर्ट" परियोजना का उद्घाटन

4 अगस्त, 2020: पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने आज नयी दिल्ली में मिजोरम के पर्यटन मंत्री श्री रॉबर्ट रोमाविया रॉयते की उपस्थिति में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत कार्यान्वित ''थेनजोल गोल्फ रिसोर्ट'' का वर्चुअल रूप से उद्घाटन किया। इस अवसर पर मिजोरम सरकार के पर्यटन विभाग के आयुक्त और सचिव भी उपस्थित थे।

भारत में गोल्फ पर्यटन की काफी संभावनाएं हैं क्योंकि अधिकांश देशों की तुलना में यहां जलवायु की स्थिति अधिक अनुकूल है। देश के सुरम्य परिदृश्य और असाधारण आतिथ्य सेवाएं भी भारत में गोल्फ पर्यटन का अच्छा अनुभव कराती हैं। आज भारत में 230 से अधिक गोल्फ कोर्स हैं। पर्यटन मंत्रालय देश में गोल्फ कोर्स पर्यटन के विकास और उसे बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है। भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर

स्वदेश दर्शन के तहत इस परियोजना को पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए "न्यू इको टूरिज्म इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट" के तहत 92.25 करोड़ रुपये की राशि की स्वीकृति प्रदान की है। इसमें से 64.48 करोड़ रुपये की राशि थेनजोल और गोल्फ कोर्स के विभिन्न घटकों के लिए आवंटित की गई है।

के कई गोल्फ कोर्स हैं। भारत में आयोजित होने वाली गोल्फ प्रतियोगिताएं घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। गोल्फ पर्यटन में बढ़ती रुचि का दोहन करने के लिए, पर्यटन मंत्रालय भारत में गोल्फ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक और समन्वित रूपरेखा तैयार

कर रहा है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू दोनों ही पर्यटक आकर्षित होंगे।

कुल 105 एकड़ क्षेत्र में फैले हुए थेनजोल गोल्फ कोर्स को कनाडा की सबसे बड़ी गोल्फ कोर्स आर्किटेक्चर कंपनी ग्राहम कुक एंड एसोसिएट्स ने डिजाइन किया है। जिसमें 75 एकड़ खेल क्षेत्र है। इसमें – 18 होल गोल्फ कोर्स और अमेरिकी कंपनी रेन बर्ड द्वारा लगाई गई स्वचालित स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली भी है। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं से लैस है। 30 इको–लॉग हट्स, कैफेटेरिया, ओपन एयर फूड कोर्ट, स्वागती कक्ष और प्रतिक्षालय भी है। इन्हें साइबेरियाई पाइनवुड से बनाया गया है। इनके अंदर विश्व स्तर के फर्नीचर रखे गए हैं।

थेनजोल गोल्फ कोर्स अन्य गोल्फ कोर्स की तुलना में इस लिए बेहतर है कि यहां गोल्फ खेल का आनंद उठाने के लिए गुणवत्तायुक्त विश्वस्तर की सुविधाएं उचित कीमतों पर उपलब्ध कराई गई हैं।

****

जब तक दवाई नहीं !

तब तक ढिलाई नहीं !!

भगवान राम के मंदिर से बढ़ेगा आध्यात्मिक पर्यटन

5 अगस्त, 2020: भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आज अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि के भूमि पूजन समारोह में शामिल हुए। पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री जी ने अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि के भूमि पूजन के लिए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि यह विश्वास और आध्यात्मिकता का एक महान क्षण है। उन्होंने कहा कि भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या आध्यात्मिकता के कुंड में डुबकी लगाने के लिए एक पवित्र स्थल है। अनेकों मंदिरों वाला यह शहर प्राचीन भारत के सबसे पवित्र शहरों में से एक है और प्राचीन मान्यता है कि देवताओं ने खुद इस शहर का निर्माण किया था।

उन्होंने आगे कहा कि पुरातन काल से तीर्थ यात्राएं यात्रा के लिए सबसे प्रभावशाली प्रेरकों में से एक रही हैं। भगवान राम का मंदिर बनने से आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। धार्मिक/आध्यात्मिक पर्यटन ने वैश्विक मंदी के दबाव में भी खुद को सशक्त साबित किया है क्योंकि इसे लग्जरी के रूप में नहीं देखा जाता है। एक उद्देश्य के साथ यात्रा होती है और इसकी प्रकृति के कारण तीर्थयात्रा किसी भी आर्थिक परिदृश्य में प्रफुल्लित और मजबूत रहती है। ऐसे में पर्यटन मंत्रालय भारत में गहराई से निहित विश्व के सभी धर्मों के अनुयायियों को सहयोग देने का आश्वासन देता है।

पर्यटन मंत्रालय अपनी स्वदेश दर्शन योजना– विषय आधारित पर्यटक परिपथों के समेकित विकास के तहत देशभर की परिपथों में पर्यटन अवसंरचना का विकास कर रहा है, जिनमें योजनाबद्ध और प्राथमिकता के साथ पर्यटन की संभावनाएं हैं। इस योजना के तहत पर्यटन मंत्रालय ने रामायण परिपथ के तहत 'अयोध्या का विकास' परियोजना के लिए साल 2017–18 में 127.20 करोड़ रुपए की धनराशि आवंटित की है। इस परियोजना के तहत मंजूर किए गए कार्यों में राम कथा गैलरी और पार्क का विकास, राम की पैड़ी, गुप्तारघाट और लक्ष्मण किला घाट, अयोध्या गली का कायाकल्प, दिगंबर अखाड़ा में बहुउद्देशीय हॉल आदि शामिल हैं। इस परियोजना में शामिल अन्य घटकों में सोलर लाइटिंग, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, ड्रेनेज की व्यवस्था, पुलिस बूथ, विभिन्न स्थानों पर संकेतक, पत्थर की बेंच, गुमरिया (गजेबो), पीने के पानी के कियोस्क, सीसीटीवी, बस डिपो और पार्किंग, टूरिस्ट शेड, सार्वजनिक स्थानों की लैंडस्केपिंग और तुलसीदास के बगीचे का सौदर्यीकरण आदि शामिल है। अब तक परियोजना का लगभग 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

****

'एक भारत श्रेष्ठ भारत'

'तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के आकर्षक लोक नृत्यों' का आयोजन होटल प्रबंध संस्थान, चेन्नई और श्रीनगर

26 अगस्त, 2020 : पर्यटन मंत्रालय ने एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को बढ़ावा देने के लिए इस सप्ताह होटल प्रबंध संस्थान, श्रीनगर और होटल प्रबंध संस्थान, चेन्नई द्वारा तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के आकर्षक लोक नृत्यों पर आधारित एक ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। होटल प्रबंध संस्थान, चेन्नई के छात्रों और आईएचएम श्रीनगर के तीन छात्रों ने एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत दोनों राज्यों के लोक नृत्य प्रस्तुत किए।

छात्रों ने अपने प्रदर्शन एकांत में रिकॉर्ड किए थे तथा वीडियो को ऑनलाइन साझा करते हुए उनके प्रदर्शनों को ऑनलाइन मंच के माध्यम से प्रसारित किया गया। नोडल अधिकारी ने अपने अभिभाषण में दोनों राज्यों के लोक नृत्यों के महत्व की सराहना की। इस आयोजन को सभी छात्रों और दोनों संस्थानों के कर्मचारियों द्वारा देखा गया और सराहा गया।

इन स्थानों के प्रसिद्ध लोक नृत्यों के बारे में एक परिचय दिया गया, उदाहरण के लिए कश्मीर की शादियों और मुख्य कार्यक्रमों में कुड, धुमल, रौफ, हफीजा, भांड जैसे नृत्य किए जाते हैं। इसी प्रकार, तमिलनाडु के आदिवासी नृत्यों में कठपुतली नाच के सबसे सरल रूप से लेकर इक्कलकुटिराईअट्टम और मयिलअट्टम के नृत्य शामिल हैं।

इक्कलकुटिराई में घोड़े जैसी और मयिलअट्टम में मोर जैसी पोशाक पहनते हैं, कालईआट्टम में एक बैल जैसी, पोम्पल में सांप जैसी और कराडीअट्टम में एक भालू जैसी पोशाक पहनते हैं।

यह आयोजन प्रतिभागियों द्वारा सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि की सराहना करते हुए एक चर्चा के साथ समाप्त हुआ। सभी कलाकारों और प्रतिभागियों को ई–सर्टिफिकेट प्रदान किए गए। इस प्रतियोगिता में कुल 192 छात्रों ने हिस्सा लिया।

यह सत्र अब यूट्यूब लिंक पर https://youtu.be/_nmxgeju68Ealso और भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के सभी सोशल मीडिया हैंडल पर भी उपलब्ध हैं।

तमिलनाडु, जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के आकर्षक लोक नृत्य 21 अगस्त, 2020

तमिलनाडु, जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के आकर्षक लोक नृत्य 21 अगस्त, 2020

तमिलनाडु, जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के आकर्षक लोक नृत्य 21 अगस्त, 2020

”अतुल्य भारत का प्रचार– कोविड–19 के पश्चात“ विषय पर परिचर्चा

08 सितम्बर, 2020 : पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने नई दिल्ली में प्रभावकारी व्यक्तियों और पर्यटन मीडिया से जुड़े लोगों के साथ ”अतुल्य भारत का प्रचार– कोविड–19 के बाद“ विषय पर परिचर्चा सत्र आयोजित किया। लगभग 30 प्रतिनिधियों ने इस सत्र में भाग लिया। इस सत्र के दौरान सुश्री मीनाक्षी शर्मा, महानिदेशक, श्री राकेश कुमार वर्मा, संयुक्त सचिव (पर्यटन पर्यटन), सुश्री रूपिंदर बरार, अपर महानिदेशक, श्री जी कमला वर्धन राव, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारत पर्यटन विकास निगम तथा पर्यटन मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। यह कोविड–19 महामारी के दौरान सभी हितधारकों के साथ पहली ऐसी बैठक थी जिसमें सरकार के SoP के सभी दिशानिर्देशों और मानदंडों का पालन किया गया।

माननीय मंत्रीजी ने सत्र को प्रारंभ करते हुए सभी से देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव देने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि हम सभी भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश में कोविड–19 के बाद पर्यटन अवसरों के बारे में सोचना भी हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह वह मंच है जहां हम इस समस्या के बारे में बात कर सकते हैं और साथ ही पर्यटन संबंधी गतिविधियों के संदर्भ में समाधान भी दे सकते हैं। स्थितियां सामान्य होते ही भारत में फिर से पर्यटन क्षेत्र में तेजी आएगी। हम सभी को कोविड–19 के बाद के लिए तैयार रहना चाहिए ताकि हम अपने यात्रा अनुभवों से पर्यटकों को बेहतर और सुरक्षित वातावरण प्रदान कर सकें। उन्होंने कहा कि लोग बहुत ही सकारात्मक हैं और सभी सावधानियों के साथ भारत की सुंदरता को देखने के लिए तैयार हैं। हमें ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहां पर्यटक इस महामारी के दौरान भी हम पर भरोसा कर सकें।

सत्र के दौरान विभिन्न प्रभावकारी व्यक्तियों और पर्यटन मीडिया से जुड़े प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव साझा किए और सभी ने खासकर महिलाओं के लिए पर्यटन को सुरक्षित, अनुकूल, सुलभ, एवं जिम्मेदार बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। कुछ प्रतिभागियों ने घरेलू पर्यटन और भारत के कम लोकप्रिय स्थलों पर ध्यान देने का भी सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि भारत छुपे हुए रत्नों का घर है और हमें बहुत से कम प्रसिद्ध पर महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी और सुविधाएं प्रदान करके इन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए। एक प्रतिभागी ने सुरक्षा उपायों की जानकारी देने के लिए शिविर लगाने एवं वेबसाइट खोलने का भी सुझाव दिया। एक

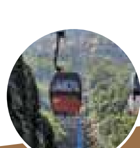
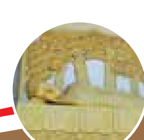

प्रतिभागी ने अनुभवात्मक पर्यटन को बढ़ावा देने के बारे में भी सुझाव दिया, उन्होंने कहा कि यह अन्य पर्यटकों को भी विभिन्न स्थलों पर जाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। चर्चा के दौरान यह प्रश्न भी आया कि जनता के बीच पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सूचना साझाकरण करने हेतु तंत्र मजबूत होना चाहिए।

सत्र के अंत में, मंत्री जी ने सभी प्रतिभागियों को इसमें उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि हम अपनी नीति बनाने में सभी हितधारकों की भागीदारी चाहते हैं इसलिए हमने आप सभी को अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए यहां आमंत्रित किया है। उन्होंने कहा कि हमने आपके सुझावों को नोट कर लिया है और इन्हें भविष्य के नीति बनाने में शामिल किया जाएगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भारत कोविड–19 के बाद फिर से एक पसंदीदा पर्यटक स्थल के रूप में उभरेगा, तब तक हमें अपने घरेलू पर्यटन पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि अब वह भारतीय जो विदेशी स्थलों की यात्रा करना चाहते थे, अभी सिर्फ घरेलू पर्यटक स्थलों की ही यात्रा कर पाएंगे, इससे हमारे पर्यटन उद्योग को और बल मिलेगा।

****

"भारत में जीवन तब भी था जब ग्रीस अस्तित्व में नहीं आया था... इससे भी पहले जब इतिहास का कोई अभिलेख नहीं मिलता और परम्पराओं ने उस अंधियारे भूतकाल में जाने की हिम्मत नहीं की।"

–स्वामी विवेकानंद

पर्वतारोहण और साहसिक पर्यटन के केन्द्रीय संस्थानों के साथ समीक्षा बैठक

02 सितम्बर, 2020 : पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री जी ने पर्वतारोहण और साहसिक पर्यटन के केन्द्रीय संस्थानों के साथ नई दिल्ली में एक समीक्षा बैठक की। बैठक में भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान, राष्ट्रीय जलक्रीड़ा संस्थान, भारतीय स्कीइंग और पर्वतारोहण संस्थान (IISM), इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन और एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन (ATOI) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सभी प्रतिभागी संस्थानों ने भविष्योन्मुखी गतिविधियों के साथ साहसिक पर्यटन पर चल रहे अपने पाठ्यक्रमों और गतिविधियों के बारे में पर प्रस्तुतियां दी। राष्ट्रीय जलक्रीड़ा संस्थान सूचित किया कि 2019–20 के दौरान संस्थान ने 3972 प्रशिक्षुओं के लिए 192 जलक्रीड़ा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए। श्री पटेल ने कहा कि अभी तक जलक्रीड़ा संस्थान की गतिविधियां मुख्य रूप से तटीय क्षेत्रों पर केन्द्रित हैं, जिन्हें नदियों और पहाड़ों के आसपास के क्षेत्रों में भी बढ़ाया जाना चाहिए ताकि अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके और देश भर में जलक्रीड़ा पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने उन्हें जलक्रीड़ा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए विभिन्न राज्य सरकारों के संपर्क में रहने का भी निर्देश दिया।

माननीय मंत्री जी ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कीइंग और माउंटेनियरिंग की विभिन्न गतिविधियों की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि हमारे पास पर्वतारोहण में बहुत संभावनाएं हैं और हमें अपने देश में पर्वतारोहण को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने आईआईएसएम को निर्देश दिया कि पर्वतारोहण प्रशिक्षण में नई तकनीकों को अपनाया जाए ताकि साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए और अधिक कुशल गाइड तैयार किए जा सकें।

बैठक के दौरान पर्यटन मंत्रीजी ने भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन के कार्यों की भी समीक्षा की। फाउंडेशन ने पर्वतारोहण संबंधी गतिविधियों के बारे में अपनी वर्तमान गतिविधियों की जानकारी दी। फाउंडेशन ने बताया कि हाल ही में सरकार ने पर्वतारोहण के लिए लगभग 137 नई चोटियों को खोला है जो एक स्वागत योग्य कदम है, अब हमने हिमालयी क्षेत्र में 405 नई चोटियों को खोलने का प्रस्ताव भेजा है ताकि पर्वतारोहण को पूरी तरह से बढ़ावा दिया जा सके। एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों के बारे में भी एक प्रस्तुति दी।

प्रतिभागी संस्थानों के सभी कार्यों की समीक्षा करने के बाद माननीय मंत्री जी ने कौशल और प्रौद्योगिकी को उन्नत करने के लिए पर्यटन मंत्रालय से पूर्ण सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। उन्होंने साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सभी संगठनों के प्रयासों की भी सराहना की और उम्मीद जताई कि हमारे आपसी प्रयासों से भारत निकट भविष्य में पर्वतारोहण और अन्य साहसिक गतिविधियों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य होगा।

स्कीइंग में प्रशिक्षण

विश्व पर्यटन दिवस – 2020

पर्यटन मंत्रालय ने आज वर्चुअल मंच के माध्यम से विश्व पर्यटन दिवस मनाया। केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस और इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रह्लाद सिंह पटेल भी मौजूद थे। सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री मीनाक्षी शर्मा, संयुक्त सचिव (पर्यटन) श्री राकेश कुमार वर्मा, आर्थिक सलाहकार श्री ज्ञान भूषण और अपर महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री रुपिंदर कौर बराड़ तथा मंत्रालय के अन्य अधिकारी भी इस आभासी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

इस साल संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) ने वर्ष 2021 को पर्यटन और ग्रामीण विकास वर्ष के रूप में नामित किया है। यह वर्ष रोजगार और अवसर पैदा करने के लिए पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ावा देने का एक अवसर है। यह समावेशन को भी बढ़ावा दे सकता है और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के साथ ही शहर की ओर पलायन को रोकने में पर्यटन की ओर से निभाई जा सकने वाली अद्वितीय भूमिका को भी उजागर करेगा।

इस कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि श्री धर्मेंद्र प्रधान ने 'साथी' (SAATHI) एप्लीकेशन को लॉन्च

किया। 'साथी' भारतीय गुणवत्ता परिषद के साथ पर्यटन मंत्रालय की एक पहल है, जो आतिथ्य उद्योग को सुरक्षित रूप से संचालित करने के लिए और होटल/यूनिट की सुरक्षा के बारे में कर्मचारियों और मेहमानों के बीच विश्वास पैदा करने में आतिथ्य उद्योग की सहायता करने के लिए है। श्री प्रधान ने एक फिल्म 'पथिक' को भी लॉन्च किया जो अतुल्य भारत पर्यटक सुविधा प्रदाता प्रमाणन कार्यक्रम (IIFTC) और ICBP 'माइस' प्रोमोशनल फिल्म पर एक पहल है।

> पर्यटकों और कार्यबल के लिए सुरक्षा और स्वच्छता सुनिश्चित करने में आतिथ्य उद्योग की सहायता के लिए भारतीय गुणवत्ता परिषद के साथ 'साथी' पहल शुरू की गई 'माइस' पर्यटन के शुभारम्भ के लिए प्रमोशनल फिल्म भी लॉन्च की गई।

'माइस' प्रोमोशनल फिल्म का उद्देश्य भारत में कार्यक्रम आयोजित करने हेतु स्वागत करने का एक सकारात्मक संदेश देना है जब प्रतिस्पर्धी देश पहले से ही सक्रिय रूप से अपने उत्पादों का विपणन कर रहे हैं। व्यवसाय में वापस आने के लिए खुशी और आत्मविश्वास के स्वर, उत्साहपूर्ण आतिथ्य, सुदृढ़ सुरक्षा प्रोटोकॉल और एक रमणीय अनुभव का आश्वासन फिल्म का मुख्य संदेश है।

श्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस अवसर पर बोलते हुए 'साथी' एप्लीकेशन और ऑनलाइन लर्निंग मॉड्यूल आईआईटीएफसी को लॉन्च करने में पर्यटन मंत्रालय के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने वेबिनार श्रृंखला 'देखो अपना देश' के माध्यम से हमारी संस्कृति, विरासत, कम ज्ञात स्थलों, व्यंजनों आदि को दिखाने के मंत्रालय के प्रयास की सराहना की। सतत पर्यावरण की बात करते हुए उन्होंने कहा कि खेलों में इस्तेमाल होने वाली पर्यटक नावों में पेट्रोल, डीजल, केरोसिन तेल (मिट्टी के तेल) आदि के स्थान पर सीएनजी/एलपीजी का इस्तेमाल किया जाना चाहिए जो प्रदूषण मुक्त हैं। उन्होंने पर्यटक स्थलों के अंदर और आसपास के बाहरी इलाकों में बैटरी चालित वाहनों का उपयोग करने पर भी जोर दिया।

श्री प्रधान ने अतुल्य भारत पर्यटक सुविधा प्रदाता (IIFTC) प्रमाणन कार्यक्रम चलाने के लिए पर्यटन मंत्रालय के प्रयासों की सराहना की।

इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री जी ने पर्यटन को बढ़ावा देने पर देश के प्रधानमंत्री के उस दृष्टिकोण को दोहराया जिसमें प्रत्येक नागरिक को घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2022 तक कम से कम 15 पर्यटन स्थलों पर घूमने जाने के लिए कहा गया है। उन्होंने बताया कि पर्यटन मंत्रालय ने देश की समृद्ध विरासत और संस्कृति के बारे में नागरिकों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने, नागरिकों को देश के भीतर व्यापक रूप से यात्रा करने और लोगों को पर्यटन पर जाने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जनवरी 2020 में 'देखो अपना देश' पहल शुरू की है ताकि स्थानीय स्तर पर स्थानीय अर्थव्यवस्था का विकास और रोजगार के अवसरों का सृजन हो सके। कोरोना महामारी

के दौरान, मंत्रालय 'देखो अपना देश' के समग्र विषय के तहत वेबिनार की एक श्रृंखला आयोजित करता रहा है, जिसमें देश की विविध संस्कृति, विरासत, स्थलों और पर्यटन उत्पादों को प्रदर्शित किया जाता है। उन्होंने बताया कि इस पहल के तहत विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को शामिल करते हुए अब तक 54 वेबिनार आयोजित किए गए हैं। मंत्रालय ने जन जागरूकता पैदा करने के लिए Mygov.in प्लेटफॉर्म पर एक ऑनलाइन प्रतिज्ञा और प्रश्नोत्तरी भी शुरू की है। इसमें भागीदारी के लिए ऑनलाइन प्रतिज्ञा और प्रश्नोत्तरी सभी के लिए खुले हैं।

श्री पटेल ने यह भी कहा कि कार्यक्रम से पर्यटकों के समग्र अनुभव को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जो स्थानीय पर्यटक सुविधा प्रदाताओं के ज्ञान से लाभान्वित होंगे और यह देश के दूर–दराज के इलाकों में भी रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करेगा।

इस सत्र की शुरुआत सचिव (पर्यटन) ने गर्मजोशी से स्वागत करते हुए की। उन्होंने इस महामारी के समय सभी हितधारकों द्वारा एक रणनीति बनाने और आवश्यक कार्रवाई करने के लिए उठाए गए जागरूकता और सक्रिय उपायों की सराहना की। संयुक्त सचिव (पर्यटन) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सत्र का समापन किया गया।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा वर्ष 2021 पर्यटन और ग्रामीण विकास वर्ष घोषित

08 जुलाई, 2020 को नई दिल्ली में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पर्यटन मंत्रालय की राष्ट्रीय संचालन समिति और स्वदेश दर्शन योजना की छठी बैठक की पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री मीनाक्षी शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री जी ने 22 जुलाई, 2020 को नई दिल्ली में चैम्पियन सेक्टर, गोल्फ कोर्स और प्रशाद योजना में प्रगति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 29 जुलाई, 2020 को नई दिल्ली में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पर्यटन ई–कॉन्क्लेव का उद्घाटन किया।

10 अगस्त, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एक बैठक की।

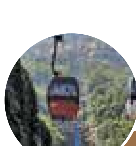

21 अगस्त, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन के संवर्धन के लिए पर्यटन मंत्रालय, ट्रैवल एजेंट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (TAAI) और फिक्की लेडीज ऑर्गेनाइजेशन (FLO) के बीच महिला आर्थिक सशक्तीकरण के लिए स्थायी आजीविका मॉडल के संवर्धन हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के समय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने आभासी बैठक को सम्बोधित किया। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

21 अगस्त, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने पर्यटन हितधारकों के साथ एक आभासी परामर्श किया।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल 24 अगस्त, 2020 को दिल्ली में होटल खोलने की अनुमति मिलने के बाद होटल की तैयारियों की समीक्षा करने हेतु होटल अशोक, नई दिल्ली का दौरा किया।

इस अवसर पर मंत्री जी कोरान से बचाव के लिए शीशे की दीवार लगे विशेष काउंटर का निरीक्षण करते हुए।

पर्यटन, कला और संस्कृति सलाहकार तथा DPDB के अध्यक्ष, नागालैंड के अध्यक्ष, श्री एच. खेहोवी येप्थोमी ने 02 सितंबर, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल से मुलाकात की।

02 सितंबर, 2020 को नई दिल्ली में संस्कृति और पर्यटन (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री, श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने पर्वतारोहण के नोडल संस्थानों के साथ एक आभासी बैठक की अध्यक्षता की।

02 सितंबर, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन और संस्कृति (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री, श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने पर्वतारोहण के नोडल संस्थानों के साथ एक आभासी बैठक की अध्यक्षता की।

माउंट एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने वाली दुनिया की पहली भारतीय महिला पद्मश्री सुश्री संतोष यादव ने 04 सितंबर, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल से मुलाकात की।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान 15 सितम्बर, 2020 को आयोजित एक बैठक में सचिव महोदय की अध्यक्षता की में सरकारी कार्य में हिन्दी के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई। इस अवसर पर मंपलय के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने 27 सितंबर, 2020 को नई दिल्ली में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विश्व पर्यटन दिवस –2020 समारोह के अवसर पर एक समारोह में सभा को संबोधित किया।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर, 2020 को पर्यटन मंत्रालय का राजभाषा संबंधित निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर समिति की ओर से उपस्थित सांसद सदस्यगण (दाएं)।

इस अवसर पर समिति के समक्ष उपस्थित मंत्रालय के सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन), श्री राकेश कुमार वर्मा, संयुक्त सचिव (पर्यटन), श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, महानिदेशक (पर्यटन), श्रीमती रूपिन्द्र बरार (अपर महानिदेशक) तथा पर्यटन) तथा श्रीमती संतोष सिल्पोकर (संयुक्त निदेशक (रा.भा.)।

'अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों अनुसंधानकर्ताओं, ब्लॉगर्स, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित

कृपया ध्यान दें

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर पर ऐसे पर्यटन गंतव्य, विशेषकर जिसके बारे में अधिक जानकारी नहीं हो, के लिए भेजे गए लेख में अधिकतम शब्दों का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- लेख सरल भाषा में लिखा हो
- ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख Open file में तथा फोटोग्राफ, यदि कोई हो .JPG अथवा .PNG में ही भेजें। अन्यथा सामग्री स्वीकार नहीं की जा सकेगी।
- कोई भी लेख/सामग्री PDF में भेजने का कष्ट नहीं करें।
- Whatsapp के द्वारा भेजी गई सामग्री स्वीकार **नहीं** की जाएगी।
- कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित/डाक से भेजे लेख भी स्वीकार्य है।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी दायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- **लेख सामग्री इस पते पर भेजें:**
  प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 7वां तल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली–110001,
  ई–मेल: editor.atulyabharat@gmail.com है।

खांसने और छींकने पर मुंह
और नाक को साफ कपड़े,
रुमाल या टिश्यू से ढकें।
आँख, नाक और मुँह को
गंदे हाथों से छूनेसे बचें।
कोविड -19 से बचने के लिए यह महत्वपूर्ण सावधानियाँ अपनाएं

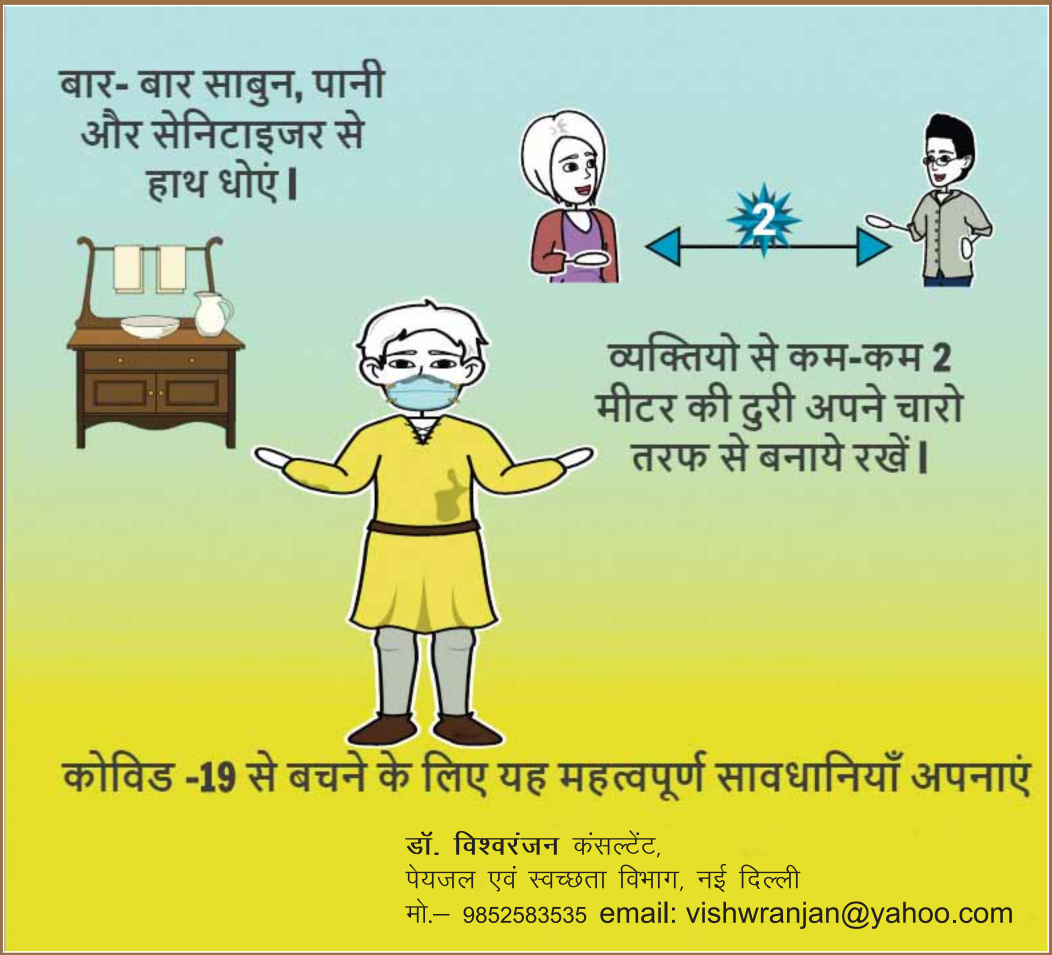
बार- बार साबुन, पानी
और सेनिटाइजर से
हाथ धोएं।
2
व्यक्तियो से कम-कम 2
मीटर की दुरी अपने चारो
तरफ से बनाये रखें।
कोविड -19 से बचने के लिए यह महत्वपूर्ण सावधानियाँ अपनाएं
डॉ. विश्वरंजन कंसल्टेंट,
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, नई दिल्ली
मो.– 9852583535 email: vishwranjan@yahoo.com

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली–110001
ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24x7